हिन्दी दैनिक

रोजनामा इन्डो गल्फ

www.Newsindogulf.com/Email:-Newsindogulf730@gmail.com

सच्चाई में है दम, सच लिखते हैं हम

पटना, शुक्रवार | 13 सितम्बर 2024 | वर्ष : 02 | अंक : 122 | पृष्ठ - 13 | PRGI NO - BIHHIN/2023/86924 | मूल्य - ₹ 3 | पटना संस्करण

ब्रीफ न्यूज

ग्रामीण सुरक्षा समितियों के सदस्यों को धर्म के आधार पर बांट रहे हैं अब्दुल्ला, बीजेपी बोली- वीडीजी की सेवाएं अमूल्यं

एजेंसी

नई दिल्ली: जम्मू। भारतीय जनता पार्टी के जम्मू-कश्मीर प्रवक्ता अभिजीत जसरोटिया ने कहा है कि नेशनल कॉन्फ्रेंस नेता और पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला द्वारा ग्रामीण सुरक्षा समूह (वीडीजी) के सदस्यों को भाजपा कार्यकर्ता कहने वाले बयान को अत्यधिक आपत्तिजनक और निंदनीय करार दिया। उन्होंने कहा कि उमर अब्दुल्ला गांव सुरक्षा समूह (वीडीजी) को धर्म के आधार पर विभाजित कर रहे हैं। जसरोटिया ने कहा कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में वीडीजी की सेवाएं और बलिदान अमूल्य हैं और इन युवाओं ने सुरक्षा बलों और पुलिस के साथ मिलकर जम्मू-कश्मीर में शांति की बहाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।भारतीय जनता पार्टी के चुनाव मीडिया सेंटर में प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए पार्टी प्रवक्ता अभिजीत जसरोटिया ने उमर अब्दुल्ला के भद्रवाह में वीडीजी को लेकर दिए गए बयान की निंदा की।

लोगों की खातिर इस्तीफा देने को तैयार, 2 घंटे तक खाली कुर्सियों के सामने किया इंतजार

बातचीत के लिए डॉक्टरों के नहीं आने पर क्या बोलीं ममता

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को दिल्ली से सटे ग्रेटर नोएडा में दिवसीय सेमीकॉन इंडिया–2024 का शुभारंभ किया. इस कार्यक्रम का आयोजन इंडिया एक्सपो सेंटर एवं मार्ट में किया जा रहा है. जो तीन दिनों तक चलेगा.

एजेंसी

पश्चिम बंगाल:पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बलात्कार और हत्या की पीड़िता के परिवार के लिए न्याय समेत कई मांगों को लेकर प्रदर्शन कर रहे डॉक्टरों के साथ गतिरोध के बीच एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की। ममता ने कहा कि हमने जूनियर डॉक्टरों के साथ बैठक के लिए दो घंटे तक इंतजार किया, लेकिन वे बैठक स्थल पर नहीं आए। आरजी कर मामला क्योंकि न्यायालय में विचाराधीन है, इसलिए जूनियर डॉक्टरों की मांग के अनुसार उनके साथ बैठक का सीधा प्रसारण नहीं किया जा सकता। ममता ने कहा कि हमारे पास जूनियर डॉक्टरों के साथ बैठक की वीडियो रिकॉर्डिंग की व्यवस्था थी, हम उच्चतम न्यायालय की अनुमति से इसे उनके साथ साझा कर सकते थे। बंगाल सीएम ने कहा कि आरजी कर मामले में गतिरोध को समाप्त करने के लिए मैंने जूनियर डॉक्टरों से बातचीत करने की तीन बार कोशिश की। जूनियर डॉक्टरों के ह्यकाम बंदह्न करने से 27 लोगों की

मौत हुई, सात लाख मरीज परेशान हैं। मैं आंदोलनकारी जूनियर डॉक्टरों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करूंगी, उन्हें माफ कर दूंगी क्योंकि हम बड़े हैं। इसके साथ ही ममता ने कहा कि मैं बंगाल के लोगों से माफी मांगती हूं, जिन्हें उम्मीद थी कि आज आरजी कर गतिरोध खत्म हो जाएगा। ममता ने कहा कि हमारे पास बैठक को रिकॉर्ड करने की पूरी व्यवस्था थी। प्रक्रिया की पारदर्शिता और सटीक दस्तावेजीकरण के लिए और हम सुप्रीम कोर्ट की अनुमति के साथ रिकॉर्डिंग साझा करने के लिए भी तैयार थे।गौरतलब है कि मुख्यमंत्री की प्रेस कॉन्फ्रेंस इन खबरों के बीच आई कि प्रदर्शनकारी डॉक्टर आरजी कर अस्पताल गतिरोध को हल करने के लिए सीएम की मौजूदगी में बातचीत करने पर सहमत हुए हैं। आंदोलनकारी जूनियर डॉक्टरों ने गुरुवार को शाम 5 बजे के निर्धारित समय के भीतर राज्य सचिवालय में प्रस्तावित बैठक में भाग लेने के अपने फैसले की घोषणा की। हालाँकि, चिकित्सकों ने घोषणा की कि वे राज्य सरकार द्वारा अनिवार्य 15 लोगों के बजाय 30 सदस्यों के साथ बैठक में भाग लेने की अपनी मूल मांग पर अड़े रहेंगे। प्रदर्शनकारियों ने यह भी कहा कि वे वार्ता की लाइव स्ट्रीम से कम किसी भी चीज पर सहमत नहीं होंगे, जिसे राज्य सरकार ने अस्वीकार कर दिया था।आरजी कर मामला क्योंकि न्यायालय में विचाराधीन है, इसलिए जूनियर डॉक्टरों की मांग के अनुसार उनके साथ बैठक का सीधा प्रसारण नहीं किया जा सकता। ममता ने कहा कि हमारे पास जूनियर डॉक्टरों के साथ बैठक की वीडियो रिकॉर्डिंग की व्यवस्था थी, हम उच्चतम न्यायालय की अनुमति से इसे उनके साथ साझा कर सकते थे।

सीपीआई(एम) महासचिव और पूर्व राज्यसभा सांसद सीताराम येचुरी का निधन

एजेंसी

नई दिल्ली: सीपीआई(एम) महासचिव और पूर्व राज्यसभा सांसद सीताराम येचुरी का गुरुवार को लंबी बीमारी के बाद निधन हो गया। वे 72 वर्ष के थे। उन्हें दिल्ली के एम्स की गहन चिकित्सा इकाई में भर्ती कराया गया था और उनका तीव्र श्वसन पथ संक्रमण का इलाज किया जा रहा था। पिछले कुछ दिनों से वे श्वसन सहायता पर थे और डॉक्टरों की एक बहु-विषयक टीम द्वारा उनका इलाज किया जा रहा था।येचुरी ने 2015 में सीपीएम के महासचिव के रूप में प्रकाश करात का स्थान लिया था। येचुरी ने दिवंगत पार्टी नेता हरकिशन सिंह सुरजीत के अधीन काम सीखा था, जिन्होंने पहले वी पी सिंह की राष्ट्रीय मोर्चा सरकार और 1996-97 की संयुक्त मोर्चा सरकार के दौरान गठबंधन युग के शासन में प्रमुख भूमिकाएँ निभाई थीं, दोनों ही सरकारों को सीपीआई(एम) ने बाहर से समर्थन दिया था।येचुरी ने अपने कौशल को तब और निखारा जब वामपंथी दलों ने पहली यूपीए सरकार का समर्थन किया और अक्सर नीति-निर्माण में कांग्रेस के नेतृत्व वाली सरकार पर दबाव डाला।उन्होंने भारत-अमेरिका परमाणु समझौते पर सरकार के साथ बातचीत में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, जिसके कारण करात के अड़ियल रुख के कारण वामपंथी दलों ने यूपीए-1 सरकार से समर्थन वापस ले लिया था।येचुरी, जो 1974 में स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एसएफआई) में शामिल हुए और अगले ही साल पार्टी के सदस्य बन गए, को आपातकाल के दौरान कुछ महीने बाद गिरफ्तार कर लिया गया था।सीपीआई(एम) महासचिव सीताराम येचुरी, जिन्हें एम्स दिल्ली में भर्ती कराया गया था, का गुरुवार को लंबी बीमारी के बाद निधन हो गया, समाचार एजेंसी पीटीआई ने पार्टी और अस्पताल के सूत्रों के हवाले से बताया।

'95 दिनों में ही सरकार डगमगा रही है', कांग्रेस अध्यक्ष खरगे का पीएम मोदी पर वार,

एजेंसी

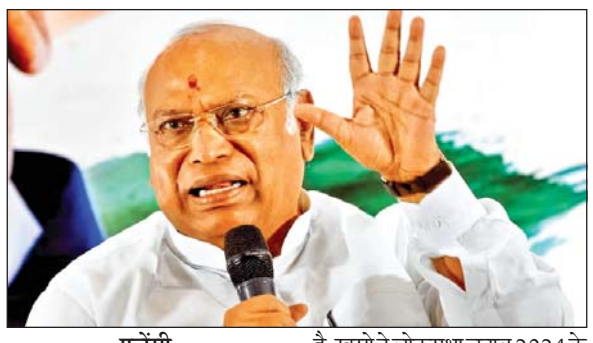

नई दिल्ली: कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर पोस्ट के जरिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधा है. खरगे ने लोकसभा चुनाव 2024 के बाद बनी गठबंधन सरकार पर को भी घेरा है. पोस्ट में खरगे ने बजट, जम्मू कश्मीर में आतंकी घटनाओं और नीट पेपर लीक के मुद्दों का भी जिक्र किया. खरगे ने पर लिखा, 'प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आपने चुनाव के पहले ही 100 दिनों के एजेंडा का ढिंढ़ोरा जोर-शोर से पीटा था. 95 दिन हो गए हैं, आपकी मिली-जुली सरकार डगमगा रही है.' कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने अपने पोस्ट में सात प्वाइंट लिखे और कई मुद्दों को केंद्र सरकार को याद दिलाया है. 1. गरीब व मध्यम वर्ग की कमरतोड़ ने के लिए आपकी सरकार जनविरोधी बजट लाई. 2. जम्मू और कश्मीर, खासकर जम्मू में आतंकवादी हमले हुए, सेना के कई बहादुरों को शहादत देनी पड़ी.3. 16 महीने हो गए, मणिपुर जल रहा है और प्रधानमंत्री जी आपने वहां मुड़ कर भी नहीं देखा है.

क्या अरविंद केजरीवाल को मिलेगी जमानत? सुप्रीम कोर्ट कल सुनाएगा फैसला

एजेंसी

नई दिल्ली: सीबीआई केस में अरविंद केजरीवाल की जमानत पर सुप्रीम कोर्ट अपना फैसला कल सुनाएगी। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल द्वारा जमानत की मांग करते हुए और कथित उत्पाद शुल्क नीति घोटाले से जुड़े भ्रष्टाचार के एक मामले में सीबीआई द्वारा उनकी गिरफ्तारी को बरकरार रखने के दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश को चुनौती देते हुए याचिका दायर की गई है।जस्टिस सूर्यकांत और उज्जल भुइयां की पीठ कल फैसला सुनाएगी।शीर्ष अदालत द्वारा 5 सितंबर को केजरीवाल की याचिकाओं पर अपना फैसला सुरक्षित रखने के बाद यह घटनाक्रम सामने आया।

जमानत याचिका पर आदेश तब सुरक्षित रखा गया जब सीबीआई ने दलील दी कि अगर केजरीवाल को अंतरिम जमानत पर रिहा किया गया तो वह सबूतों के साथ छेड़छाड़ कर सकते हैं और दिल्ली उत्पाद शुल्क नीति मामले में चल रही जांच में बाधा डाल सकते हैं।

नीतीश के पास विजन नहीं, पुराने खयालात के सीएम, तेजस्वी ने विधानसभा चुनाव से पहले चला बड़ा दांव

एजेंसी

बिहार: बिहार विधानसभा चुनाव से पहले ही सभी दलों ने अपनी रणनीति के अनुरूप तैयारी में ताकत झोंक दी है।राजद नेता सह पूर्व उपमुख्यमंत्री व नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव इन दिनों आभार यात्रा पर बिहार के विभिन्न जिलों की दौर लगा रहे हैं।बुधवार को समस्तीपुर में आभार यात्रा के दूसरे दिन उन्होंने संवाद कार्यक्रम में भाग लिया। उन्होंने कहा कि हमने वादा किया था कि मुख्यमंत्री बनेंगे तो 10 लाख नौकरियां देंगे। हमने उपमुख्यमंत्री रहते हुए 5 लाख नौकरियां दी है।हमें नया बिहार बनाना है। तेजस्वी ने मुख्यमंत्री को पुराने

ख्यालात का बताते हुए कहा कि उनका अब कोई विजन नहीं है।उन्होंने इशारों में बताने की कोशिश की कि हमारी सरकार बनाइए, फिर से लाखों की संख्या में नौकरी और रोजगार दिए जाएंगे।उन्होंने कहा कि आपने जो भरोसा जताया है उसके लिए आभारी हूं।हम आपकी लड़ाई लड़ने आए हैं। तेजस्वी यादव सामाजिक न्याय, कौमी एकता, गरीबों के कल्याण, शिक्षित बेरोजगारों के लिए रोजगार हेतु मर-मिटने को तैयार रहेगा।नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि किसी भी संगठन की रीढ़ कार्यकर्ता ही होते हैं। यहां वे कार्यकताओं को सुनने, मिलने तथा सुझाव प्राप्त करने आए हैं। कार्यकताओं से डायरेक्ट जुड़ने के लिए ही उन्होंने कार्यकर्ता संवाद कार्यक्रम का शुभारंभ किया है।पांच विधानसभा क्षेत्र के कार्यकताओं से मिले समस्तीपुर की पावन धरती जननायक कपूर्री ठाकुर जी की जन्मभूमि है।

डॉक्टर कर रहे थे प्रदर्शन, अचानक नजर आया लावारिस बैक, मची सनसनी, बम स्क्वॉड बुलाया

एजेंसी

पश्चिम बंगाल: लेडी डॉक्टर के साथ रेप और मर्डर को लेकर डॉक्टरों के चल रहे विरोध प्रदर्शन के बीच कोलकाता के आरजी कर अस्पताल के पास एक संदिग्ध बैग रखा हुआ पाया गया जिससे बम की अफवाह फैल गई।घटनास्थल पर डॉग और बम निरोधक दस्ता पहुंच गया है। 9 अगस्त को अपने परिसर में एक जूनियर डॉक्टर के साथ बलात्कार और हत्या के बाद अस्पताल सुर्खियों में है। सुप्रीम कोर्ट के ड्यूटी पर लौटने के निर्देश के बावजूद, पूरे पश्चिम बंगाल में

जूनियर डॉक्टर पीड़िता के लिए न्याय की मांग करते हुए विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं।

इस बीच, उत्तर 24 परगना के भाटपारा नगर पालिका के वार्ड नंबर 12 में एक घर में कच्चे बम पाए गए। भाटपाड़ा पुलिस मौके पर मौजूद है।बम निरोधक दस्ता बुलाया गया है।गौरतलब है कि 9 अगस्त को अस्पताल में ड्यूटी के दौरान एक स्नातकोत्तर प्रशिक्षु डॉक्टर के साथ कथित तौर पर बलात्कार किया गया था और उसकी हत्या कर दी गई थी। बाद में, 32 वर्षीय महिला का अर्धनग्न शव सरकारी सेमिनार हॉल में मिला था। कोलकाता में अस्पताल चलाते हैं. अगले दिन अपराध के सिलसिले में एक नागरिक स्वयंसेवक को गिरफ्तार किया गया।

'दो जवानों संग हिंसा, महिला साथी संग रेप', लिखकर राहुल गांधी ने पूछा- कब तक आंख चुराएंगे

एजेंसी

नई दिल्ली: मध्य प्रदेश में सेना के दो जवानों के साथ हिंसा और उनकी महिला साथी के साथ दुष्कर्म मामले में कांग्रेस के सांसद और विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने भारतीय जनता पार्टी (इखढ) सरकार पर निशाना साधा है. राहुल गांधी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, "मध्य प्रदेश में सेना के दो जवानों के साथ हिंसा और उनकी महिला साथी के साथ दुष्कर्म पूरे समाज को शर्मसार करने के लिए काफी है.राहुल गांधी ने

आगे लिखा, "भाजपा शासित राज्यों की कानून व्यवस्था लगभग अस्तित्वहीन है और महिलाओं के खिलाफ दिन प्रतिदिन बढ़ते अपराधों पर भाजपा सरकार का नकारात्मक रवैया अत्यंत चिंताजनक है. अपराधियों की ये निर्भीकता प्रशासन की पूर्ण नाकामी का परिणाम है और इस कारण देश में पनपता असुरक्षित वातावरण भारत की बेटियों की स्वतंत्रता, उनकी आकांक्षाओं पर बंदिश है. समाज और सरकार दोनों शर्मिंदा हों और गंभीरता से विचार करें. देश की आधी आबादी की रक्षा की जिम्मेदारी से कब तक आंख चुराएंगे !"इस घटना के बाद मध्य प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष जीतू पटवारी ने भी बीजेपी सरकार पर निशाना साधा है.

गणपति जुलूस के दौरान मांड्या में सांप्रदायिक झड़प के बाद 52 लोग हिरासत में लिए गए

एजेंसी

कर्नाटक: कर्नाटक पुलिस ने राज्य के मांड्या जिले में बुधवार, 11 सितंबर को गणपति जुलूस के दौरान हुई सांप्रदायिक झड़पों के सिलसिले में गुरुवार को 52 लोगों को हिरासत में लिया। पुलिस के अनुसार, जिले के बदरीकोप्पलु गांव में झड़प तब हुई जब कथित तौर पर एक मस्जिद के पास से कुछ लोगों पर पत्थर फेंके गए, जब वे गणपति जुलूस निकाल रहे थे। इसके बाद कई हिंदू युवकों ने पुलिस थाने के सामने गणेश की मूर्ति रख दी और न्याय की मांग करते हुए विरोध प्रदर्शन किया। एक समूह ने अपना आक्रोश व्यक्त करने के लिए कुछ दुकानों में आग लगा दी और टायर जलाए, जिससे तनाव और बढ़ गया। लोगों को हिरासत में लिए जाने के बाद उनके रिश्तेदार स्थानीय पुलिस स्टेशन के सामने जमा हो गए और उनकी रिहाई की मांग करने लगे।पुलिस द्वारा हिरासत में लिए गए लोगों की रिहाई की मांग करते हुए एक व्यक्ति ने कहा, "हमारे लोगों ने कुछ भी गलत नहीं किया। उन्हें बिना किसी कारण के गिरफ्तार किया गया।" इस बीच, पुलिस ने कहा कि मामले के संबंध में लोगों को पूछताछ के लिए लाया गया था। एक पुलिस अधिकारी ने कहा, "हम उन्हें पूछताछ के लिए लाए हैं। जिन्होंने कुछ भी गलत नहीं किया है, उन्हें रिहा कर दिया जाएगा।" पुलिस ने इलाके में हाई अलर्ट घोषित कर दिया है और स्थिति को नियंत्रण में लाने के लिए भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (उपद्रव या खतरे की आशंका के तत्काल मामलों में जारी आदेश) की धारा 163 लगा दी है।मंड्या के डिप्टी कमिश्नर डॉ. कुमार ने कहा, "घटना शाम को गणेश जुलूस के दौरान हुई। जब जुलूस मस्जिद के पास पहुंचा तो कुछ उपद्रवियों ने पथराव किया। यह बात हमारे संज्ञान में आई है।

8 देशों के एयरफोर्स चीफ ने उड़ाया एक-दूसरे का फाइटर जेट,

20 राष्ट्र ने किया ऑब्जर्व, हैरतअंगेज कलाबाजी देख बोले रक्षा मंत्री- ये नंबर वन है

एजेंसी

नई दिल्ली: भारतीय वायुसेना की पहली मल्टीनेशनल एयर एक्सरसाइज तरंग शक्ति 2024 जोधपुर के एयर फोर्स स्टेशन पर देखने को मिली। वायुसेना द्वारा आयोजित इस एयर एक्सरसाइज में भारत समेत आठ देश हिस्सा ले रहे हैं, जबकि 20 अन्य राष्ट्र इसे ऑब्जर्व कर रहे हैं। इंडियन एयर फोर्स के इस पहले बहुराष्ट्रीय तरंग शक्ति एक्सरसाइज में विदेशी वायु सेनाओं के चीफ ने भी शिरकित की।रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह तरंग शक्ति अभ्यास का निरीक्षण करने पहुंचे। इसके साथ ही रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह 12 से 14 सितंबर तक आयोजित डिफेंस

एविएशन एक्सपो का भी उद्घाटन किया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने जोधपुर में कहा कि आत्मनिर्भर भारत के नए संकल्प के साथ भारतीय रक्षा क्षेत्र तेजी से आगे बढ़ रहा है। सेंसर, रडार, आदि क्षेत्र में भारत काफी हद तक आत्मनिर्भर हो गया है। आज के वक्त में जहां कई देश युद्ध कर रहे हैं वहीं भारत का लक्ष्य एकजुट रहकर एकसाथ आगे बढ़ना है। दुनिया बदल रही है और नयी चुनौतियां सामने आ रही हैं, ऐसे में हमें अपनी साझेदारी, सहयोग का दायरा बढ़ाना होगा। हमारी वायुसेना, और हमारा रक्षा क्षेत्र आत्मनिर्भर भारत के नए संकल्प के साथ तेजी से आगे बढ़ रहा है। आज हल्के लड़ाकू विमान, सेंसर, राडार और इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर जैसी चीजों में हम बहुत हद तक आत्मनिर्भर हो चुके हैं, और इन क्षेत्रों में लगातार आगे बढ़ने के लिए हम प्रयासरत हैं।तरंग शक्ति युद्धाभ्यास के दौरान आज रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की मौजूदगी में वायुसेना ने हैरतअंगेज करतब दिखा। भारत सहित आठ देशों के वायुसेना प्रमुखों ने एक-दूसरे के लड़ाकू विमान उड़ाए। यह नजारा देख रक्षा मंत्री भारतीय वायुसेना की खूब तारीफ की। उन्होंने कहा कि हमारी फोर्स दुनिया में नंबर वन है।

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के महासचिव कॉमरेड सीताराम येचुरी के निधन की जानकारी मिलते ही जयनगर पार्टी कार्यालय में पार्टी का झण्डा झुका दिया गया है

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
अबु बकर

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के महासचिव कॉमरेड सीताराम येचुरी के निधन की जानकारी मिलते ही जयनगर पार्टी कार्यालय में पार्टी का झण्डा झुका दिया गया है पार्टी साथी निःशब्द हैं।सीताराम येचुरी पार्टी के प्रिय नेता में से एक थे जो छात्र राजनीति से उठ कर देश के वाम आंदोलन का शीर्ष नेतृत्व किया जो वर्तमान में सी.पी.एम. के राष्ट्रीय महासचिव के पद पर थे।

देश में कॉमरेड सीताराम येचुरी के निधन से खास कर भारत में वाम आंदोलन को भारी क्षति पहुची हैं।

शोक व्यक्त करने में पार्टी के वरिष्ठ नेता कॉमरेड रामजी यादव, कॉमरेड उपेन्द्र यादव, कॉमरेड चन्देश्वर प्रसाद, कॉमरेड कुमार राणा प्रताप सिंह, कॉमरेड संतोष कुमार मंडल, कॉमरेड मुकेश कुमार,कॉमरेड कन्हैया चौधरी,कॉमरेड रविन्द्र बिहारी उर्फ मोहन, कॉमरेड आतिश कुमार यादव, कॉमरेड रत्नेश्वर प्रसाद,कॉमरेड विन्दा मुखिया के अलावे दर्जनों कार्यकर्ता उपस्थित थे।सीपीआई (एम) नेता सीताराम येचुरी, जिन्हें दिल्ली के एम्स में भर्ती कराया गया था, का गुरुवार को लंबी बीमारी के बाद निधन हो गया। समाचार एजेंसी पीटीआई ने पार्टी और अस्पताल के सूत्रों के हवाले से बताया गया। गौरतलब है कि येचुरी को निमोनिया जैसे सीने के संक्रमण के इलाज के लिए 19 अगस्त को एम्स में भर्ती कराया गया था। निधन के समय सीताराम की उम्र 72 वर्ष थी।सीताराम पिछले कुछ दिनों से श्वसन सहायता पर थे और डॉक्टरों की एक बहु-विषयक टीम द्वारा उनका इलाज किया जा रहा था।

सीताराम येचुरी कौन थे?सीताराम येचुरी ने 2015 में सीपीएम के महासचिव के रूप में प्रकाश करात का स्थान लिया था।वे पार्टी नेता हरकिशन सिंह सुरजीत के नेतृत्व में आगे बढ़े, जिन्होंने पहले वी पी सिंह की राष्ट्रीय मोर्चा सरकार और 1996-97 की संयुक्त मोर्चा सरकार के दौरान गठबंधन युग के शासन में प्रमुख भूमिका निभाई थी, दोनों ही सरकारों को सीपीआई (एम) ने बाहर से समर्थन दिया था।गौरतलब है कि सीताराम ने भारत-अमेरिका परमाणु समझौते पर सरकार के साथ बातचीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, जिसके कारण करात के अड़ियल रुख के कारण वामपंथी दलों ने यूपीए-1 सरकार से समर्थन वापस ले लिया था।

सीताराम येचुरी के बारे में जानने योग्य मुख्य बातें

यह जानना महत्वपूर्ण है कि सीताराम येचुरी 19 अप्रैल, 2015 से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) पोलित ब्यूरो की केंद्रीय समिति के महासचिव थे और राज्यसभा में सांसद के रूप में उनका दूसरा कार्यकाल 2017 में समाप्त हुआ।चेन्नई में 12 अगस्त, 1952 को जन्मे सीताराम येचुरी हैदराबाद में पले-बढ़े और उन्होंने दसवीं कक्षा (कक्षा 10) तक ऑल सेंट्स हाई स्कूल में अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की और बाद में 1969 के तेलंगाना आंदोलन के दौरान दिल्ली पहुँचे।सीताराम ने दिल्ली में प्रेसिडेंट्स एस्टेट स्कूल में दाखिला लिया और केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) उच्चतर माध्यमिक परीक्षा में अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

उन्होंने दिल्ली के सेंट स्टीफंस कॉलेज से अर्थशास्त्र में बीए (ऑनर्स) और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) से अर्थशास्त्र में एमए भी प्रथम रैंक हासिल की। ??बाद में, सीताराम अर्थशास्त्र में पीएचडी करने के लिए जेएनयू में शामिल हो गए, जो 1975 में 'आपातकाल' के दौरान उनकी गिरफ्तारी के साथ ही रद्द हो गई। 1970 के दशक में सीताराम तीन बार स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एसएफआई) के नेतृत्व में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय छात्र संघ के अध्यक्ष रहे।बाद में, उन्हें आपातकाल के दौरान गिरफ्तार कर लिया गया। प्रकाश करात के साथ मिलकर उन्होंने जेएनयू को वामपंथी गढ़ में बदलने का काम किया।सीपीआई (एम) नेता सीताराम येचुरी, जिन्हें दिल्ली के एम्स में भर्ती कराया गया था, का गुरुवार को लंबी बीमारी के बाद निधन हो गया।समाचार एजेंसी पीटीआई ने पार्टी और अस्पताल के सूत्रों के हवाले से बताया गया।

सीताराम येचुरी के निधन पर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह सहित वरिष्ठ नेताओं ने जताया शोक

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

पटना. गुरुवार, 12 सितंबर, 2024 वरिष्ठ वामपंथी नेता सीताराम येचुरी के निधन पर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह ने शोक जताया है।अपने शोक संदेश में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह ने कहा कि सीताराम येचुरी देश के वरिष्ठ नेताओं में से एक रहें हैं। उनका सांगठनिक नेतृत्व क्षमता अद्वितीय थी। उनको आजीवन मजदूरों और शोषितों के लिए संघर्षशील बताते हुए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि उनके निधन से

देश में वाम राजनीति को बहुत बड़ा नुकसान हुआ। साथ ही देश ने बेहद मजबूत राजनीतिक व्यक्तित्व को खो दिया है।इंडिया गठबंधन में लगातार उन्होंने अपना महत्वपूर्ण सुझाव दिया।वरिष्ठ नेता सीताराम येचुरी के निधन पर प्रदेश अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह के अलावे विधानमंडल दल के नेता डॉ शकील अहमद खान, पूर्व अध्यक्ष व विधान परिषद में दल के नेता डॉ मदन मोहन झा, पूर्व मंत्री कृपानाथ पाठक, कोषाध्यक्ष निर्मल वर्मा , ब्रजेश पांडेय, मीडिया विभाग के चेयरमैन राजेश राठौड़, बंटी चौधरी, ब्रजेश प्रसाद मुनन, पूर्व विधान पार्षद लालबाबू लाल, सहित अन्य नेतागण ने शोक जताया है।

श्री रोशन कुशवाहा(भारतीय प्रशासनिक सेवा) ने समस्तीपुर के नए जिला पदाधिकारी के रूप में कार्यभार संभाला

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मोहम्मद जुबैर

गुरुवार को श्री रोशन कुशवाहा(भारतीय प्रशासनिक सेवा) ने समस्तीपुर के नए जिला पदाधिकारी के रूप में कार्यभार संभाला ।जिला अधिकारी का पदभार संभालते ही उन्होंने सभी जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ एक संक्षिप्त बैठक की।बैठक में सर्वप्रथम अपर समाहर्ता ने जिला अधिकारी का औपचारिक रूप से स्वागत किया एवं सभी अधिकारियों ने एक-एक कर अपना परिचय दिया। अधिकारियों को संबोधित करते हुए जिला अधिकारी ने कहा कि वे प्रत्येक विभाग की प्रगति की नियमित समीक्षा करेंगे तथा सभी अधिकारीयों को अपने-

अपने विभाग के कार्यों की प्राथमिकता तय कर उस दिशा में कार्य करने का निर्देश दिया।जिला अधिकारी ने उनका स्वागत करने के लिए सभी का धन्यवाद किया।बैठक में जिला पदाधिकारी के अलावा अपर समाहर्ता, उप विकास आयुक्त एवं विभिन्न विभागों के वरीय पदाधिकारी मौजूद थे।

डीएम ने किया जिला परिषद कार्यालय का निरीक्षण

मो. सदरे आलम नोमानी

सीतामढ़ीःडीएम रिची पांडेय के द्वारा आज डुमरा स्थित जिला परिषद कार्यालय का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के क्रम में पाया गया कि जिला परिषद द्वारा सैरात बंदोबस्ती की स्थिति बिल्कुल ही संतोषजनक नहीं है।साथ ही सैरात बंदोबस्ती के विरुद्ध वसूल की गई राशि भी बहुत कम है।समीक्षा के क्रम में पाया गया की सैरात बंदोबस्ती में गंभीरता नहीं बरती जा रही है।न ही बंदोबस्त किए गए सैरातों से विभागीय वसूली के प्रति रुचि नजर आई। जिलाधिकारी ने इस पर कड़ी नाराजगी प्रकट की करते हुए निर्देश दिया की जिला परिषद की आय में वृद्धि के मद्देनजर प्रभावी कार्य न करना एवं कार्य में रुचि नहीं लेना लापरवाही का प्रतीक है। ऐसे कर्मियों को चिन्हित करते हुए उनके विरुद्ध सख्त कार्रवाई करने का निर्देश उप विकास आयुक्त को दिया गया। वहीं समीक्षा के क्रम में पाया गया कि जिला परिषद के अधीन कुल 823.53 एकड़ जमीन है।बताया गया कि इनमें से कई एकड़ जमीन अतिक्रमित कर लिया गया है। अतिक्रमण मुक्त करने की दिशा में जिला परिषद के द्वारा कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई।सिर्फ एक या दो बार अंचल अधिकारी को पत्र प्रेषित किया गया है। कितनी जमीन अतिक्रमित की गई हैं इससे संबंधित जानकारी संबंधित कार्यालय के कर्मियों द्वारा उपलब्ध नहीं कराई जा सकी।जिलाधिकारी ने कड़ी नाराजगी करते हुए निर्देशित किया कि अतिक्रमण मुक्त करने की दिशा में ठोस कार्रवाई करना सुनिश्चित की जाए।साथ ही कार्य में कोताही बरतने वाले कर्मियों, अभियंताओं इत्यादि को चिन्हित करते हुए यथोचित कार्रवाई की जाए। जिलाधिकारी ने स्पष्ट कहा कि कार्य के प्रति गंभीरता न बरतने वाले कर्मियों को बक्शा नहीं जाएगा।जिला परिषद के कर्मी कार्य संस्कृति में सुधार लाएं अन्यथा कार्रवाई के लिए तैयार रहें। उन्होंने उप विकास आयुक्त को निर्देशित किया ।

मधुबनी जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा की अध्यक्षता में जिला राजस्व समन्वय समिति एवं आंतरिक संसाधन समिति की बैठक आयोजित.

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
अबु बकर

- मधुबनी जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा की अध्यक्षता में जिला राजस्व समन्वय समिति एवं आंतरिक संसाधन समिति की समीक्षात्मक बैठक हुई आयोजित.
- ओवरऑल परफॉर्मेंस में कलुआही प्रथम, फुलपरास द्वितीय, लदनिया तृतीय, अंधराठाढ़ी चतुर्थ, हरलाखी को पांचवां रैंक. वहीं मधवापुर, रहिका, लखनौर, बेनीपट्टी, पंडौल निम्न प्रदर्शन करते हुए अंतिम पांच रहे.
- सभी अंचलाधिकारियों को अतिक्रमणवाद को गंभीरता से लेकर त्वरित निष्पादन का दिया निर्देश.
- न्यायालय संबधी मामलों किसी भी प्रकार की शिथिलता बर्दाश्त नही. दाखिल-खारिज के प्राप्त आवेदनों का हर हाल में निर्धारित अवधि में निष्पादन करने का दिया निर्देश.

- भूमि-विवाद के मामलों का सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ ससमय निष्पादन सुनिश्चित करें : जिलाधिकारी.

जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा की अध्यक्षता में समाहरणालय स्थित सभाकक्ष में जिला राजस्व समन्वय समिति एवं आंतरिक संसाधन की समीक्षात्मक बैठक आयोजित की गई. समीक्षा क्रम में पाया गया कि अगस्त माह में ओवरऑल प्रदर्शन में कलुआही प्रथम, फुलपरास द्वितीय, लदनिया तृतीय, अंधराठाड़ी चतुर्थ व हरलाखी को पांचवां रैंक मिला है. वहीं मधवापुर, रहिका, लखनौर, बेनीपट्टी, पंडौल निम्न प्रदर्शन कर अंतिम पांच में रहे. मधवापुर प्रखंड का प्रदर्शन सबसे निम्न रहा. गौरतलब हो कि अगस्त माह में सभी अंचल अधिकारियों द्वारा दाखिल खारिज, अभियान बसेरा-2, परिमार्जन प्लस, आधार सीडिंग, ऑनलाइन एलपीसी, जमाबंदी, अतिक्रमण आदि कार्यों में प्रदर्शन के आधार पर उक्त रैंकिंग की गई है. जिलाधिकारी ने कहा कि अंचलाधिकारी लगातार 5 महीने तक अपने प्रदर्शन में सुधार नहीं करते हैं तो उनके विरुद्ध प्रपत्र क गठित करके अग्रेतर कार्रवाई की जाएगी.जिलाधिकारी ने दाखिल-खारिज के प्राप्त आवेदनों का हर हाल में निर्धारित अवधि में निष्पादन करने का निर्देश दिया, साथ ही जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि अतिक्रमण के मामलों को सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ त्वरित रूप से निष्पादित करे. बैठक में जिलाधिकारी ने सभी सीओ को अतिक्रमणवाद के मामलों को सरजमीनी पोर्टल पर अनिवार्य रूप से अपलोड करने का भी निर्देश दिया. उन्होंने उपस्थित सभी डीसीएलआर को नियमित रूप से अंचलों का निरीक्षण करने का निर्देश दिया. उन्होंने सभी सीओ को जलनिकायों के अतिक्रमण को स्वयं चिन्हित कर उसपर अतिक्रमण वाद चलाकर अतिक्रमण मुक्त करने का भी निर्देश दिया।जिलाधिकारी ने सभी सीओ को तेजी के साथ नीलाम पत्रवाद का निष्पादन करने का निर्देश दिया।लोक सेवाओं के अधिकार की समीक्षा के क्रम में निर्देश दिया कि प्राप्त आवेदनों को निर्धारित अवधी में हर हाल में निष्पादित करवाना सुनिश्चित करे। उन्होंने कहा कि लोक सेवा अधिकार अधिनियम के तहत आरोपित दंड को संबधित अधिकारियों से ससमय वसूली भी करे।जिलाधिकारी ने कहा कि जनता दरबार में सबसे अधिक परिवाद भूमि विवाद से संबंधित होते हैं। भूमि विवाद के समाधान के लिए थाना दिवस को उपयोगी बताते हुए उन्होंने कहा कि भूमि विवाद से जुड़े मामलों में अधिकतर मामलों को भूमि की मापी करवाकर निष्पादित किया जा सकता है।उन्होंने कहा कि वे स्वयं थानों का औचक निरीक्षण करेंगे और नोटिस और तामिला जैसे कार्य का ससमय संपादन के मामलों का निरीक्षण करेंगे. उन्होंने कहा कि भूमिविवाद के मामलों को सर्वोच्च प्राथमिकता।

सुंदरबन कराटे कप राज्य स्तरीय प्रतियोगिता सफलतापूर्वक संपन्न

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

पश्चिम बंगाल के 24 परगना के कालीनगर में *सुंदरबन कराटे कप राज्य स्तरीय प्रतियोगिता* का भव्य आयोजन किया गया।इस प्रतियोगिता में विभिन्न जिलों के प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया और अपने कराटे कौशल का शानदार प्रदर्शन किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में *वर्ल्ड एमेच्योर शोतोकान कराटे फेडरेशन* के राष्ट्रीय अध्यक्ष कियोशी सुमन रॉय उपस्थित थे, जिन्होंने विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार वितरित किए और उनका हौसला बढ़ाया।

इस प्रतियोगिता के सफल खिलाड़ियों की सूची इस प्रकार हैः

- *संध्या रॉय*: १२३, काता 2ल्लाि, टीम काता १२३, ओपन कुमिते
- *जयसिता दास*: १२३
- *इशिता साहा*: 2ल्लाि

- *सुचित्रा मजूमदार*: 3१ि
- *इशानी साहा*: काता 2ल्लाि, बेसिक 2ल्लाि
- *परम घोष*: बेसिक 2ल्लाि
- *मिंटन मंडल*: काता 2ल्लाि, बेसिक १२३
- *सृजिता बुनिया*: काता 2ल्लाि, बेसिक 2ल्लाि
- *तितास दास*: बेसिक
- *जयोश्री*: काता 2ल्लाि, बेसिक 2ल्लाि
- *राज*: काता 2ल्लाि, बेसिक 2ल्लाि
- *जॉयंतो*: बेसिक 3१ि
- *सोहन मोल्ला*: बेसिक 2ल्लाि
- *ऋतब्रत सिन्हा*: बेसिक 2ल्लाि

इस कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में *स्वामी सोतप्रोवनोदोजी महाराज* की उपस्थिति ने भी प्रतियोगिता की शोभा बढ़ाई।

प्रतियोगिता के दौरान कराटे की विभिन्न श्रेणियों जैसे काता और कुमिते में प्रतिभागियों ने भाग लिया और अपनी कड़ी मेहनत का प्रदर्शन किया। आयोजक समिति ने प्रतियोगियों के उत्साह और खेल भावना की सराहना की और इसे कराटे खेल को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रयास बताया।मुख्य अतिथि कियोशी सुमन रॉय ने खिलाड़ियों की प्रशंसा करते हुए कहा कि कराटे केवल एक खेल नहीं है, बल्कि यह अनुशासन, आत्म-संयम और आत्म-रक्षा का एक महत्वपूर्ण साधन है।उन्होंने राज्य स्तर पर इस तरह की और प्रतियोगिताओं की आवश्यकता पर बल दिया ताकि कराटे को पूरे देश में एक नई पहचान मिल सके।

समस्तीपुर समेत 15 जिलों में नए एसपी की तैनात विनय तिवारी बने मुजफ्फरपुर रेल एसपी

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मोहम्मद जुबैर

समस्तीपुर समेत 15 जिलों में नए एसपी की तैनाती; बिहार पुलिस में एक साथ 29 आईपीएस का तबादला; देखें सूचीसितम्बर आलोक राज के पुलिस महानिदेश का पद संभलते ही बड़े पैमाने पर फिर आईपीएस अफसरों का ट्रांसफर किया गया है।विनय तिवारी, उपेंद्रनाथ वर्मा, डॉ गौरव मंगला, डी. अमरकेश, कार्तिकेय के शर्मा, स्वर्ण प्रभात, अंबरीश राहुल, अभिनव धीमन समेत भारतीय पुलिस सेवा के 29 अधिकारियों का गुरुवार को तबादला कर दिया गया। नए पुलिस महानिदेशक आलोक राज के आने के बाद यह सबसे बड़ा तबादला है। इस सूची के अनुसार एक साथ 15 जिलों के एसपी बदल गए हैं।क्ढर अशोक मिश्रा को समस्तीपुर का रढ बनाया गया है वहीं क्ढर विनय तिवारी को रेल रढ बनाकर मुजफ्फरपुर भेजा गया है।

इंकलाबी नौजवान सभा आरवाईएर ने स्मार्ट मीटर के खिलाफ पूसा विद्युत कार्यालय पर किया विरोध प्रदर्शन

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मोहम्मद जुबैर

पूसा/समस्तीपुर 12 सितंबर 2024. आज इंकलाबी नौजवान सभा "आरवाईए" के झंडा-बैनर तले मानस मंदिर से बैंक चौक, थाना होते हुए प्रतिरोध मार्च निकालकर पूसा विधुत कार्यालय के समक्ष विरोध प्रदर्शन कर स्मार्ट मीटर की बाध्यता खत्म करो, उपभोक्ताओं को फर्जी बिल भेजना बंद करो, 24 घंटे बिजली का प्रबंध करो, दिल्ली, पंजाब, कर्नाटक के तर्ज.पर 200 यूनिट बिजली मुफ़्त करो, पंचायत स्तर कैंप लगाकर बिजली बिल सुधार करने सहित अन्य मुद्दों को लेकर नारे लगा रहे थे।कार्यक्रम का नेतृत्व आरवाईए जिला सचिव रौशन कुमार ने किया।सभा को संबोधित करते हुए आरवाईए जिला सचिव

रौशन कुमार ने कहा कि जब से लोगों के घरों में स्मार्ट मीटर लगा है तब से अनर्गल बिजली बिल आने शुरू हो गए. अब जब लोग फर्जी बिजली बिल के कारण से रूबरू हो चुके है और स्मार्ट मीटर लगवाने से इनकार कर रहे हैं तो बिजली विभाग स्थानीय प्रशासन के साथ मिलकर जोर जबरदस्ती कर रही है जो निंदनीय है, सबसे बड़ी विडंबना यह है की बिहार देश का सबसे पिछड़ा राज्य होने के बावजूद यहां अन्य विकसित राज्यों के तुलना में बिजली दर बहुत महंगा है. इतनी महंगी बिजली दर का भुगतान करने के बाद भी प्रखंड एवं जिलावासियों को बिजली के आंख मिचौली का सामना करना पड़ता है। जिसके वजह से उपभोक्ताओं में नाराजगी है. उन्होंने कहा जिस वक्त 100 वाट्स का बल्ब उपयोग में था उस समय मात्र 150-300 रुपए बिल आता था. अब जब 9-10 वाट्स के एलईडी बल्ब का जमाना है तो बिजली बिल घटने के बजाय और चार गुना बढ़ गया है. गरीब- गुरबे लोग इतनी महंगी बिजली दर चुकाने के स्थिति में नहीं है. खुद बिहार सरकार के जनगणना की रिपोर्ट है की बिहार में 95 लाख लोगों की मासिक आय 6000 रुपए से भी कम है इसीलिए हमारा संगठन अन्य राज्यों के तर्ज पर बिहार में भी 200 यूनिट बिजली फ्री करने की मांग कर रही है. ताकि गरीब तबके के लोगों भी बिजली की सुविधा उठा सके.सभा को संबोधित भाकपा-माले प्रखंड सचिव अमित कुमार ने कहा कि प्रीपेड मीटर तेज चलने की खबर लगातार आ रही है। जो उपभोक्ता डीजिटल मीटर का 250-300 रुपए का बिल आता था, डीजिटल मीटर लगते ही उनका बिल 5 सौ रुपए का आने लगा।

राजद अल्पसंख्यक सेल के प्रदेश अध्यक्ष डाङ्ग मोङ्ग नवाज आलम उर्फ मोङ्ग अनवर आलम ने मो. फैयाज अहमद को राजद अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ समस्तीपुर का जिलाध्यक्ष मनोनीत किया है'

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मोहम्मद जुबैर

राजद अल्पसंख्यक सेल के प्रदेश अध्यक्ष डाङ्ग मोङ्ग नवाज आलम उर्फ मोङ्ग अनवर आलम ने समस्तीपुर प्रखंड के कपूर्री ग्राम पंचायत के रामकृष्णपुर गांव के निवासी मोङ्ग फैयाज अहमद को राजद अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ समस्तीपुर का जिलाध्यक्ष मनोनीत किया है ' मोङ्ग फैयाज अहमद को राजद अल्पसंख्यक सेल का जिलाध्यक्ष बनने पर स्थानीय विधायक सह बिहार विधानसभा के मुख्य सचेतक अख्तरुल इस्लाम शाहीन, राजद जिलाध्यक्ष सह पूर्व विधान पार्षद रोमा भारती, वरीय जिला उपाध्यक्ष चंद्रिका प्रसाद सिंह, जिला उपाध्यक्ष मोङ्ग अरमान सदरी, जिला राजद प्रवक्ता

राकेश कुमार ठाकुर, जिला उपाध्यक्ष ललन यादव, जिला उपाध्यक्ष राम विनोद पासवान, जिला महासचिव मोङ्ग परवेज आलम, राजद नगर अध्यक्ष उमेश प्रसाद यादव, जिला राजद महासचिव राकेश यादव, राजद प्रखंड अध्यक्ष संतोष कुमार यादव, राजद शिक्षक प्रकोष्ठ के प्रदेश कोषाध्यक्ष प्रोफेसर डाङ्ग रजनीश कुशवाहा, वरीय राजद नेता जयशंकर ठाकुर, मोङ्ग मुराद, जिला राजद महासचिव मोङ्ग नूरूजोहा कमाल आफो, कार्यालय सचिव रोशन यादव, मोङ्ग ज्योउल्लाह उस्मानी, मोङ्ग अजहर मिकरानी, राहुल राय, रजनीश कुमार, मोङ्ग माहताब आलम विक्की, सैयद एहसानुल हक चुन्ने, सैयद फैसल आलम मन्नू, मोङ्ग सैफुर रजा चुन्नू, मोङ्ग आसिफ इकबाल, मोङ्ग राजन, मोङ्ग सना सईदी उर्फ चीना, मोङ्ग राजन, पूर्व मुखिया चंदन कुमार, पूर्व मुखिया मुकेश कुमार, रामकुमार राय, राकेश कुशवाहा, ज्योतिष महतो, मनोज पटेल, रविन्द्र कुमार रवि, दीपक यादव, मुकेश यादव, हरेंद्र कुमार, मनोज कुमार राय, रंजीत कुमार रंभू, जितू कुशवाहा, अरुण कुशवाहा, रितेश कुमार पिंकू, जयलाल राय, मोङ्ग आशिक, मोङ्ग बशीर, बेबी साह, अशोक साह,नंदन यादव, अखिलेश दास, विमल पासवान, विपीन कुमार राय, अंकित वर्धन आदि ने हर्ष व्यक्त करते हुए उन्हें बधाई दिया है '

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय बैली रोड पटना में शिक्षक दिवस समारोह हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय बैली रोड पटना में शिक्षक दिवस समारोह हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ इस समारोह में विद्यालय के समस्त छात्र-छात्राओं एवं शिक्षक-शिक्षिकाओं ने मनोयोगपूर्वक भाग लिया। समारोह की अध्यक्षता विद्यालय के प्राचार्य श्री प्रदुम्न कुमार सिंह ने की। मुख्य अतिथि सह अध्यक्ष के रूप में अपनी उपस्थिति में उन्होंने संपूर्ण कार्यक्रम को अत्यंत ही व्यवस्थित रूप से संपन्न करवाया। दीप प्रज्वलन एवं गुरु वंदना से सृजित आनंदमयी एवं भाव प्रधान वातावरण में छात्र-छात्राओं ने अपनी सांस्कृतिक प्रस्तुति से सबका मन मुग्ध कर दिया। इस अवसर पर छात्रों एवं शिक्षकों के द्वारा सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन जी के जीवनवृत पर प्रकाश डाला गया तथा उनके गुणों का बखान किया गयो इस मौके पर बारहवीं की छात्रा अनामिका एवं प्रिया ने माता-पिता एवं गुरु की चरणवंदना से सम्बंधित गीत की प्रस्तुति से वातावरण को मोहक रूप प्रदान कर दिया। प्राचार्य महोदय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में शिक्षक दिवस मनाये जाने के कारण, औचित्य आदि पर विस्तारपूर्वक सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने डॉ. राधाकृष्णन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को रेखांकित किया तथा उनके त्याग, समर्पण, कर्मनिष्ठा से सीख लेने की बात कही। उन्होंने ने भारतरत्न सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन को भारतमाता का सच्चा सपूत बताया तथा उन्हें एक महान दार्शनिक, शिक्षाविद, राजनेता समाजसेवी, लेखक, प्रखर वक्ता एवं कुशल संपादक के रूप में याद किया। उन्होंने उनके जीवनसंघर्ष एवं उपलब्धियों का उल्लेख कर छात्रों को इससे प्रेरणा लेने का सन्देश दिया। संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन कक्षा 12वीं के छात्र शाश्वत राज एवं स्वीकृति सिंह ने किया।

इंडो गल्फ सोशल वेलफेयर ट्रस्ट के सभी कमेटी को ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष तुबुद्दीन अहमद ने निरस्त किया,

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

पटना, इंडो गल्फ सोशल वेलफेयर ट्रस्ट (ए पब्लिक चेरीटेबल ट्रस्ट) के संस्थापक अध्यक्ष श्री कुतुबुद्दीन अहमद ने ट्रस्ट के सभी कमिटी को भंग करते हुए कहा कि आज से पहले जो कमेटी मेरे आदेश पर ट्रस्ट के संस्थापक सचिव डॉक्टर सरवर जमाल ने बनाई थी उस कमेटी के बारे में लगातार मुझे सूचना मिल रहा था कि कुछ ट्रस्ट के पदाधिकारी ट्रस्ट के नाम पर धोखाधड़ी तथा ट्रस्ट के नाम को बेचते हुए फर्जी काम बिहार तथा बिहार के बहार राज्यों में किया जा रहा है, मैंने कई राज्यों में फोन से वातार्लाप किया और संस्थापक सचिव डॉक्टर सरवर जमाल से मैंने कहा कि इस तरह की सूचना मुझे प्राप्त हो रही है सरवर जमाल ने त्वरित कार्रवाई करते हुए अन्य जगह अपने जानने वाले तथा अन्य स्त्रोतों से पता किया तो जिस तरह की सूचनाओं मिली थी वह सत्य पाई गई इसलिए यह निर्णय लिया कि तत्काल ट्रस्ट के सभी कमेटी को भंग किया जाए और दिनांक 12 सितंबर 2024 को ट्रस्ट के सभी कमेटियों को भंग किया गया 12 सितंबर 2024 के बाद ट्रस्ट के सिर्फ संस्थापक पदाधिकारी एवं सदस्य ही ट्रस्ट के सभी प्रकार के कार्यों का निष्पादन करेंगे इंडो गल्फ सोशल वेलफेयर ट्रस्ट के द्वारा पिछले तीन वर्षों से बिहार के सिवान जिला में व्यवहार न्यायालय में लगने वाले राष्ट्रीय लोक अदालत में अपना योगदान देता रहा है आगामी 14 सितंबर 2024 को सिवान व्यवहार न्यायालय में राष्ट्रीय लोक अदालत लगने वाला है उपरोक्त राष्ट्रीय लोक अदालत में ट्रस्ट के द्वारा जो कार्य किया जाता है वह सभी कार्य को किया जाएगा,

नीतीश की चिंता बिहार के हर घर तक पहुंचे विकास : डॉ. दिलीप जायसवाल

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

- विपक्ष विकास पर उंगली नहीं उठा सकती : डॉ. दिलीप जायसवाल
- अगस्त महीने में एसटीएफ ने 12 इनामी अपराधियों को किया गिरफ्तार, 87 मोस्ट वांटेड अपराधियों को भी पकड़ा : डॉ. दिलीप जायसवाल

पटना, 12 सितंबर। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सह बिहार के राजस्व और भूमि सुधार मंत्री डॉ. दिलीप जायसवाल ने आज कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को हर समय चिंता रहती है कि बिहार के हर घर तक विकास की रोशनी पहुंचे। उन्होंने कहा कि यही कारण है कि इन दिनों मुख्यमंत्री प्रदेश के विभिन्न इलाकों में अधिकारियों के साथ जा रहे हैं और विकास योजनाओं को देख रहे हैं। उन्होने सवाल उठाते हुए कहा कि इससे विपक्ष को चिंता क्यों हो रही है ?पत्रकारों से चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि विपक्ष विकास को लेकर उंगली नहीं उठा सकता है। उन्होंने कहा कि पहले पटना में एक चिरैयाटांड़ पुल हुआ करता था, अब कई फ्लाईओवर है। इसी तरह पहले गंगा नदी पर एक पुल था आज गंगा नदी के ऊपर कितने ही पुल बन गए। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. जायसवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार के विकास के लिए पिटारा खोल दिया। पहले विपक्ष विशेष राज्य की बात करता था, लेकिन आज उनको नैतिक अधिकार भी नहीं है कि वे विशेष राज्य के दर्जे की मांग करे। अब विपक्ष को इसकी मांग करने में शर्म आयेगी।उन्होंने कहा कि अगले साल चुनाव होना है लेकिन विपक्ष विकास की बात नहीं कर पा रहा। भाजपा अध्यक्ष ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को धन्यवाद देते हुए कहा कि आज उनको चिंता है कि बिहार का विकास हो, यही कारण है कि विकास कार्य जल्द पूरा हो इसको लेकर खुद क्षेत्र में पहुंच रहे हैं। बिहार के मंत्री डॉ. जायसवाल ने कहा कि विपक्ष सही अर्थों में डिरेल हो चुकी है। राहुल गांधी हों या तेजस्वी यादव हों ये चांदी का चम्मच लेकर राजनीति में आए हैं। इन्हें कोई मतलब नहीं। उन्होंने कहा वे लोग आरोप प्रत्यारोप कर थेथेरोलॉजी कर रहे।उन्होंने दावा करते हुए कहा कि अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव में नीतीश कुमार के नेतृत्व में भारी बहुमत से एनडीए की सरकार फिर से बनेगी।विपक्ष के कानून व्यवस्था को लेकर सवाल उठाए जाने पर बिहार के मंत्री डॉ. जायसवाल ने कहा कि अपराधी कोई भी हो इस कानून के राज में कोई बच नहीं सकता है। उन्होंने कहा कि विपक्ष को जानकारी भी रखनी चाहिए। उन्होंने कहा कि बिहार पुलिस अपराधियों की गिरफ्तारी लगातार कर रही है। एसटीएफ ने सिर्फ अगस्त महीने में 12 इनामी अपराधियों को गिरफ्तार किया है जबकि तीन नक्सलियों को भी पकड़ा है। अगस्त महीने में कुल 87 मोस्ट वांटेड अपराधियों को एसटीएफ ने गिरफ्तार किया है।उन्होंने कहा कि एसटीएफ ने इस साल अगस्त महीने तक 113 ऐसे अपराधियों को गिरफ्तार करने में सफलता पाई है, जिनके ऊपर इनाम घोषित किया गया था। इसके अलावा 21 नक्सलियों को भी एसटीएफ की टीम ने इस साल गिरफ्तार करने में सफलता पाई है। इस साल एसटीएफ ने 480 मोस्ट वांटेड अपराधियों को गिरफ्तार करने में सफल हुई है।

मधुबनी सर्किट हाउस में: तेजस्वी यादव के आभार यात्रा को लेकर राज्यसभा सांसद डाक्टर फैयाज अहमद एवं संगठन मंत्री का संयुक्त प्रेसवार्ता

वरिष्ठसंवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
अबु बकर

नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव का मधुबनी में 14 एवं 15 को जनसंवाद यात्रा को लेकर राष्ट्रीय जनता दल के राज्यसभा सांसद डाक्टर फैयाज अहमद एवं संगठन मंत्री का संयुक्त प्रेसवार्ता* *मधुबनी सर्किट हाउस में: तेजस्वी के आभार यात्रा को लेकर राज्यसभा सांसद डाक्टर फैयाज अहमद एवं संगठन मंत्री का संयुक्त प्रेसवार्ता में संगठन मंत्री ने कहा की तेजस्वी. यादव ने जिसतरह बिहार के युवाओंको रोजगार से जोड़ा गया और पूर्व डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव ने गरीब के लिए काम किया है वह भोलाया नहीं जा सकता भाजपा पर तंज करते हुए उन्होंने कहा कि बीजेपी जात पात और हिंदू मुस्लिम की राजनीति करती है इन्हें विकास से कोई लेना-देना नहीं है मंदिर और मस्जिद की बात करते हैं यहां युवाओं को रोजगार चाहिए यह सरकार हमेशा वादा सलाफी करती रही है * आयोजित प्रेस वार्ता में आज सर्किट हाउस मधुबनी में आयोजित की गई इस अवसर पर राज्यसभा सांसद डॉक्टर फैयाज अहमद, बुद्ध जीवी प्रकोष्ठ के मधुबनी जिला के जिला अध्यक्ष विष्णु देव यादव,प्रवक्ताइंद्रजीत यादव, मोहम्मद महताब आलम, पूर्व जिला परिषद अजीत नाथ यादव, अब्दुल ह्ई, मोहम्मद असलम, मोहम्मद दानिश,
प्रवक्ता , एवं विधायक के वह बड़ी संख्या में पार्टी के कार्यकर्ता एवं उपस्थित थे

समस्तीपुर में 696 केन बीयर समेत दो वाहन जब्त, तीन धंधेबाजों को भी पुलिस ने किया गिरफ्तार

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मोहम्मद जुबैर

समस्तीपुर जिला के मथुरापुर थाने की पुलिस ने दो वाहन पर लदे 696 केन बीयर बरामद करने के साथ तीन धंधेबाजों को दबोच लिया। गिरफ्तार तीनों धंधेबाज जिले के विभूतिपुर के निवासी बताये गये हैं। इस संबंध में मथुरापुर थानाध्यक्ष मुकेश कुमार ने बताया कि गुप्त सूचना मिली थी कि कल्याणपुर की ओर से एक स्कॉर्पियो व डस्टर से भारी मात्रा में केन बीयर समस्तीपुर की ओर ले जायी जा रही है।
इसके बाद थानाध्यक्ष ने पुलिस बल के साथ मुक्तापुर गुमती व स्टेशन के बीच वाहन चेकिंग शुरू कर दी। उसी दौरान कल्याणपुर की ओर से दोनों वाहन आते दिखे। लेकिन पुलिस को देख चालकों ने वाहन लेकर भागने का प्रयास किया। तब पुलिस ने खदेड़ कर दोनों वाहन व उस पर सवार लोगों को पकड़ा। जांच में दोनों वाहन से 696 केन बीयर मिला। जिसके बाद पुलिस ने दोनों वाहन को भी जब्त कर लिया। गिरफ्तार धंधेबाजों की विभूतिपुर थाना क्षेत्र के बेलसंडी गांव के अजीत कुमार, विपिन कुमार साह व भरपुरा डीह के मणिकांत मिश्र के रूप में पहचान हुई है। तीनों को पूछताछ के बाद न्यायिक हिरासत में पुलिस ने भेज दिया।

बिहार में बढ़ते अपराध पर तेजस्वी यादव का हल्ला बोल, आरजेडी का राजभवन मार्च 15 सितंबर को

वरिष्ठसंवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

बिहार में कानून व्यवस्था के मुद्दे पर नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव लगातार नीतीश सरकार को घेर रहे हैं। अब उनकी पार्टी राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) ने राज्य में बढ़ते अपराध के खिलाफ 15 सितंबर को राजभवन मार्च निकालने का ऐलान किया है।इस दौरान आरजेडी के तमाम बड़े नेता और पदाधिकारी सड़क पर उतरकर एनडीए सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करेंगे। आरजेडी के पटना स्थित प्रदेश कार्यालय में गुरुवार को हुई एक बैठक में राजभवन मार्च की तैयारियों पर चर्चा की गई।
बैठक में निर्णय लिया गया कि 15 सितंबर को पटना स्थित आरजेडी दफ्तर से मार्च शुरू होगा और राजभवन तक जाएगा। आरजेडी नेताओं ने आरोप लगाया है कि बिहार में लगातार हत्या, लूट, मॉब लिंचिंग तथा महिलाओं से दुष्कर्म की घटनाएं हो रही हैं। इन मामलों में शासन और प्रशासन चुप्पी साधे हुए है। राज्य सरकार का इकबाल खत्म हो गया है और लोग खौफ के साये में जी रहे हैं। गुरुवार को हुई बैठक की अध्यक्षता आरजेडी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष उदय नारायण चौधरी और संचालन पटना जिला राजद अध्यक्ष दीनानाथ सिंह यादव ने किया। मौके पर राष्ट्रीय महासचिव बिनू यादव, प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. तनवीर हसन, पूर्व विधायक आजाद गांधी, डॉ. अनवर आलम, उदय मांझी, प्रदेश प्रवक्ता एजाज अहमद, सारिका पासवान, प्रमोद कुमार सिन्हा, प्रदेश महासचिव प्रमोद कुमार रामआदिमौजूदरहे ।बता दें कि बिहार की मुख्य विपक्षी पार्टी आरजेडी लगातार नीतीश सरकार को अपराध के मुद्दे पर घेर रही है। इससे सूबे का सियासी पारा गमार्या हुआ है। पूर्व डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव आए दिन अपने स्तर पर क्राइम बुलेटिन जारी कर हालिया वारदातों का जिक्र करते हुए कानून व्यवस्था पर सवाल उठाते हैं। अब आरजेडी और मुखर होकर इस मुद्दे को सड़क पर लाना चाहती है ।बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री और राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) के सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव की एंजियोप्लास्टी हुई है। सूत्रों के मुताबिक मुंबई के एक अस्पताल में बुधवार को हार्ट में दिक्कत के बाद उनकी एंजियोप्लास्टी की गई। 76 साल के लालू को दो दिन पहले मुंबई के एशियन हार्ट इंस्टीट्यूट में भर्ती कराया गया था। बताया जा रहा है कि हार्ट में ब्लोकेज की समस्या के चलते डॉक्टरों ने एंजियोप्लास्टी की सलाह दी। हालांकि, अभी तक अस्पताल की ओर से लालू का हेल्थ अपडेट जारी नहीं हुआ है ।समाचार एजेंसी पीटीआई ने सूत्रों के हवाले से बताया है कि एंजियोप्लास्टी के बाद लालू यादव की हालत स्थिर है। उन्हें एक या दो दिन के भीतर अस्पताल से छुट्टी मिल जाएगी। एशियन हार्ट इंस्टीट्यूट के डॉक्टर संतोष डोरा और तिलक सुवर्ण ने उनकी सफल एंजियोप्लास्टी की। बता दें कि आरजेडी सुप्रीमो बीते मंगलवार को पटना से मुंबई पहुंचे थे। उस समय लालू की ओर से बताया गया था कि वे रूटीन हेल्थ चेकअप के लिए डॉक्टरों से मिलेंगे।
लगभग 10 साल पहले इसी अस्पताल में लालू यादव के दिल का ऑपरेशन हुआ था। 2014 में उनके एरोटिक वाल्व का रिप्लेसमेंट किया गया था। यह सर्जरी करीब 6 घंटे तक चली थी। इसके बाद लालू यादव 2018 और 2023 में दो बार फॉलो-अप के लिए मुंबई गए थे।

ब्रीफ न्यूज

पैगंबर इस्लाम की पैदाइश का सम्मान - चिंतन और वास्तविक जश्न का संदेश

मशहूर सामाजिक कार्यकर्ता और वरिष्ठ कॉर्पोरेट नेता रेयाज आलम का हजरत मोहम्मद ? की पैदाइश की अहमियत पर विचार

- जब इस्लामी दुनिया हजरत मोहम्मद ? की पैदाइश का जश्न मनाने की तैयारी कर रही है, रेयाज आलम, जो एक प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता और व्यवसायी नेता हैं, ने इस मौके पर अपने विचार प्रस्तुत किए। आलम ने मशहूर इस्लामी विद्वान मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी? की शिक्षाओं से प्रेरणा लेते हुए, हजरत मोहम्मद ? की पैदाइश की असली रूह और इसकी मौजूदा दौर में अहमियत को उजागर किया।
- रबीउल अव्वल की 12 तारीख असाधारण महत्त्व का दिन है, क्योंकि इस दिन दुनिया के सबसे महान नेता हजरत मोहम्मद ? की आमद हुई थी। हालांकि शरीअत में इस दिन के लिए कोई खास रस्में नहीं बताई गई हैं, लेकिन इसे खुदा की सबसे बड़ी नेमत के जहूर का दिन मानकर मनाना बहुत अर्थपूर्ण और उचित है,₹ रेयाज आलम ने मौलाना मौदूदी? के तजुर्मान-उल-कुरान (अप्रैल 1943) से हवाला देते हुए कहा।
- रेयाज आलम ने इस बात पर जोर दिया कि हजरत मोहम्मद ? की पैदाइश का जश्न सिर्फ खाने-पीने या जुलूसों और रोशनी जैसी गतिविधियों तक सीमित नहीं होना चाहिए। ₹ऐसी गतिविधियां हमें उन जाहिल कौमों से अलग नहीं करतीं, जो अपनी तारीख के अहम घटनाओं को मेलों और जुलूसों से मनाती हैं। इसके विपरीत, इस्लाम ने यादगारों को मनाने का एक अनूठा तरीका दिया है, जैसे कि ईद-उल-अजहा और हज, जो हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कुबार्नी की यादगार हैं। हमें गहराई से सोचना चाहिए कि हम अपनी तारीख का सम्मान किस तरह करें,₹ उन्होंने कहा।
- आलम ने आगे कहा कि इस दिन को हजरत मोहम्मद ? की शिक्षाओं और नैतिकताओं के प्रसार के माध्यम से मनाना चाहिए। ₹नबी ? की ज़िन्दगी ईमान, नेक कर्म और अल्लाह की हिदायत का रौशन मीनार थी। आपका पैगाम दुनिया को रोशनी देता है और इंसानियत को सिखाता है कि असली इंसान कैसे बनना है। इसलिए, हजरत ? की पैदाइश का सबसे अच्छा जश्न यह है कि उनकी शिक्षाओं को फैलाया जाए और उनके आदर्श चरित्र को अपनाने की कोशिश की जाए,₹ उन्होंने कहा। ₹इस दिन का जश्न अस्थायी समारोहों से आगे जाना चाहिए और पूरे साल तक इसका असर रहना चाहिए।₹
- रेयाज आलम ने मीलाद शरीफ के विषय पर भी विचार व्यक्त किया, जो रसूल-ए-अकरम ? की सीरत और उनके फजाइल का ज़िक्र करने की महफि ल होती है। उन्होंने मौलाना मौदूदी? के तजुर्मान-उल-कुरान से एक सवाल का हवाला देते हुए स्पष्ट किया, ₹रसूल अल्लाह ? की ज़िन्दगी और सीरत का ज़िक्र करना न सिर्फ जायज है बल्कि सवाब भी है। हालांकि, इस महफि ल में गलत या जईफ रिवायात (कमजोर हदीसें) बयान करने से बचना चाहिए।₹
- सलाम के वक्त खड़े होने की परंपरा पर बात करते हुए, रेयाज आलम ने संतुलित राय पेश की: ₹तअजीमन खड़ा होना न फर्ज है और न हराम। यह हर व्यक्ति के विवेक पर निर्भर है। अहम बात यह है कि हम इसे दूसरों पर थोपें नहीं या इसकी जरूरत पर जोर न दें। हमारी पांच वक्त की नमाजों में हम तशह्हुद के दौरान 'अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबी' बैठकर पढ़ते हैं, जो इस बात का सबूत है कि खड़ा होना जरूरी नहीं है।
- जब दुनिया इस अहम दिन को मना रही है, रेयाज आलम ने सभी मुसलमानों से अपील की कि वे हजरत मोहम्मद ? की ज़िन्दगी और पैगाम पर गौर करें। ₹आइए इस मौके का फायदा उठाकर अपनी ज़िन्दगी को नबी ? के पैगाम-ए-अमन, अदल और रहमदिली से रौशन करें। नबी ? की पैदाइश का असली जश्न तजाक ीर में नहीं, बल्कि उनकी शिक्षाओं को अपनी रोजमर्रा की ज़िन्दगी में जिंदा रखने और उनकी रहनुमाई के चराग को पूरी इंसानियत के लिए रोशन रखने में निहित है।

BRIEF NEWS

पत्नी से परेशान वनपाल खत लिखकर हुआ गायब

NAWADA : 'मैं अपनी पत्नी से परेशान हो गया हूं। वह बार-बार बोलती है कि आपका अफेयर किसी के साथ चल रहा है। नवादा जिले के अकबरपुर प्रखंड मुख्यालय वन विभाग में कार्यरत वनपाल अरविंद रजक ने अपने कमरे में एक सुसाइड नोट छोड़ा है। उसके बाद से उनका कुछ अता पता नहीं है। वनपाल मंगलवार (10 सितंबर) की देर रात से अपने सरकारी आवास से रहस्यमय तरीके से लापता हैं। जिसकी जानकारी विभागीय लोगों को बुधवार को मिली है। वनपाल ने जाने से पहले कमरे में एक सुसाइड नोट छोड़ा है। उसमें उन्होंने पत्नी की प्रताड़ना से परेशान होकर ये कदम उठाने की बात कही है। इसकी सूचना जिला वन प्रमंडल पदाधिकारी को उनके सहयोगियों ने दिया है। सूचना के बाद विभागीय अधिकारी के होश उड़े हुए हैं। बहरहाल अभी कोई भी पदाधिकारी वनपाल के संबंध में कुछ बयान देने से बच रहे हैं।

नालंदा में तालाब में डूबकर वृद्ध की मौत

NALANDA : नालंदा जिले के रहुई थानाक्षेत्र के मिल्की गाँव में बुधवार की सुबह तालाब में डूबनें से एक वुजुर्ग की मौत हो गयी। मृतक की पहचान रहुई प्रखंड अंतर्गत मिल्की गाँव निवासी रमोतार यादव के रूप की गयी है। घटना के बारे में परिजन नें बताया कि सुबह मे शौच के लिए तालाब के किनारे गये थें हाथ-पैर धोने के क्रम मेः अचानक वे तलाब मे गिर पड़े और डूबने से उनकी मौत हो गयी।घटना को देख काम कर रहे मजदूरों नें इस आशय की सूचना उनके परिजनों को दी। मृतक के परिजन और ग्रामीणों के सहयोग से वुजुर्ग का शव को तालाब से बाहर निकालकर इसकी सूचना रहुई थाना पुलिस को दी।रहुई थाना पुलिस ने घटनास्थल पर जाकर घटना की जांच-पड़ताल करते हुए शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल बिहारशरीफ भेज दिया है।

नन बैंकिंग धन शक्ति बैंक ने की लाखों की ठगी

NAWADA : नवादा आईटीआई समीप एक नन बैंकिंग धन शक्ति बैंक ने सैंकड़ो लाभुको को लाखों रुपए ठगी करके चंपत हो गया है। आज सैंकड़ो लाभुको ने गोणावा स्थित बैंक पर धावा बोला तथा जिला प्रशासन से न्याय की गुहार लगाई है। बताते चलें लोन दिलाने के नाम पर रौशन सिंह एक फर्जी तरीके से लोन दिलाने हेतु जिला के सुदूरवर्ती इलाकों रोह रजौली कोआकोल वारिस्लीगंज इलाकों में ट्रेंड एजेंटों को रखकर गांव गांव जाकर समूह बनाकर हरेक गरीब महिलाओं से तीन तीन हजार रुपए वसूल कर धन शक्ति बैंक का स्लिप जिसपर बिना खाता खोले लाखों रुपए ठग लिया। ठगी के शिकार महिलाओं काफी गुस्से में आकर बैंक का गेट तोड़ने का अथक परिश्रम की। इसी बीच नगर थाना प्रभारी ने घटना की सूचना मिलते ही बैंक पहुंचकर मामले की तफ्तीश शुरू की। पुलिस व महिलाओं के बीच तीखी झड़प भी हुई। थाना प्रभारी ने महिलाओं से लिखित आवेदन देने तथा बैंक के प्रोपराइटर के विरुद्ध विधि सम्मत कारवाई जानकारी दी

खंती से दिया घटना को अंजाम, पुलिस ने आरोपी को किया गिरफ्तार

आरा में ट्रिपल मर्डर, पति ने पत्नी और दो मासूमों को टुकड़ा-टुकड़ा कर डाला

AGENCY ARA : बुधवार को बिहार के आरा में ट्रिपल मर्डर से पूरा समाज स्तब्ध है। भोजपुर जिले के अजीमाबाद थाना क्षेत्र के मिल्की गांव में एक सनकी पति ने पत्नी समेत दो बच्चों की बेरहमी से हत्या कर दी है। पड़ोसियों के अनुसार सनकी पति ने पत्नी से झगड़ा के बाद गुस्से में आकर खंती से अपनी पत्नी, बेटी और दुधमुंहे बेटे की हत्या कर दी।

हत्या के दौरान सनकी व्यक्ति ने खंती से अपनी पत्नी का सिर धड़ से अलग कर दिया और फिर वहां से फरार हो गया। हालांकि पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपी पति को गिरफ्तार कर लिया है। मृतकों में अजीमाबाद थाना क्षेत्र के मिल्की गांव निवासी लालू यादव की पत्नी सीमा देवी (35), बेटी सौम्या कुमारी (8) और एक दुधमुंहा बेटा दीदवंत कुमार (10 माह) शामिल है। घटना की जानकारी मिलते ही आसपास के लोगों ने स्थानीय पुलिस को घटना की जानकारी दी। घटना की सूचना मिलते ही पीरो एसडीपीओ राहुल कुमार सिंह और अजीमाबाद थानाध्यक्ष पुलिस बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और मामले की छानबीन में जुट गए। पुलिस ने एफएसएल की टीम को भी बुलाया, जिसके बाद एफएसएल की टीम घटनास्थल पहुंच जांच में जुट गई। उसके बाद पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भोजपुर सदर अस्पताल भेज दिया। वहीं पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए हत्यारे पति लालू यादव को खदेड़कर गिरफ्तार कर लिया। लालू यादव ने खंती से मार तीनों की निर्मम हत्या क्यों की, यह फिलहाल स्पष्ट नहीं हो सका है। पुलिस अपने स्तर से मामले की छानबीन कर रही है।

घटनास्थल पर छानबीन करती पुलिस व लोगों की भीड़।

घटना के संबंध में एसडीपीओ राहुल सिंह ने बताया कि सुबह में आरोपी पति का किसी बात को लेकर अपनी पत्नी के साथ विवाद हुआ था। झगड़ा के बाद आक्रोशित होकर लालू यादव ने खंती (धराधार हथियार) से पहले पत्नी की हत्या कर दी। इस दौरान उसने पत्नी का सिर धड़ से अलग कर दिया। उसके बाद बारी-बारी से दोनों बच्चों की भी हत्या कर दी। आसपास के लोगों ने घटना की सूचना पुलिस को दी। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और भागते हुए आरोपी लालू यादव को खदेड़ कर गिरफ्तार कर लिया।

हत्यारोपी लालू थाने से फरार, देखती रह गई पुलिस

ARA : बिहार के आरा में पत्नी और दो बच्चों की बेरहमी से कत्ल करनेवाला लालू यादव गिरफ्तारी के चंद ही घंटों में पुलिस के कब्जे से फरार हो गया। ट्रिपल मर्डर का आरोपित कई पुलिसवालों की मौजूदगी में थाने से फरार हो गया और पुलिस हाथ मलती रह गई। इस मामले में अब वरिष्ठ अधिकारी दोषी पुलिसकर्मियों पर कार्रवाई करने की बात कह रहे हैं। लालू यादव की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है। इस मामले में अब जिले के पुलिस अधीक्षक प्रमोद कुमार यादव ने दोषी पुलिसकर्मियों पर कार्रवाई की है। एसपी ने कहा, ह्यकल अजीमाबाद थाना में पत्नी और बच्चों की हत्या के मामले में मानसिक रूप से विक्षिप्त गिरफ्तार अभियुक्त थाना हजत में बंद था। उसके बाद एक चौकीदार और ढरकके द्वारा हजरत रजिस्टर पर कुछ हस्ताक्षर के लिए निकालने के क्रम में वो लोगों को धक्का देकर हत्या फरार हो गया। उसकी गिरफ्तारी के लिए टीम प्रयासरत है और इसके साथ लापरवाही करनेवाले चौकीदार और पुलिस पदाधिकारी को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। साथ ही फरार आरोपित की गिरफ्तारी के लिए अनुमंडल पुलिस

हत्यारोपी लालू यादव।

पदाधिकारी पीरो के नेतृत्व में टीम का गठन किया गया है। भोजपुर के अजीमाबाद थाना क्षेत्र के मिल्की टोला गांव में मंगलवार की शाम एक सनकी युवक ने अपनी पत्नी और दूधमुंहे सहित दो बच्चों को खंती (वैशाखी) से गला काट कर मार डाला था। पत्नी का सिर धड़ से अलग था और पैर पर भी जगह-जगह काटे जाने के जख्म मिले थे। पुलिस ने इस मामले में आरोपी लालू यादव को गिरफ्तार किया था, लेकिन बताया जा रहा है कि रात करीब 11 बजे लालू यादव थाने से फरार हो गया। वो पुलिस वालों को धक्का देकर थाने से फरार हुआ और पुलिस देखती ही रह गई।

चुनाव से पहले तेजस्वी यादव का बड़ा एलान

राजद की सरकार बनी तो फ्री देंगे 200 यूनिट बिजली

- एनडीए व डबल इंजन की सरकार के बावजूद बिहार में मिल रही महंगी बिजली
- आभार यात्रा के दौरान लोगों को किया संबोधित

AGENCY PATNA : बुधवार को बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री और नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने फ्री बिजली को लेकर बड़ा ऐलान किया है। तेजस्वी यादव ने कहा है कि अगर बिहार में उनकी सरकार बनती है, तो राज्य के प्रत्येक परिवार को 200 यूनिट मुफ्त बिजली दी जाएगी। तेजस्वी यादव ने यह बयान अपनी कार्यकर्ता संवाद यात्रा के दौरान दिया, जिसकी शुरूआत उन्होंने मंगलवार को समस्तीपुर से की।

तेजस्वी अपनी इस यात्रा के तहत बिहार के अलग-अलग इलाकों का दौरा कर रहे है। तेजस्वी यादव ने कहा कि बिहार में एनडीए और डबल इंजन की सरकार के बावजूद देश में सबसे महंगी बिजली यहीं मिलती है। राज्य की जनता महंगे बिजली बिल और स्मार्ट प्रीपेड मीटर की गड़बड़ियों से परेशान है। ऐसे में उनकी (फखऊ) सरकार बनी तो जनता की इन सभी समस्याओं का समाधान हमारी सरकार करेगी और 200 यूनिट बिजली मुफ्त दी जाएगी। हमें बिहार की जनता की चिंता है हम संवाद यात्रा के दौरान कार्यकताओं की बातों को नोट कर रहे हैं। वह नयी सोच के हैं। हम नया बिहार बनायेंगे। इसके लिए

कार्यकताओं का साथ चाहिए। बिहार की तरक्की करेंगे। तेजस्वी यादव ने कार्यकर्ता संवाद कार्यक्रम की शुरूआत समस्तीपुर से की है। पहले चरण में समस्तीपुर के बाद दरभंगा व मधुबनी और मुजफ्फरपुर में कार्यकर्ता संवाद किया जायेगा। इस दौरान 17 सितंबर तक 40 विधानसभाओं का दौरा करेंगे। तेजस्वी यादव ने कहा कि संवाद कार्यक्रम के तहत कार्यकताओं की बात सुननी है। उनसे मिलकर जमीनी समस्याओं को अच्छी तरह से जानना है। कार्यकर्ता पार्टी की रीढ़ होते हैं।

पटना में महिला डॉक्टर से दुर्व्यवहार, एचओडी सस्पेंड

PATNA : आइजीआइएमएस में स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग की दो पीजी छात्राओं के साथ विभागाध्यक्ष ने दुर्व्यवहार किया और उनसे चार सितंबर को उठक-बैठक कराया। साथ ही, एचओडी का व्यवहार उन दोनों के प्रति बेहतर नहीं रहा। इस घटना के बाद दोनों ने विभागाध्यक्ष के खिलाफ वाटसएप के माध्यम से निदेशक एवं चिकित्सा अधीक्षक-वन से शिकायत की और अपना मोबाइल बंद कर लिया। इस शिकायत के बाद आइजीआइएमएस प्रशासन ने बैठक की और आनन-फानन में एनएमसी के गाइडलाइन के ध्यान में रखते हुए छह सितंबर को एक कमेटी का भी गठन कर लिया, जिसमें समिति के अध्यक्ष डॉ ओम कुमार को बनाया गया। वहीं, उसमें अन्य आठ सदस्य थे। जिनके समक्ष सात सितंबर को विभागाध्यक्ष ने उपस्थित होकर अपनी बातों को रखा।

शिक्षा विभाग में बड़ा फेरबदल बदले गए पांच जिलों के डीईओ

AGENCY PATNA : बिहार सरकार में इन दिनों ट्रांसफर पोस्टिंग का दौर चल रहा है। बड़े पैमाने पर आईएएस और आईपीएस अधिकारियों के ट्रांसफर पोस्टिंग के बाद अब शिक्षा विभाग में अधिकारियों की ट्रांसफर पोस्टिंग हुई है।

बुधवार को पांच जिला के जिला कार्यक्रम पदाधिकारी को प्रमोट करते हुए जिला शिक्षा पदाधिकारी बनाया गया है और दूसरे जिले में पोस्टिंग की गई है। इसके अलावा एक कार्यक्रम पदाधिकारी को स्पाउस ग्राउंड के आधार पर ट्रांसफर किया गया है। ट्रांसफर पोस्टिंग को लेकर शिक्षा विभाग की जारी अधिसूचना के मुताबिक पश्चिमी चंपारण के जिला कार्यक्रम पदाधिकारी योगेश कुमार को स्थानांतरित करते हुए अगले

आदेश तक अपने ही वेतनमान में गोपालगंज के जिला शिक्षा पदाधिकारी के पद पर पदस्थापित किया गया है। इसी तरह शिवहर के जिला कार्यक्रम पदाधिकारी नासिर हुसैन को किशनगंज का जिला शिक्षा पदाधिकारी बनाया गया है। कैमूर (भभुआ) के जिला कार्यक्रम पदाधिकारी अमरेंद्र कुमार पांडेय को बक्सर का जिला शिक्षा पदाधिकारी बनाया गया है। इसी तरह रोहतास (सासाराम) के जिला कार्यक्रम पदाधिकारी राघवेंद्र प्रताप सिंह को स्थानांतरित करते हुए सिवान का जिला शिक्षा पदाधिकारी बनाया गया है।

विस चुनाव की तैयारी में जुटी मुकेश सहनी की पार्टी

MOTIHARI : विकासशील इंसान पार्टी (वीआईपी) आईटी सेल पदाधिकारियों की आज एक महत्वपूर्ण बैठक मोतिहारी के वाटिका होटल में आयोजित की गई। इस बैठक में पार्टी के कई बड़े नेताओं ने शिरकत की। बैठक में डिजिटल सेना को सशक्त बनाने के लिए तकनीकी ज्ञान और नई रणनीतियों पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में युवाओं को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से लकी ड्रॉ कूपन के माध्यम से उपहार स्वरूप मोबाइल फोन वितरित किए गए, ताकि वे डिजिटल तकनीक का बेहतर उपयोग कर सकें और अपने कौशल को विकसित कर सकें। बैठक में वक्ताओं ने जोर देकर कहा कि आज सभी राजनीतिक दलों के लिए सोशल मीडिया महत्वपूर्ण हो गया है, ऐसे में हमे भी पार्टी को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने की जरूरत है।

चलती ट्रेन में महिला ने दिया बच्ची को जन्म, डिलीवरी होने तक खड़ी रही ट्रेन

AGENCY PATNA : बिहार के बरौनी-समस्तीपुर रूट पर एक महिला अपने पति के साथ सफर कर रही थी। इस दौरान अचानक से महिला को प्रसव पीड़ा शुरू हुआ। महिला यात्री को दर्द होता देख पति ने ट्रेन में मौजूद कर्मचारियों से मदद मांगी। जिसके बाद रेलवे अधिकारियों और डॉक्टरों की सूझबूझ से समस्तीपुर स्टेशन पर महिला का सुरक्षित प्रसव कराया गया।

प्रसव के बाद महिला को जांच के लिए अस्पतला में भर्ती कराया गया। जहां मां-बेटी दोनों सुरक्षित है। बता दें कि बरौनी-समस्तीपुर रूट पर रजनी देवी नाम की महिला अपने पति के साथ गाड़ी संख्या 15903 डिब्रूगढ़-चंडीगढ़ एक्सप्रेस से मुजफ्फरपुर जा रही थी। ट्रेन जैसे

महिला चिकित्सक की गोद में शिशु।

ही बरौनी स्टेशन से रवाना हुई महिला को अचनाक से प्रसव पीड़ा शुरू हो गई। पत्नी को पीड़ा होते देख पति ने ट्रेन में मौजूद टीटीई को इसकी जानकारी दी। जिसके बाद रेलवे अधिकारियों ने तत्काल डायल 139 के माध्यम से कंट्रोल रूम को सूचना दी। सूचना मिलते ही कंट्रोल रूम ने समस्तीपुर स्टेशन पर मेडिकल टीम को तैयार रहने का निर्देश दिए। जैसे ही ट्रेन समस्तीपुर स्टेशन पहुंची, वहां रेलवे अस्पताल की डॉ। पायल मिश्रा के नेतृत्व में एक मेडिकल टीम तुरंत ट्रेन के डिब्बे में पहुंची और सुरक्षित प्रसव करवाया। जहां महिला ने एक बच्ची को जन्म दिया। वहीं, प्रसव होने तक ट्रेन रुकी रही।

पटना हाईकोर्ट का बड़ा फैसला

पीएम की सभा में बम ब्लास्ट करने वाले को मिली उम्रकैद

AGENCY PATNA : पटना के गांधी मैदान में नरेंद्र मोदी की सभा में बम ब्लास्ट करने वाले सभी चार आरोपियों की सजा को पटना हाईकोर्ट ने उम्र कैद में तब्दील की है। सभी चार आरोपियों को निचली अदालत से फांसी की सजा सुनाई गई थी।

निचली अदालत ने हैदर अली, मोजिबुल्लाह, नोमान और इम्तियाज को सजा-ए-मौत दी गई थी, लेकिन हाईकोर्ट ने उनकी मौत की सजा को उम्रकैद में बदल दिया। साथ ही उमर और अजहरुद्दीन को उम्रकैद की सजा देने के निचली अदालत के फैसले को बरकरार रखा। आरोपियों ने

निचली अदालत के फैसले को पटना हाई कोर्ट में चुनौती दी थी। 2014 के लोकसभा चुनाव से पहले नरेंद्र मोदी पटना में हूंकार रैली को संबोधित करने आए थे, जिसमें उनके संबोधन के दरमियान और उसके पहले बम विस्फोट किए गए थे। गांधी मैदान में बम धमाके की ये घटना 27 अक्टूबर 2013 को हुई थी। उस वक्त लोकसभा चुनाव 2014 के लिए सभी पार्टियां प्रचार में जुटी थीं।

सहरसा में कोसी का कहर जारी कटाव से दर्जनों घर नदी में विलीन

AGENCY SAHARSA : बिहार के सहरसा में हर साल यही होता है जो इस साल हो रहा है। इस साल भी कोसी का रौद्र रूप देखने को मिल रहा है और इसके साथ ही इलाके के लोग अपने हाथों से अपने सपनों के आशियाने को मटियामेट कर सुरक्षित स्थानों की तलाश में पलायन कर रहे हैं।

कटाव के कारण कई घर कोसी की भेंट चढ़ चुके हैं, लोग इसे रोकने की जद्दोजहद कर रहे हैं लेकिन ये नाकाफी साबित हो रहा है तो अभी तक प्रशासन की ओर से कोई झांकने तक नहीं आया है। सहरसा जिले के नवहट्टा प्रखंड अंतर्गत तटबंध के अंदर रसलपुर गांव के मुसहरी टोला के लोग

कोसी नदी से हो रहा कटाव।

अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। कोसी में उफान के कारण मुसहरी टोला के वार्ड नंबर 13 के दो दर्जन से अधिक घर जलसमाधि ले चुके हैं तो दर्जनों घरों पर नष्ट होने का खतरा बरकरार है। रसूलपुर में रहनेवाले लोग अपने आशियाने को बचाने की जी-तोड़ कोशिश कर रहे हैं। पेड़ों को काटकर कोसी की धारा को रोकने की कोशिश की जा रही है लेकिन कटाव इतनी तेजी से हो रहा है कि गांववालों की कोशिश नाकाफी साबित हो रही है।

भ्रष्टाचार का प्रतीक है लालू एंड फैमिली : सम्राट चौधरी

AGENCY KHAGARIA : बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर सियासी दल तैयारियों में जुटे हुए हैं और एक-दूसरे पर बयानों के तीर छोड़ रहे हैं। खगड़िया दौरे पर आए डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी ने लालू एंड फैमिली पर निशाना साधा।

इसके साथ ही उन्होंने नीतीश सरकार की उपलब्धियां भी गिनाईं और कहा कि बिहार की जनता जानती है कि किसे सत्ता में लाना है। डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी ने कहा कि अभी लोकसभा का चुनाव हुआ तो आपने देखा कि बिहार में 30 सीटों पर ठऊअ के प्रत्याशियों की जीत हुई। 75 परसेंट रिजल्ट है और उनको तो 9 सीट मिली हैं। बिहार की जनता

जानती है कि किसको वोट देना है। सम्राट चौधरी ने जहां लालू प्रसाद पर हमला बोला वहीं नीतीश सरकार की उपलब्धियां भी गिनाईं। डिप्टी सीएम ने कहा कि नीतीश कुमारजी के नेतृत्व में काम हो रहा है।सात निश्चय पार्ट-2 चल रहा है। जो योजना यहां पूरी नहीं हो पाई हैं, उसको लेकर हमने जिला प्रशासन से कहा है कि तेजी से इसको आगे बढ़ाएं।

बड़ी संख्या में लोग बनवा रखे हैं फर्जी आधार कार्ड और राशन कार्ड

ई-केवाईसी के बाद हटाए गए 40 लाख नाम

AGENCY PATNA : बिहार में बड़ी संख्या में गरीबों को खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत मुफ्त अनाज दिए जा रहे हैं। अगस्त 2024 में 89 लाख 39832 राशन कार्ड धारी ने खाद्यान्न का लाभ प्राप्त किया है। राज्य के अंदर 1.97 करोड़ परिवारों को राशन कार्ड उपलब्ध कराया गया है जिसमें 22.88 लाख राशन कार्ड अंत्योदय अन्न योजना के तहत दिया गया है। 1.74 करोड़ राशन कार्ड अन्य जरूरतमंदों को दिया गया है।

इस योजना में गड़बड़ी की भी शिकायत मिली है। बिहार में बड़ी संख्या में लोगों ने फर्जी आधार कार्ड और राशन कार्ड बनवा रखे हैं। विभाग ने इसकी जांच के लिए ईकेवाईसी शुरू किया। अबतक 40 लाख लोगों को चिन्हित कर

अधिकारियों के साथ बैठक करतीं खाद्य आपूर्ति मंत्री लेसी सिंह।

उन्हें सूची से बाहर निकाला है। राशन कार्ड को आधार से जोड़ने के बाद गड़बड़ी सामने आई थी, जिसके बाद कार्यवाही की गई। बता दें कि ईकेवाईसी में लाभुक को कार्यालय में जाकर अपने अंगूठे से वेरीफाई कराना पड़ता है। खाद्य आपूर्ति विभाग के सचिव एन सरवणन ने कहा कि 95% राशन कार्ड में अंकित नाम को आधार कार्ड से जोड़ दिया गया है। 61% लोगों का ईकेवाईसी कर दिया गया है, बाकी लोगों का भी केवाईसी जल्द कर दिया जाएगा। ई केवाईसी करने के क्रम में 40 लाख लोगों का नाम राशन कार्ड से हटाया गया है। इसके साथ 55 लाख लोगों का नाम जोड़ा भी गया है। गलत आदमी का नाम लगातार हटाया जा रहा है। खाद्य आपूर्ति मंत्री लेसी सिंह ने कहा कि बिहार में 8 करोड़ 35 लाख लोगों को गुणवत्तापूर्ण अनाज दिया जा रहा है। राज्य के अंदर 50185 जन वितरण प्रणाली की दुकान कार्यरत है। बिहार राशन कार्ड धारी की संख्या एक करोड़ 97 लाख है। प्रत्येक लाभुक को 5 किलोग्राम अनाज निशुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है, जिसमें एक किलोग्राम गेहूं और 4 किलोग्राम चावल दिया जाता है। लाभुक किसी भी दुकान पर राशन ले सकते हैं। किसी एक दुकानदार पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं है।

सीतामढ़ी में पीट-पीट कर एक व्यक्ति की हत्या

SITAMARHI : बिहार के सीतामढ़ी में एक शख्स की पीट पीटकर हत्या कर दी गई। घटना के बाद आक्रोशित लोगों ने शव के साथ सीतामढ़ी बथनाहा मुख्य सड़क को जाम कर दिया। वे पुलिस प्रशासन के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे थे। आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग कर रहे थे। इस दौरान आक्रोशित लोगों ने हंगामा भी किया। इस घटना के बाद मृतक के परिजनों में दहशत का माहौल है। हत्या की घटना के बाद मौके पर पहुंची सहियारा थाना पुलिस लोगों को समझाने बुझाने की कोशिश की। हालांकि, स्थानीय लोग इस हत्या मामले में शामिल आरोपी की गिरफ्तारी की मांग पर अड़े थे। पुलिस के साथ भी नोक झोंक हुई। लोग, घटनास्थल पर वरीय पुलिस पदाधिकारी बुलाने की मांग कर रहे थे। प्रदर्शन के दौरान यातायात व्यवस्था बाधित रहा।

नवगछिया की बेटी अलंकृता साक्षी को गूगल ने दिया 60 लाख का पैकेज

AGENCY BHAGALPUR : बिहार की रहने वाली अलंकृता साक्षी को गुगल ने 60 लाख रुपए का पैकेज दिया है। अलंकृता साक्षी एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर है। गूगल कंपनी में आने से पहले इन्होंने दो साल बेंगलुरु में विप्रो कंपनी में काम किया। इससे पहले एक साल अन्स्र्ट एंड यंग कंपनी में और एक साल सैमसंग हार्मन में काम कर चुकी हैं।

तीन जगह काम करने के बाद अलंकृता साक्षी का चयन गुगल में हुआ। इस सफलता से परिवार में खुशी का माहौल है। बता दें कि अलंकृता साक्षी मूल रूप से नवगछिया के सिमरा गांव की रहने वाली है। इनकी शादी भागलपुर जिले के शौल थाना क्षेत्र के पोठिया गांव में इनकी शादी मनीष कुमार से हुई है। मनीष कुमार भी सॉफ्टवेयर

हजारीबाग से किया बीटेक

अलंकृता साक्षी के ससुर ने बताया कि उनका बचपन झारखंड के कोडरमा में बीता और वहीं से उनकी पढ़ाई लिखाई हुई। उन्होंने कोडरमा से 10वीं, जवाहर नवोदय विद्यालय कोडरमा से 12वीं और फिर हजारीबाग से बीटेक किया। अलंकृता दो बहनें और एक भाई है।

इंजीनियर हैं और दोनों बेंगलुरु में एक ही कंपनी में काम करते हैं। नवगछिया के सिमरा गांव के शंकर मिश्रा की पुत्री हैं। इनके ससुर राजीव नयन चौधरी नवगछिया अनुमंडल कार्यालय में प्रधान लिपिक के पद पर कार्यरत हैं। राजीव नयन चौधरी ने बताया कि उनके बेटे मनीष कुमार की शादी 8 दिसंबर 2023 को हुई थी। अलंकृता का परिवार अभी झारखंड के कोडरमा जिले के झुमरी तलैया में रह रहा है। पिता कोडरमा में प्राइवेट नौकरी करते हैं। मां रेखा मिश्रा निजी शिक्षिका हैं। दोनों परिवारों को इस बात की अपार खुशी है कि गूगल जैसी विश्व प्रसिद्ध कंपनी से 60 लाख रुपये के पैकेज पर चयन कर काम करने का अवसर दिया है। यह अत्यंत गर्व और हर्ष की बात है। अलंकृता साक्षी उन सभी लड़कियों के लिए प्रेरणा स्रोत है जो आत्मनिर्भर बनकर परिवार से लेकर देश का नाम रोशन करना चाहती है।

पत्नी और उसके प्रेमी पर कार चढ़ाकर मारने की कोशिश

1 साल से परेशान कर रहा था, 9 बार शिकायत फिर भी चुप रही पुलिस

लखनऊ । रहीमाबाद में कार पर पिकअप चढाकर 7 लोगों को कुचलने की कोशिश की गई थी। घायल महिला का कहना है कि उसके पहले पति ने ही उसे और उसके लोगों को कार चढ़ाकर मारने की कोशिश की थी। महिला का कहना है कि वो एक साल से महिला का पीछा कर रहा था। रास्ते में रोककर परेशान करता था। थाने में कई बार शिकायत के बाद भी कोई कार्रवाई नहीं की गई। आखिरकार आरोपी ने जान लेने की प्लानिंग कर डाली। फिर भी पुलिस उसे बचाने की कोशिश कर रही है। महिला का कहना है कि तीन शिकायतें आईजीआरएस पोर्टल से की, तब जाकर मामूली धाराओं में केस दर्ज हुई। पुलिस की इस लापरवाही का ही नतीजा है कि सरफिरे का हौसला इतना बढ़ा कि उसने इस घटना को अंजाम दिया। पुलिस की लापरवाही यहां नहीं रुकी, उसने इस घटना को भी एक्सीडेंट बता डाला और आरोपी को बचाने की कोशिश की। पर मामले ने तूल पकड़ा तो आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया। महिला का आरोप है कि रहीमाबाद के अटेर गांव निवासी डाला चालक विनय कुमार द्विवेदी एक साल से उसको परेशान कर रहा था। रास्ते में पीछा कर अश्लील कमेंट करता था। महिला का आरोप है कि वो इतना डर गई थी कि घर से नहीं निकल पाती थी। सोमवार रात को भी जब महिला अपने भाई और दोस्त के साथ जा रही थी तो आरोपी ने उसका पीछा किया। जिस कार से महिला और उसके साथ के लोग जा रहे थे, उस कार में अपनी डाला से जोरदार टक्कर मारा। कार पर डाला चढ़ाने और सभी को कुचलने की कोशिश की। जिसमें 8 लोग घायल हो गए। पीड़िता का आरोप है कि पुलिस ने समय से कार्रवाई की होती तो वो कार चढ़ाने की हिम्मत न कर पाता। महिला का कहना है कि आरोपी उसे बदनाम करने की कोशिश लगातार कर रहा था। बार-बार कहता रहा कि तुम्हें बर्बाद कर दूंगा। महिला ने पुलिस को बताया कि अगर उसके साथ कोई वारदात होती है तो उसका जिम्मेदार विनय कुमार द्विवेदी होगा। महिला का कहना है कि बार बार शिकायत के बाद भी पुलिस ने कोई एक्शन नहीं लिया। गाली गलौज और धमकी मामले में पुलिस ने विनय और उसके साथी दीपू को 29 मई को केस दर्ज किया था। लेकिन गिरफ्तारी नहीं की गई। महिला का कहना है कि 26 जुलाई और 7 अगस्त को रहीमाबाद में फिर प्रार्थना पत्र दिया गया। कोई कार्रवाई न होने पर 9 अगस्त को आईजीआरएस पर शिकायत की। पीड़ित परिवार का आरोप है कि पुलिस ने पहले मामूली एक्सीडेंट बता कर रेलवे की तरफ से एफआईआर दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। मामला तूल पकड़ने पर रहीमाबाद एसओ अनुभव सिंह ने हत्या के प्रयास में आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। रहीमाबाद के जुगराज के रहने वाले महेंद्र सिंह अपनी पत्नी सोनी सिंह और दोस्त मोनू सिंह के साथ कार से घर जा रहे थे। रहीमाबाद क्रासिंग बंद होने के कारण रुक गए। तभी अनीपुर गांव का रहने वाला विनय अपनी पिकअप से तेज रफ्तार में आया और टक्कर मार दी। पुलिस ने बताया, विनय की पत्नी रही सोनी अब महेंद्र के पास चली गई थी। इससे विनय महेंद्र से दुश्मनी रखने लगा था। जान से मारने की नीयत ने उसने कार में टक्कर मारी। विनय पूरी प्लानिंग के साथ पूरे परिवार को खत्म करना चाहता था। एक महीने पहले विनय ने महेंद्र पर गोली मारने का आरोप लगाया था। पुलिस ने छानबीन की तो पता चला कि विनय ने अपने हाथ पर खुद ही गोली मारी थी। महेंद्र को फंसाने की कोशिश की थी। पुलिस को गुमराह करने के कारण जेल भी भेजा गया था।

संक्षिप्त डायरी

गर्मी से राहत के लिए समाजसेवी ओमप्रकाश जायसवाल ने विद्यालयों को भेंट किये पंखे

कसया, कुशीनगर। भीषण गर्मी और उमस को देखते हुए भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता और समाजसेवी ओमप्रकाश जायसवाल ने नगरपालिका परिषद कुशीनगर अन्तर्गत विभिन्न विद्यालयों में पंखे वितरित किये। श्री जायसवाल ने संविलियन विद्यालय इनरहा नरकटिया बुजुर्ग की प्रधानाध्यापिका नीलम पाण्डेय व बच्चों को तीन पंखे भेंट किये। आयोजित कार्यक्रम में समाजसेवी व भाजपा मंडल उपाध्यक्ष श्री जायसवाल ने कहा कि शिक्षा से उन्नति के द्वार खुलते हैं। नैतिक और संस्कार युक्त शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाय। जिससे हमारी परंपरा, संस्कृति और मूल्य सुरक्षित होंगे। आगे कहा कि तमाम योजनाओं के माध्यम से सरकार देश के नौनिहालों को भविष्य का एक अच्छा नागरिक बनाने के लिए कार्य कर रही है। अध्यापक व अभिभावक बच्चों के विद्यालय में नियमित उपस्थिति पर ध्यान दें। इस अवसर पर सहायक अध्यापक अशोक दुबे, सहायक अध्यापिका नीलम पाण्डेय, अर्चना, निक्की ने अतिथियों का स्वागत किया। इसी क्रम में प्राथमिक विद्यालय विशुनपुरा में श्री जायसवाल ने प्रधानाध्यापिका प्रमिला सिंह, सहायक अध्यापिका सुनीता गौतम, शिक्षामित्र दिनेश मिश्रा, लक्ष्मी चौरसिया व बच्चों को तीन पंखा भेंट किया। कसया नगर के रामकोला रोड स्थित सीडीएम बुद्ध विद्या बिहार में श्री जायसवाल ने तीन पंखा भेंट किया। यहां प्रधानाध्यापक/पत्रकार वीरेन्द्र सिंह ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मृदुल स्वभाव के मिलनसार श्री जायसवाल द्वारा किये गए सहयोग से बच्चों को गर्मी से राहत मिलेगी और वे अपनी पढ़ाई ठीक से कर पाएंगे। इस अवसर पर अधिवक्ता गौरव सिंह, पप्पू सिंह, गोपाल राव, दिनेश जायसवाल, पवन जायसवाल पूर्व सभासद,आराधना सिंह रिंकी मद्धेशिया, विशाल आदि शिक्षक और छात्र - छत्राएं मौजूद रहे।

उपमुख्यमंत्री बोलेः कांग्रेस को कभी माफ नहीं करेगी देश की जनता

शाहजहांपुर । उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने बुधवार को भावलखेड़ा की चक विटारा सीएचसी का निरीक्षण किया। इसके बाद पत्रकार वार्ता में उन्होंने कांग्रेस पर निशाना साधा। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने अमेरिका में चीन की तारीफ की, इसको लेकर पूछे गए सवाल पर उपमुख्यमंत्री ने कहा कि राहुल गांधी की यह पुरानी आदत है। जब भी विदेश जाते हैं तो देश के खिलाफ बोलते हैं। देश और प्रदेश की जनता कांग्रेस को कभी माफ नहीं करेगी। उपमुख्यमंत्री ने बताया कि जिले में स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक करने के बाद संचारी रोगों से निपटने और मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं देने के लिए निर्देशित किया गया है। इससे पहले उन्होंने सीएचसी में मरीजों से मिलकर स्वास्थ्य सेवाओं के बारे में जानकारी ली। उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक बुधवार को विनोबा भावे की जयंती के मौके पर यहां पहुंचे थे। उन्होंने विनोबा भावे आश्रम में एंबुलेंस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। इस एंबुलेंस को आसपास के ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले लोगों के लिए राज्यपाल आनंदी बेन द्वारा आश्रम को प्रदान किया गया है। विनोबा भावे आश्रम में आयोजित रामहरि समागम में उपमुख्यमंत्री ने कहा कि भारत में अनेक ऐसे संत हुए हैं, जिन्होंने साधारण वस्त्र धारण कर अपना पूरा जीवन भारत माता के चरणों में न्योछावर कर दिया। ऐसे ही संत आचार्य विनोबा भावे थे, जो महात्मा गांधी के साथ आजादी की लड़ाई में कंधे से कंधे मिलाकर चले थे। ब्रजेश पाठक ने कहा कि आजादी के बाद विनोबा भावे को चिंता थी कि निर्धन भूमिहीनों का परिवार कैसे पालन होगा। तब उन्होंने पदयात्रा निकाल कर जमींदारों और राजाओं से भू-दान करने का आह्वान किया। उनके आंदोलन से जुड़कर बड़ी संख्या में लोगों ने जमीन को दान कर दिया।

युवती से दुष्कर्म, धर्मांतरण करवाकर किया निकाह, जबरन पढ़वाता था नमाज व कलमा, खिलाता था मीट

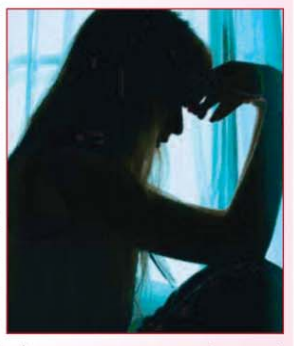

लखनऊ। गैर समुदाय के युवक ने नाम बदलकर दलित युवती से दोस्ती की। फिर घर पर बुलाकर चाय में नशीला पदार्थ पिलाकर उसके साथ दुष्कर्म किया। गर्भपात भी करा दिया। धर्मांतरण करवा पीड़ित के साथ निकाह कर लिया। आरोपी के परिजनों ने भी युवती को प्रताड़ित किया। पीड़िता ने सोमवार को सुशांत गोल्फ सिटी थाने में केस दर्ज कराया है। गाजियाबाद के बंघल निवासी युवती वर्ष 2009 में फैशन डिजाइनिंग का कोर्स करने लखनऊ आई थी।

अंसल इलाके में अपने रिश्तेदार के घर पर उसकी मुलाकात सुशांत गोल्फ सिटी अवध बिनार निवासी आरिफ हुसैन से हुई। आरिफ ने अपना नाम सोनू सिंह और खुद को हाउसिंग कंपनी का निदेशक बताया। आरोपी कंपनी में नौकरी दिलाने के बहाने उससे मिलने लगा। एक दिन अपने किराये के मकान पर बुलाया और नशीली चाय पिलाकर दुष्कर्म किया। अश्लील वीडियो बनाकर उसका शोषण करने लगा। युवती का आरोप है कि गर्भपात कराने के बाद आरोपी ने धर्मांतरण कराकर उनका नाम साहिबा रख दिया। आरोपी ने मां, बहन, दो भाइयों और दोस्तों की मौजूदगी में काजी को बुलाकर निकाह कर लिया। युवती का आरोप है कि आरोपी जबरन उसको नमाज व कलमा पढ़वाता था और मांस भी खिलाता था। विरोध पर आरोपी व उसके परिजन मारपीट करते थे। पीड़िता के अनुसार, पूरे घटनाक्रम की खबर का पता चलने पर उनके पिता को दिल का दौरा पड़ा गया। इंस्पेक्टर अंजनी कुमार मिश्रा ने बताया कि आरिफ, उसके दो भाई, बहन, पिता और मां पर केस दर्ज किया गया है। पीड़िता ने पुलिस को बताया कि आरिफ लगातार उस पर दोस्तों के साथ संबंध बनाने के लिए दबाव बनाता था। कमाई के लिए देह व्यापार में धकेलना चाहता था। इन्कार पर आरोपी और उसके परिजन मारपीट करते थे। आरोप है कि इस दौरान आरोपी के बड़े भाई ने उसके साथ दुष्कर्म भी किया।

जरिया पुलिस ने अवैध तमंचे के साथ अभियुक्त को किया गिरफ्तार

हमीरपुर । उत्तर प्रदेश के हमीरपुर की जरिया पुलिस ने थाना क्षेत्र के गुहांड के राजेन्द्र नगर निवासी 26 वर्षीय अभियुक्त जयसिंह पुत्र स्वामीदीन को 1अदद अवैध तमंचा 315 बोर व एक जिंदा कारतूस के साथ गिरफ्तार करने में कामयाबी हासिल की है। इस मामले में जरिया पुलिस ने अभियुक्त के खिलाफ मु०अ०सं० 232/2024 धारा 3/25 आर्म्स एक्ट के तहत दर्ज करके अभियुक्त को अदालत में पेश किया है। जरिया थानाध्यक्ष भरत कुमार ने बताया कि अभियुक्त अपराधी प्रवृत्ति का व्यक्ति है, अभियुक्त के खिलाफ राठ थाने में जुआं अधिनियम के तहत जबकि जरिया में आर्मस एक्ट के तहत एक एक मामला पहले से दर्ज है। अभियुक्त को गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में खासतौर से एस आई बीरेन्द्र प्रसाद, कांस्टेबल आशीष रजक सहित कांस्टेबल धीरेन्द्र सिंह मौजूद रहे।

दो पशु तस्कर घायल, 6 राशि गोवंशीय पशु बरामद

कुशीनगर। पुलिस अधीक्षक कुशीनगर संतोष कुमार मिश्रा के निर्देशन व अपर पुलिस अधीक्षक कुशीनगर के पर्यवेक्षण व क्षेत्राधिकारी तमकुहीराज जितेन्द्र सिंह कालरा के नेतृत्व में गोवंशी पशुओं की तस्करी के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में 10/11 सितम्बर को थाना तमकुहीराज, थाना तरयासुजान व साईबर थाने की संयुक्त टीम द्वारा गाजीपुर बैरियर के पास घेराबंदी कर चेकिंग के दौरान एक पिकप वाहन आते दिखाई दिया। जिसको पुलिस टीम द्वारा रोकने का प्रयास किया गया तो वाहन में सवार व्यक्ति कुछ दुर पहले रुककर लक्ष्य साधकर पुलिस टीम पर जान मारने की नियत से फायर किया गया। जवाबी प्रतिरक्षा में पुलिस टीम द्वारा फायरिंग की गयी जिसमें वे घायल हो गये जिनकी पहचान लालमोहम्मद अंसारी उर्फ लालू अंसारी पुत्र अब्दुल करीम अंसारी निवासी सरया खुर्द थाना तमकुहीराज जनपद कुशीनगर, असगर अली पुत्र वकील मिया निवासी सरया खुर्द थाना तमकुहीराज जनपद कुशीनगर के रुप में हुई है। उनके कब्जे से एक अदद पिकप वाहन मय 06 राशि गोवंशी पशु, 02 अदद नाजायज तंमचा व 06 अदद जिन्दा कारतूस व 04 अदद खोखा कारतूस बरामद किया गया। घायल/गिरफ्तार अभियुक्तों को दवा ईलाज हेतु पुलिस अभिरक्षा में जिला अस्पताल भेजा गया है। बरामदगी/गिरफ्तारी के अधार थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0 289/2024 धारा 109/61(2) बीएनएस व 3/5ए/5बी/8 गोवध नि0 अधि0 व 11 पशु क्रुरता नि0 अधि0 व 3/4/25/27 आर्म्स एक्ट में अभियोग पंजीकृत कर अग्रिम विधिक कार्यवाही की जा रही है । बरामदगी/गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीम में प्र0नि0 तमकुहीराज अमित कुमार शर्मा, प्र0नि0 साइबर थाना मनोज कुमार पन्त, प्र0नि0 तरयासुजान राजप्रकाश सिंह, थानाध्यक्ष सेवरही श्रीप्रकाश राय, उ0नि0 राकेश कुमार यादव, उ0नि0 राजकपूर, उ0नि0 अरसलान अहमद, उ0नि0 नवनीत राय, उ0नि0 संदीप सिह, हे0का0 कमलेश कुमार, हे0का0 लालमोहन चौहान, का0 सचिन विश्वकर्मा, का0 रजनीकान्त, का0 रविकान्त शामिल रहे।

प्रधानमंत्री के जन्मदिन पर सदस्यता अभियान को बनाएं विशेषः सहजानन्द राय

कुशीनगर। भारतीय जनता पार्टी के क्षेत्रीय अध्यक्ष सहजानन्द राय ने राष्ट्रीय सदस्यता अभियान में क्रम में गोरखपुर क्षेत्र में कुशीनगर के प्रथम स्थान आने पर पार्टीजनों की सराहना करते हुऐ कहा कि क्षेत्र को देश में प्रथम स्थान दिलाने के लिए आप सभी पूरी ऊर्जा के साथ लग जाय। उन्होंने कहा कि 17 सितंबर को हम सभी के आराध्य देवशिल्पी भगवान विश्वकर्मा जी की जयंती है जिसे हम सभी पूरी श्रद्धा के साथ मनाते हैं।

सौभाग्य से इसी दिन यशस्वी प्रधानमंत्री जी का जन्मदिवस है अतः हम सभी के लिए यह दुगुनी खुशी का अवसर है। अतः प्रधानमंत्री जी के जन्मदिवस को लेकर सदस्यता के विशेष अभियान में गोरखपुर क्षेत्र को प्रथम स्थान दिलाना हम सभी की ओर से पार्टी की बड़ी सेवा एवं उपहार होगा। श्री राय भाजपा के मंडल अध्यक्षगण एवं पदाधिकारियों के साथ नगरपालिका अध्यक्ष के आवास पर बैठक के दौरान कही।

उन्होंने कहा कि देव सरीखे कार्यकताओं के बल पर राष्ट्रवादी सोच को लेकर भाजपा निरन्तर लोकतन्त्र को मजबूत बना रही है वही यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की केंद्र में तीसरी बार एवं प्रदेश में दूसरी बार योगी जी की सरकार बनी है। उन्होंने लक्ष्य के पार जाकर इतिहास बनाने का आह्वान करते हुए कहा कि कार्यकताओं का हित सर्वोपरि है इससे कोई समझौता नही होगा। पूर्व सांसद जय प्रकाश निषाद ने अपने विचार को रखते हुये कहा कि लक्ष्य को लेकर हम सभी पूरी ऊर्जा से कार्य करें।अध्यक्षता करते हुए जिलाध्यक्ष दुर्गेश राय ने कहा सदस्यता अभियान को हम सभी मिलजुल कर सफल व ऐतिहासिक बनाएंगे। यहां क्षेत्रीय अध्यक्ष एवं सभी पदाधिकारियों का स्वागत नगरपालिका अध्यक्ष किरन राकेश जायसवाल ने किया। राकेश जायसवाल ने यह भरोसा दिलाया कि इस अभियान को निर्देश के अनुसार सफल बनाया जायेगा। इस अवसर पर दिवाकर मणि, मंडल अध्यक्ष अनिल प्रताप राव, किन्नरेश चौबे,विनोद गुप्ता, बच्चा सिंह, रमायन कुशवाहा, वरुण राय, श्याम चौहान, रविशंकर सिंह, पूर्व प्रधान मनोज जायसवाल, संजय जायसवाल,दिनेश जायसवाल, प्रेम जायसवाल, राहुल सोनी, सोनू चौहान, कृष्णा जायसवाल, कन्हैया जायसवाल, हरिंदर जायसवाल, अशोक , उमेश जायसवाल आदि मौजूद रहे।

गीताप्रेस की पवित्रता पर साइबर हमले का संकट

गोरखपुर। गीताप्रेस की प्रतिष्ठा पर साइबर जालसाजों ने हमला किया है। हाल ही में, इन शरारती तत्वों ने भगवान श्रीकृष्ण की गोपियों के साथ एक आपत्तिजनक फोटो को गीताप्रेस से प्रकाशित बताकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। इस फोटो के साथ जन्माष्टमी की शुभकामनाएं भी भेजी गईं, जो पूरी तरह से गलत और भ्रामक है, क्योंकि यह फोटो गीताप्रेस के किसी भी एलबम में मौजूद नहीं है। दरअसल, गीताप्रेस ने इस मामले की गंभीरता को देखते हुए एक्स (पूर्व में ट्विटर) को एक आधिकारिक पत्र भेजा है, जिसमें उन्होंने इस आपत्तिजनक फोटो को तुरंत हटाने की मांग की है। प्रेस प्रबंधन का कहना है कि इस प्रकार की जालसाजी से उनकी प्रतिष्ठा को गंभीर नुकसान पहुँच रहा है और यह प्रेस की पवित्रता को भद्दा कर रही है। इस घटना की जानकारी पांच सचेत पाठकों ने ई-मेल के माध्यम से गीताप्रेस को दी है, जो इस तरह की शरारती गतिविधियों के खिलाफ हैं।

गोरखपुर के मदरसा में 12 साल की बच्ची से रेप

गोरखपुर । उरुवा थाना क्षेत्र के मंझरिया गांव में दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है, जहां एक 12 साल की बच्ची के साथ मदरसे के मौलवी ने दुष्कर्म किया। घटना के बाद, जब ग्रामीणों को इसका पता चला, तो उन्होंने मौलवी को पीटने के बाद पुलिस के हवाले कर दिया। पीड़ित बच्ची की मां की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है, और बच्ची का मेडिकल परीक्षण कराया जा रहा है। घटना का पूरा विवरण बताते हुए ग्रामीणों ने कहा कि बच्ची स्थानीय प्राथमिक विद्यालय में कक्षा 5 की स्टूडेंट है। रोज की तरह, सोमवार की सुबह भी वह स्कूल जाने से पहले मदरसे में ट्यूशन पढ़ने गई थी। करीब एक घंटे बाद, मौलवी ने अन्य बच्चों को घर भेज दिया, लेकिन बच्ची को अपने पास रोक लिया। कुछ देर बाद, गांव के कुछ बच्चे मदरसे के पास लगे हैंडपंप पर पानी पीने के लिए पहुंचे, जहां उन्होंने मौलवी को बच्ची के साथ गलत हरकत करते हुए देख लिया। बच्चों के शोर मचाने पर ग्रामीण और बच्ची के परिजन मौके पर पहुंचे, और मौलवी की शर्मनाक करतूत का पदार्फाश हुआ। गुस्साए ग्रामीणों ने मौलवी रहमत अली, जो खलीलाबाद के विधियानी गांव का निवासी है, को पीटकर पुलिस के हवाले कर दिया। आरोपी मौलवी हाल ही में, एक महीने पहले ही मंझरिया स्थित इस मदरसे में नियुक्त हुआ था। इससे पहले वह बेलघाट थाना क्षेत्र के एक अन्य मदरसे में पढ़ाता था। घटना की गंभीरता को देखते हुए, एसपी दक्षिणी जितेंद्र कुमार और क्षेत्राधिकारी गोला रत्नेश्वर सिंह फोरेंसिक टीम के साथ घटना स्थल पर पहुंचे और गहन जांच शुरू की।

7 करोड़ से बनेगी इंट्रीग्रेटेड गारबेज सिटी

गोरखपुर । सुथनी में स्वच्छता की एक नई मिसाल कायम करने की तैयारी जोरों पर है। 40 एकड़ में प्रस्तावित इंट्रीग्रेटेड गारबेज सिटी के तहत, 7 करोड़ रुपए की लागत से एक हाई-टेक डोमेस्टिक हेजर्ड वेस्ट ट्रीटमेंट प्लांट लगाने का फैसला किया गया है। यह प्लांट प्लाज्मा तकनीक पर आधारित होगा और इसकी क्षमता प्रतिदिन 5 टन कचरे के निष्पादन की होगी। इसके निर्माण के लिए महाराष्ट्र की वीडीके फैसिलिटी सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड को चुना गया है। गोरखपुर नगर निगम की इस पहल का उद्देश्य न सिर्फ स्वच्छता को बढ़ावा देना है, बल्कि खतरनाक घरेलू कचरे का सुरक्षित निपटान करना भी है। नगर आयुक्त गौरव सिंह सोगरवाल ने मंगलवार को वीडीके कंपनी की डिप्टी सीईओ नीतिका पांडे को वर्क ऑर्डर सौंपते हुए मार्च 2025 तक प्लांट का निर्माण पूरा करने का निर्देश दिया। इस मौके पर मुख्य अभियंता संजय चौहान भी मौजूद रहे।

इस प्लांट का उद्देश्य खतरनाक घरेलू कचरे जैसे पेंट, थिनर, कीटनाशक, बैटरी, मोटर ऑयल आदि का सुरक्षित निपटान करना है। इनका अनुचित निपटान पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बनता है। इस प्लांट के जरिए नगर निगम लैंडफिल साइट्स, भूजल और नदी-तालाबों को प्रदूषण से बचाने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाने जा रहा है। परियोजना का शिलान्यास मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ करेंगे, और 6 महीनों के भीतर इस प्लांट का निर्माण कार्य पूरा कर लिया जाएगा। इस प्लांट से गोरखपुर को गारबेज फ्री सिटी का दर्जा मिलने की उम्मीद है, जिससे यह स्वच्छ भारत मिशन के तहत एक प्रमुख शहर बन सकेगा। हेरिटेज फाउंडेशन के मनीष चौबे का कहना है कि खतरनाक उत्पादों के लेबल को ध्यान से पढ़ने और सही तरीके से निपटान करने की जरूरत है। ऐसे उत्पाद जो ज्वलनशील या विषाक्त हों, उन्हें सावधानी से संभालें और बच्चों की पहुंच से दूर रखें। इस परियोजना से गोरखपुर शहर को स्वच्छता के क्षेत्र में एक नई पहचान मिलेगी।

नैनीताल जा रहे हैं तो ये 5 जगह देखना न भूलें

बर्फ से ढके पहाड़ों के बीच झीलों से घिरा नैनीताल उत्तराखंड राज्य का प्रसिद्ध हनीमून स्पॉट है। नैनी शब्द का अर्थ है आंखें और 'ताल' का अर्थ है झील। यहां आकर आपको शांत और प्रकृति के पास होने जैसा महसूस होगा। यहां चारों ओर खूबसूरती बिखरी है। सैर-सपाटे के लिए दर्जनों जगहें हैं, जहां जाकर पर्यटक हैरान रह जाते हैं और प्राकृतिक नजारों को बस देखते ही रहते हैं। आओ जानते हैं यहां के प्रमुख स्पॉट।

नैनीताल घूमने का सबसे अच्छा समय मार्च से जून

1. नैनिताल नैना झील:
यहां कि प्रसिद्ध झील नैना झील है जिसे ताल भी कहा जाता है। ताल में बत्तखों के झुंड, रंग-बिरंगी नावें और ऊपर से बहती ठंडी हवा यहां एक अदभुत नजारा पेश करते हैं। ताल का पानी गर्मियों में हरा, बरसात में मटमैला और सर्दियों में हल्का नीला दिखाई देता है। एक समय में नैनीताल जिले में 60 से ज्यादा झीलें हुआ करती थीं।
2. नैना देवी मंदिर :
इसे नैनीताल इसलिए भी कहा जाता है क्योंकि यहां पर ऊंचे पहाड़ पर नैना देवी का एक मंदिर है।
3. हिल स्टेशन :
बर्फ से ढ़के पहाड़ों के बीच झीलों से घिरा नैनीताल उत्तराखंड राज्य का प्रसिद्ध हनीमून स्पॉट है। यहां टॉप पर नैना चोटी, स्नो व्यू और टिफिन टॉप है। स्नो व्यूप पर आप रोपवे से जा सकते हैं।
4. प्राणी उद्यान नैनिताल :
पंडित जीबी पंत प्राणी उद्यान यहां के प्रसिद्द स्थल है। गोविंद बल्लभ पंत उच्च स्थलीय प्राणी उद्यान नैनीताल बस स्टेशन से लगभग 1 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।
5. हनुमानगढ़ी नैनिताल :
यह यहां का धार्मिक स्थल है जो मुख्य शहर से करीब 4 किलोमीटर दूर पहाड़ी पर है।
इसके अलावा गर्वनर हाउस है और शॉपिंग के लिए आप मार्केट मॉलरोड जा सकते हैं।

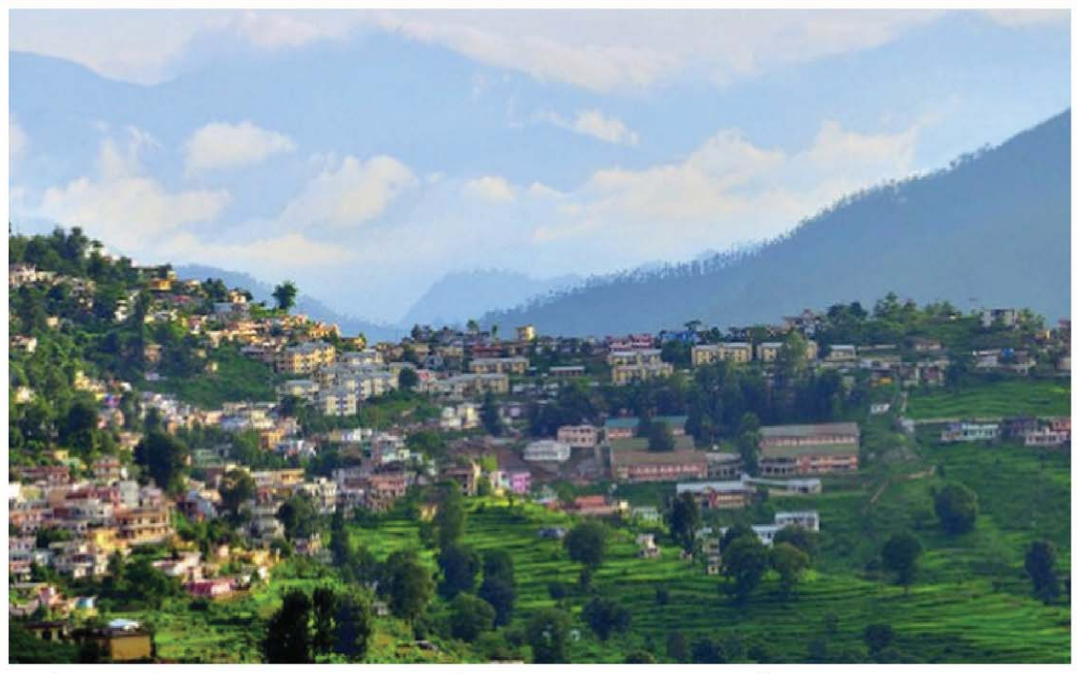

अल्मोड़ा एक बहुत ही सुंदर नगर

अल्मोड़ा भारत के उत्तराखंड राज्य का एक बहुत ही सुंदर नगर है। इसके पूर्व में पिथौरागढ़ व चम्पावत, पश्चिम में पौड़ी, उत्तर में बागेश्वर, दक्षिण में नैनीताल स्थित है। अल्मोड़ा में मनोरम पहाड़ी और घाटियां हैं जो आपका दिल मोह लेगी। यदि आप यहां जाने का प्लान कर रहे हैं तो जान लें इस क्षेत्र के बारे में दिलचस्प जानकारी।

अल्मोड़ा हिल स्टेशन

1. अल्मोड़ा में कई मंदिर है। दूनागिरी मंदिर, कसार देवी मंदिर, चितई गोलू मंदिर, नंदादेवी मंदिर, कटारमल सूर्य मंदिर, जागेश्वर धाम मंदिर आदि कई बहुत ही सुंदर और चैतन्य मंदिर है। यहां अंग्रेजों के काल का बोडेन मेमोरियल मेथोडिस्ट चर्च भी है।
2. अल्मोड़ा में घूमने लायक जगह जीरो पाइंट बहुत ही अद्भुत है जो बिनसर अभ्यारण्य में बहुत ऊंचाई पर स्थित है। यहां से आसमान को देखना बहुत ही रोमांचित कर देगा साथ ही यहां से केदारनाथ और नंदादेवी की चोटी को देखना तो आपके आश्चर्य और रोमांच को और भी ज्यादा बढ़ा देगा। यहां से हिमालय की वादियों का दृश्य आपको स्वर्ग में होने का अहसास देगा।
3. अल्मोड़ा से 30 किलोमीटर दूर जलना एक छोटासा पहाड़ी गांव है जहां से आप प्रकृति और एकांत का आदंद ले सकते हैं। यहां पर 480 से अधिक पक्षियों की प्रजातियां, वनस्पतियों की एक विस्तृत श्रृंखला और तितली संग्रह से भरे जंगल पाए जाते हैं।
4. अल्मोड़ा से 3 किमी दूर स्थित, ब्राइट एंड कॉर्नर पाइंट से आप सूर्यास्त और सूर्योदय के लुभावने दृश्य देखकर रोमांचित हो उठेंगे। यह एक विशेष बिंदु है जहां से हिमालय के अविश्वसनीय दृश्य देख सकते हैं। हिमालयी चोटियों में जैसे त्रिशूल I, त्रिशूल II, त्रिशूल III, नंदादेवी, नंदकोट, पंचाचूली इत्यादि को देख सकते हैं।
5. अल्मोड़ा कुमाऊं पर्वत श्रृंखला में स्थित है और यह माउंटेन बाइकिंग के लिए भारत में सबसे लोकप्रिय स्थलों में से एक है। और यदि यदि आप रिवर राफ्टिंग का आनंद लेना चाहते हैं तो काली शारदा नदी जाना होगा।

अल्मोड़ा जाना चाहते हैं तो पहले इसे पढ़ें

6. अल्मोड़ा का बिनसर अभ्यारण्य भी बहुत ही रोमांच से भरा है। अल्मोड़ा हिल स्टेशन से लगभग 33 किलोमीटर की दूरी पर स्थित बिनसर पर्यटन स्थल एक छोटा सा गांव हैं। जोकि देवदार के पेड़ों के हरे-भरे जंगल, घास के मैदान और खूबसूरत मंदिरों के लिए जाना जाता हैं।
7. अल्मोड़ा का डियर पार्क अल्मोड़ा से लगभग 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं। डियर पार्क प्रकृति और वन्यजीव प्रेमियों के लिए शानदार डेस्टिनेशन है। डियर पार्क का सबसे प्रमुख आकर्षण देवदार के हरे-भरे वृक्ष है और उनके बीच घुमते हुए हिरण, तेंदुआ और काले भालू जैसे जानवर इसकी खूबसूरती को देखने लायक बना देते हैं।
8. अल्मोड़ा भारत में कुछ बेहतरीन हस्तशिल्प और सजावटी वस्तुओं के संग्रह के लिए प्रसिद्ध है। यहां पर द्वाराहाट, रानीखेत, चौखुटिया और शीतलाखेत भी घूमने लायक बहुत ही सुंदर स्थान हैं।
9. अल्मोड़ा से करीब 53 किलोमीटर उत्तर दिशा में स्थित है कौसानी नामक हिल स्टेशन जो प्राकृतिक छटा से भरपूर है। यहां देवदार के सघन वन हैं जिनके एक ओर सोमेश्वर घाटी और दूसरी ओर गरुड़ व बैजनाथ घाटी स्थित है।
10. अल्मोड़ा तो किसी भी मौसम में जा सकते हैं लेकिन सबसे अच्छा समय मार्च से अप्रैल का महीना होता है क्योंकि यहां पर शांत वातावरण मिलता है। पंतनगर निकटतम हवाई अड्डा है जहां से अल्मोड़ा 120 किलोमीटर दूर है, काठगोदाम रेलवे स्टेशन यहां से 80 किलोमीटर दूर है। हरिद्वार, नैनीताल, देहरादून और लखनऊ के सड़कमार्ग से अल्मोड़ा जुड़ा हुआ है।

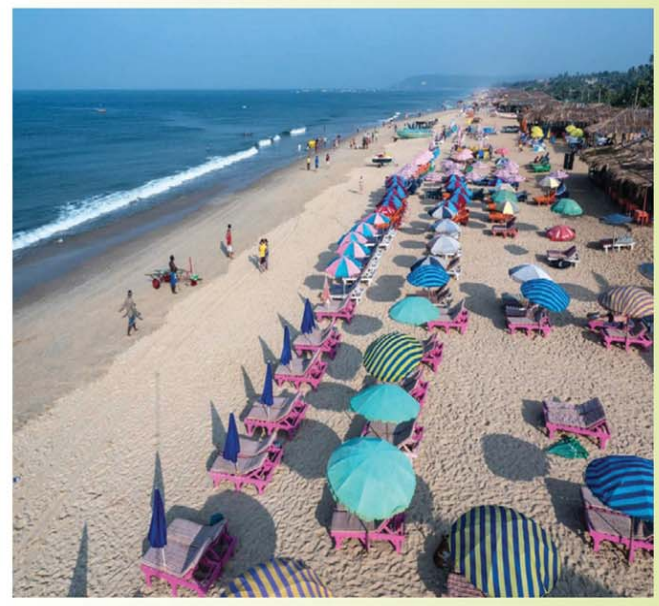

देश की 10 रोमांटिक जगह जरूर जाना चाहिए

रोमांटिक जगह पर घूमने जाना चाहते हैं तो भारत में ऐसी सैंकड़ों रोमांटिक जगहें हैं जहां पर आप जाकर अपने पार्टनर के साथ संबंधों की नई ऊंचाइयों को छू सकते हो। इसके लिए हम लाएं हैं भारत के टॉप 10 रोमांटिकऔर ब्यूटीफुल जगहों की जानकारी।

भारत की टॉप 10 रोमांटिक जगहें

1. गोवा :
समुद्र के किनारे बसा गोवा बहुत ही रोमांटिक जगह है। हनीमून मनाने वालों को भी खूब आकर्षित करता है। रोमांटिक स्थलों में यह सबसे टॉप पर माना जाता है।
2. चंबा :
उत्तराखंड के मसूरी से मात्र 13 घंटे की दूरी पर बसा है चंबा। चंबा की सीढ़ीनुमा सड़कें और ऊंचे-ऊंचे वृक्षों से लदी घुमावदार घाटियां, झुरमुटों में छुपे छोटे-छोटे घर आपके मन को मोह लेंगे।
3. दार्जिलिंग :
'क्वीन ऑफ हिल्स' के नाम से मशहूर दार्जिलिंग हमेशा से एक बेहतरीन हनीमून डेस्टिनेशन रहा है। यह बहुत ही रोमांटिक स्थल है। दूर-दूर तक फैले हरी चाय के खेत मानो धरती पर हरी चादर बिछी हो। सिर्फ चाय बागान नहीं हैं बल्कि यहां की वादियां भी बेहद मनोहारी हैं। बर्फ से ढंके सुंदर पहाड़, देवदार के जंगल, प्राकृतिक सुंदरता, कलकल करते झरने सबका मन मोह लेते हैं।
4. शिमला :
शिमला जाएं या मनाली दोनों ही हिमाचल में स्थित है। दोनों ही हनीमून के लिए सबसे प्रसिद्ध स्थल है। यहां घाटी और चारों ओर हिमालय पर्वत की चोटियों का सुंदर दृश्य दिखाई देता है। चारों ओर से पहाड़ों से घिरे शिमला और मनाली को देखकर रोमांच और रोमांस का अनुभव होता है।
5. ऊटी :
तमिलनाडु का विश्व प्रसिद्ध शहर ऊटी हनीमून के लिए सबसे उपयुक्त स्थान है। इसे पहाड़ों की रानी कहा जाता है। यहां दूर-दूर तक फैली हरियाली, चाय के बागान, तरह-तरह की वनस्पतियां आपको मंत्रमुग्ध कर देगी।
6. लक्षद्वीप :
32 किलोमीटर लंबी भूमि 36 से अधिक छोट-छोटे टापूनुमा द्वीपों में बंटी हुई है, जिसे लक्ष्यद्वीप कहा जाता है। यह दुनिया के सर्वाधिक विहंगम उष्ण कटिबंधी द्वीपों में से एक है। यहां सुंदर सकरे और लंबे लैगून (समुद्र तल, कच्छ या खाड़ी) है। यहां जाकर मन रोमांचित हो उठता है।
7. उदयपुर:
उदयपुर में भी आप कभी भी जा सकते हैं। यहां आप झीलों का मजा ले सकते हैं। यहां की हवेलियों और महलों की भव्यता को देखकर दुनिया भर के पर्यटक मंत्रमुग्ध हो जाते हैं।
8. पचमढ़ी :
होशंगाबाद जिले में स्थित पचमढ़ी मध्यप्रदेश का एकमात्र हिल स्टेशन है जिसे मध्यप्रदेश का श्रीनगर और स्विट्जरलैंड भी कहा जाता है। रोमांटिक स्थलों में यह टॉप पर है।
9. लोनावाला :
महाराष्ट्र में मुंबई से करीब 96 किलोमीटर और खंडाला से लगभग 5 कीलोमीटर दूर स्थित है लोनावला (लोणावळा) हिल स्टेशन। पूणे से मात्र 2 घंटे का रास्ता है। इसे झीलों का जिला कहते हैं। मुंबई और पूना वासियों के लिए यह उनका फेवरिट डेस्टिनेशन है।
10. श्रीनगर:
कश्मीर को पहले सतीसर कहा जाता था और श्रीनगर जिसका पुराना नाम प्रवर पुर है। श्रीनगर के बहाने आप भारत के सबसे खूबसूरत राज्य जम्मू और कश्मीर में घूम सकते हैं। यहां सुंदर झीलों के साथ ही बर्फ से ढके खूबसूरत पहाड़, झील और लंबे-लंबे देवतार के वृक्ष। यह वृक्ष समूचे कश्मीर की शोभा बढ़ाते हैं।

रोमांच और खतरों से भरी मां नंदादेवी की अद्भुत यात्रा

उत्तराखंड के चमोली जिले में जोशीमठ के तपोवन क्षेत्र में नंदा देवी का सबसे ऊंचा पहाड़ है। नंदादेवी के दोनों ओर ग्लेशियर यानी हिमनद हैं। इन हिमनदों की बर्फ पिघलकर एक नदी का रूप ले लेती है। यहां दो बड़े ग्लेशियर है- नंदादेवी नॉर्थ और नंदा देवी साउथ। दोनों की लंबाई 19 किलोमीटर है। इनकी शुरुआत नंदा देवी की चोटी से ही हो जाती है जो नीचे घाटी तक आती हैं। आओ जानते हैं नंदा देवी की ऐतिहासिक यात्रा की 10 खास बातें।

1. माता पार्वती है नंदा देवी: उत्तराखंड के लोग नंदादेवी को अपनी अधिष्ठात्री देवी मानते हैं और यहां की लोककथाओं में उन्हें हिमालय की पुत्री कहा गया है, अर्थात वे माता पार्वती हैं।
2. गढ़वाल-कुमाऊं का मिलन: नंदा देवी गढ़वाल के साथ साथ कुमाऊं कत्युरी राजवंश की ईष्टदेवी थीं और वे उत्तराखंड की बेटी हैं, वह इस यात्रा के माध्यम से अपने ससुराल यानी कैलाश पर्वत जाती हैं। इस ऐतिहासिक यात्रा को गढ़वाल-कुमाऊं के सांस्कृतिक मिलन का प्रतीक भी माना जाता है।
3. सबसे ऊंची चोटी: नंदा देवी पर्वत भारत की दूसरी एवं विश्व की 23वीं सर्वोच्च चोटी है। इस चोटी को उत्तरांचल राज्य में मुख्य देवी के रूप में पूजा जाता है। इससे ऊंची व देश में सर्वोच्च चोटी कंचनजंघा है। नंदा देवी पर्वत लगभग 25,643 फीट ऊंचा है।
4. 12 वर्ष में एक बार यात्रा: नंदा देवी की चढ़ाई अत्यधिक कठिन मानी जाती है। नंदा देवी की कुल ऊंचाई 7816 मीटर यानी 25,643 फीट है। यहां तक पहुंचने के लिए प्रत्येक 12 वर्ष में एक धार्मिक यात्रा का आयोजन होता है प्रतिवर्ष भाद्रपद के शुक्ल पक्ष में नंदादेवी मेला प्रारंभ होता है।
5. हिमालयी कुंभ: चूंकि इस यात्रा का आयोजन कुंभ की तरह हर बारह वर्ष के बाद होता है, इसलिए इसे हिमालयी कुंभ के नाम से भी जाना जाता है।
6. आदि शंकराचार्य ने की थी यात्रश की शुरुआत: नंदा देवी राजजात यात्रा को विश्व की सबसे लम्बी पैदल और धार्मिक यात्रा माना जाता है। इस पहाड़ पर चढ़कर माता के दर्शन करना बहुत ही कठिन होता है। इस यात्रा की शुरुआत आदि शंकराचार्य ने ईसा पूर्व की थी।
7. यात्रा का प्रारंभ और अंत: नंदादेवी की यह ऐतिहासिक यात्रा चमोली जनपद के नौटी गांव से शुरू होती है जो रूपकुंड होकर हेमकुंड तक जाती है जो 18 हजार फुट की ऊंचाई पर स्थित है।
8. रोमांचक और खतरों से भरी होती है ये यात्रा: इस 280 किमी की धार्मिक यात्रा के दौरान रास्ते में घने जंगल, पथरीले मार्गों व दुर्गम चोटियों और बर्फीले पहाड़ों को पार करना पड़ता है। नंदादेवी चोटी के नीचे पूर्वी तरफ नंदा देवी अभयारण्य है। यहां कई प्रजातियों के जीव-जंतु रहते हैं। इसकी सीमाएं चमोली, पिथौरागढ़ और बागेश्वर जिलों से जुड़ती हैं।
9. 19 दिन लगते हैं यात्रा पूर्ण होने में : इस यात्रा को पूरा करने में 19 दिन का समय लग जाता है। इस यात्रा के 19 पड़ाव है। रास्ते में विभिन्न पड़ावों से होकर गुजरने वाली यह यात्रा में भिन्न-भिन्न पड़ावों पर लोग इस यात्रा में मिलकर इस यात्रा का हिस्सा बनते हैं। इस यात्रा का आयोजन नंदादेवी राजजात समिति द्वारा किया जाता है।
10. यात्रा का आकर्षण चौसिंगा खाडू: इस यात्रा का मुख्य आकर्षण चौसिंगा खाडू (चार सींगों वाला भेड़) होता है, जो कि स्थानीय क्षेत्र में राजजात यात्रा शुरू होने से पहले पैदा हो जाता है। उसकी पीठ में दो तरफ थैले में श्रद्धालु गहने, श्रृंगार सामग्री व अन्य भेंट देवी के लिए रखते हैं, जो कि हेमकुंड में पूजा होने के बाद आगे हिमालय की ओर प्रस्थान करता है। यात्रा में जाने वाले लोगों का मानना है कि यह चौसिंगा खाडू आगे विकट हिमालय में जाकर विलुप्त हो जाता है। माना जाता है कि यह नंदादेवी के क्षेत्र कैलाश में प्रवेश कर जाता है, जो आज भी अपने आप में एक रहस्य बना हुआ है।

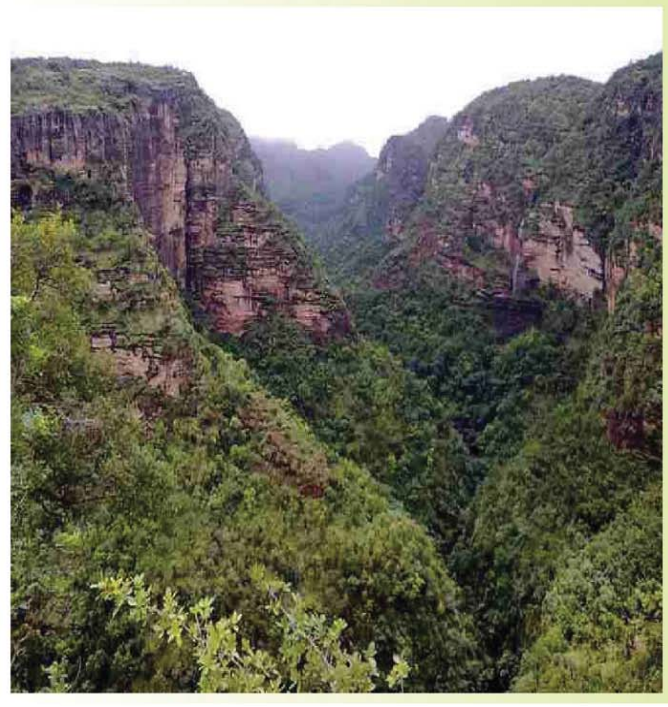

इलेक्ट्रॉनिक्स हब बनेगा तमिलनाडु..... जेबिल इंक करेगी 2,000 करोड़ रुपये का निवेश

5,000 से अधिक नौकरियों का सृजन होगा

चेन्नई ।

अमेरिकी बहुराष्ट्रीय अनुबंध पर विनिर्माण करने वाली कंपनी जेबिल इंक, जो कि अमेरिकी मोबाइल विनिर्माता की सप्लायर है, उस कंपनी ने तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली में एक नया इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण संयंत्र लगाने की घोषणा की है। प्लांट में कंपनी 2,000 करोड़ रुपये का निवेश करेगी और 5,000 से अधिक नौकरियों का सृजन होगा। इस नए निवेश के बाद फॉक्सकॉन, पेगाट्रॉन और टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स के बाद तमिलनाडु में एप्पल का यह चौथा प्रमुख आपूर्तिकर्ता होगा। अमेरिकी कंपनी जेबिल इंक, जो पहले से ही सिस्को और एचपी जैसी कंपनियों की आपूर्तिकर्ता है, ने हाल ही में भारत में एप्पल के लिए एयरपोड के पुर्जों का उत्पादन शुरू किया था। जेबिल की प्रमुख उत्पादन इकाइयां भारत से चीन और वियतनाम को निर्यात करती हैं। कंपनी का पुणे में स्थित संयंत्र 8.58 लाख वर्गफुट में फैला हुआ है, जहां करीब 2,500 कर्मचारी काम करते हैं। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन की हाल ही में हुई अमेरिकी यात्रा के दौरान निवेश सौदे को अंतिम रूप दिया गया। इस बारे में सीएम स्टालिन ने जानकारी देकर एक्स पर लिखा कि जेबिल द्वारा तिरुचिरापल्ली में 2,000 करोड़ रुपये के निवेश से 5,000 नौकरियों का सृजन होगा और एक नया इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण क्लस्टर तैयार होगा। इसके साथ रॉकवेल ऑटोमेशन भी कांचीपुरम में 666 करोड़ के निवेश के साथ अपने संयंत्र का विस्तार करेगी, जिससे 365 नई नौकरियां उत्पन्न होंगी। तमिलनाडु सरकार युवाओं को कौशल विकास के लिए और एमएसएमई एवं स्टार्टअप्स को बढ़ावा देने के लिए ऑटोडेस्क के साथ भी एक समझौते पर हस्ताक्षर कर चुकी है। बात दें कि तमिलनाडु हाल के दिनों में इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात के क्षेत्र में तेजी से उभरा है, खासकर आईफोन के निर्यात में वृद्धि के कारण इस दक्षिण के राज्य में निर्यात तेजी से बढ़ा है।

बजाज हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड के आईपीओ का बाजार ने किया धमाकेदार स्वागत

मुंबई ।

बजाज हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड के 6,560 करोड़ के प्रारंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) को दूसरे दिन भी निवेशकों से जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली। दूसरे दिन आईपीओ को 7.50 गुना सब्सक्रिप्शन प्राप्त हुआ। निवेशकों की इस सक्रिय भागीदारी ने बाजार में मजबूत उत्साह पैदा किया है, इससे यह आईपीओ बेहद आकर्षक साबित हो रहा है। बजाज हाउसिंग फाइनेंस के आईपीओ को सब्सक्राइब करने का आखिरी दिन है। पिछले दो दिनों में आईपीओ में बंपर सब्सक्रिप्शन मिला है।

बजाज हाउसिंग फाइनेंस आईपीओ को दूसरे दिन जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली, जहां कुल सब्सक्रिप्शन 7.51 गुना दर्ज हुआ। नॉन-इंस्टीट्यूशनल निवेशकों के लिए आरक्षित हिस्से को 16.45 गुना सब्सक्राइब किया गया, जबकि क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबीएस) के हिस्से को 7.46 गुना सब्सक्रिप्शन मिला। खुदरा व्यक्तिगत निवेशकों (आरआईआईएस) के लिए आरक्षित कोटा 3.83 गुना भरा गया, जो निवेशकों की मजबूत रुचि को दर्शाता है। कंपनी के आईपीओ को निवेशकों से शानदार रुझान मिल रहा है, जिसमें दूसरे दिन 7.51 गुना सब्सक्रिप्शन दर्ज हुआ है। आईपीओ की शुरुआती शेयर बिक्री 11 सितंबर बुधवार को समाप्त होगी।

बजाज हाउसिंग फाइनेंस आईपीओ के लिए प्रति शेयर मूल्य बैंड 66-70 तय किया है। इस आईपीओ में 3,560 करोड़ तक के नए इक्विटी शेयर जारी किए जाएगें। साथ ही इसके मूल कंपनी बजाज फाइनेंस द्वारा 3,000 करोड़ के इक्विटी शेयरों की बिक्री (ऑफर-फॉर-सेल) होगी। यह शेयर बिक्री भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के उन नियमों का पालन करने के लिए हो रही है, जिसके तहत शीर्ष स्तरीय गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसीएस) को सितंबर 2025 तक स्टॉक एक्सचेंज पर लिस्ट होना जरुरी है।

ग्रे मार्केट में, बजाज हाउसिंग फाइनेंस के शेयर अपने इश्यू प्राइस 70 (ऊपरी प्राइस बैंड) के मुकाबले 94.29 प्रतिशत प्रीमियम पर ट्रेड कर रहे हैं। इसका मतलब है कि ग्रे मार्केट में शेयर की कीमत काफी बढ़ी हुई है, जो निवेशकों के बीच इसकी लोकप्रियता को दर्शाता है।

यूएलआई बनेगा नया उपक्रम, इस इकाई में बैंक हिस्सेधारक के रूप में जुड़ेंगे

नई दिल्ली।

यूनिफाइड लेंडिंग इंटरफेस (यूएलआई) को अलग कर एक नए उपक्रम में इसे तबदील किया जा सकता है। बैंक इस उपक्रम में अपनी हिस्सेदारी रखेंगे। यूएलआई भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के इनोवेशन हब (आरबीआईएच) का हिस्सा है लेकिन अब इसे अलग किया जा सकता है। इस मामले के जानकार ने बताया यूएलआई को व्यावसायिक रूप देने एक नई इकाई खड़ी करनी होगी। मौजूदा स्वरूप यानी आरबीआईएच के अंदर यह कार्य नहीं किया जा सकता। आरबीआई एवं इसकी सहायक इकाइयों को व्यावसायिक परिचालन की इजाजत नहीं है। आरबीआईएच केंद्रीय बैंक की पूर्ण स्वामित्व वाली इकाई है। यूएलआई जिस रूप में है उसमें इसे भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (एनपीसीआई) का हिस्सा नहीं बनाया जा सकता है। एनपीसीआई की स्थापना भुगतान एवं निपटान प्रणाली अधिनियम, 2007 के अंतर्गत हुई है। सूत्रों ने बताया कि यूएलआई के लिए अलग से एक इकाई तैयार करने की संभावनाओं पर चर्चा जारी है। इस इकाई में बैंक हिस्सेधारक के रूप में जुड़ेंगे। यह ठीक एनपीसीआई की तर्ज पर होगा जिसमें सार्वजनिक बैंक, विदेशी बैंक, सहकारी बैंक और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की हिस्सेदारी है। पिछले महीने आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने कहा था कि पीटीपीएफसी को यूएलआई के नाम से जाना जाएगा। उन्होंने ऋण आवंटन पर इसके संभावित प्रभाव की तुलना देश में भुगतान खंड में यूपीआई से आए बदलाव से की थी। यूएलआई का मकसद कर्जदाताओं तक डिजिटल जानकारियां पहुंचाना है। यह बिना किसी रुकावट के कम समय में ऋण आवंटन तय कराने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों, अकाउंट एग्रीगेटर, बैंक, क्रेडिट इन्फॉर्मेशन कंपनी, डिजिटल पहचान प्राधिकरणों सहित अन्य स्रोतों से जानकारियां जुटाएगा। सूत्रों ने संकेत दिए कि आरबीआई यूएलआई में हिस्सेदारी रखने वाली कंपनियों का दायरा बढ़ाने पर विचार कर रहा है ताकि इसमें पुरानी और नई वित्त-तकनीक एनबीएफसी भी शामिल हो सकें। पीटीपीएफसी में आधार ई-केवाईसी, भागीदार राज्य सरकारों की जमीन का लेखा-जोखा, उपग्रह से जुड़ी जानकारी, स्थायी खाता संख्या (पैन) सत्यापन, ट्रांसलिटरेशन, आधार ई-हस्ताक्षर, अकाउंट एग्रीगेटर सहित दुग्ध सहकारी संस्थाओं और जायदाद की खोज से जुड़ी कई जानकारियां उपलब्ध कराई गई हैं।

कच्चे तेल में गिरावट से पेंट, एविएशन, टायर के शेयरों में आएगा उछाल

नई दिल्ली।

कच्चे तेल में गिरावट से बाजार में तेजी देखने को मिल सकती है। एक रिपोर्ट के मुताबिक दिसंबर 2021 के बाद यह पहला मौका है जब ब्रेंट फ्यूचर 70 डॉलर प्रति बैरल से नीचे चला गया है। ऐसे में उन शेयरों में तेजी देखने को मिल सकती है, जिनका कनेक्शन कच्चे तेल के इस्तेमाल और आपूर्ति से है। क्रूड की कीमतों में गिरावट के चलते पेंट, एविएशन, केमिकल, टायर और एफएमसीजी सेक्टर के शेयरों में अच्छी तेजी देखने को मिल सकती है। चूंकि, भारत पेट्रोल-डीजल की आपूर्ति के लिए क्रूड आयात करता है। ऐसे में भाव कम होने से महंगाई में भी राहत देखने को मिल सकती है।

क्रूड की कीमतों के तीन साल के निचले स्तर पर पहुंच जाने से पेंट, एविएशन, टायर और केमिकल शेयरों में अच्छी तेजी आने की संभावना है। दरअसल कच्चे तेल का इस्तेमाल पेंट, टायर और केमिकल मटेरियल बनाने में किया जाता है।

ऐसे में सस्ता क्रूड मिलने से इन कंपनियों की इनपुट कॉस्ट कम होगी और मुनाफा भी बढ़ेगा। रिपोर्ट के मुताबिक पिछले एक साल में पेंट्स शेयरों ने ज्यादा अच्छा रिटर्न नहीं मिला है।

मार्केट लीडर एशियन पेंट्स और बर्जर पेंट्स स्थिर रहे हैं, वहीं कंसाई नेरोलैक के शेयर मूल्य में नौ फीसदी की गिरावट रही। दूसरी ओर बालकृष्ण इंडस्ट्रीज, सिएट, अपोलो टायर्स और जेके टायर एंड इंडस्ट्रीज जैसे टायर शेयरों ने 22फीसदी से 62फीसदी के बीच रिटर्न दिया है।

निर्देशों का पालन नहीं करने वाले दो निजी बैंकों पर लगा करोड़ों का जुर्माना

नई दिल्ली।

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने ऐलान किया है कि उसने दो निजी बैंकों, एक्सिस बैंक लिमिटेड और एचडीएफसी बैंक लिमिटेड पर कई नियामक निर्देशों का पालन न करने पर जुर्माना ठोका है। आरबीआई ने इसी साल तीन सितंबर को एक्सिस बैंक पर 1.91 करोड़ और एचडीएफसी बैंक पर एक करोड़ का जुर्माना लगाया है। यह कार्रवाई बैंकों द्वारा नियामक नियमों का पालन न करने की वजह से की गई है। ऐक्सिस बैंक पर 1.91 करोड़ का जुर्माना आरबीआई की जांच के बाद लगाया। यह जांच 31 मार्च 2023 तक की बैंक की वित्तीय स्थिति के आधार पर की गई थी। इस दौरान बैंक द्वारा बैंकिंग नियमों के कई उल्लंघन पाए गए, जिसके चलते यह जुर्माना लगाया गया है। आरबीआई के मुताबिक बैंक ने ऐसे खाताधारकों के लिए बचत खाते खोले जो इसके योग्य नहीं थे। साथ ही बैंक ग्राहकों को यूनिक कस्टमर आईडी देने में भी नाकाम रहा। बैंक ने 1.60 लाख तक के कृषि ऋण के लिए गिरवी रखी संपत्ति को सुरक्षित नहीं किया। आरबीआई ने एक बयान में कहा कि एक्सिस बैंक पर 1.91 करोड़ रुपए का जुर्माना 'जमा पर ब्याज दर' 'अपने ग्राहक को जानें (केवॉयसी) और कृषि ऋण प्रवाह बिना गिरवी के कृषि ऋण जैसे नियमों का पालन नहीं करने की वजह से लगाया गया है।

इसी तरह एचडीएफसी बैंक पर भी आरबीआई ने एक करोड़ का जुर्माना लगाया है। यह जुर्माना बैंक द्वारा जमा पर ब्याज दर, रिकवरी एजेंटों की नियुक्ति और बैंकों में ग्राहक सेवा से जुड़े आरबीआई के दिशा-निर्देशों का पालन न करने के कारण लगाया गया है। आरबीआई ने बैंक की वित्तीय स्थिति के आधार पर 31 मार्च 2022 की स्थिति को ध्यान में रखते हुए आईएसई 2022 (निगरानी मूल्यांकन के लिए वैधानिक निरीक्षण) किया।

भारत का इलेक्ट्रिक वाहन बाजार.....2030 तक पैदा करेगा 5 करोड़ नौकरियां

नई दिल्ली ।

भारत का इलेक्ट्रिक वाहन बाजार 2030 तक एक करोड़ इकाई सालाना बिक्री के आंकड़े को पार कर लेगा और 5 करोड़ नौकरियां पैदा होंगी। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने उम्मीद जाहिर की हैं कि भारत भविष्य में दुनिया का शीर्ष वाहन विनिर्माण केंद्र बनेगा। उन्होंने कहा, भारत का इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) बाजार 2030 तक एक करोड़ इकाई सालाना तक पहुंचेगा है और इस ईवी बाजार से पांच करोड़ नौकरियां पैदा होने की उम्मीद है। केंद्रीय मंत्री गडकरी ने कहा कि भारतीय ईवी बाजार की क्षमता 2030 तक 20 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचने की संभावना है। अनुमान के मुताबिक, ईवी वित्तपोषण बाजार का आकार चार लाख करोड़ रुपये है। उन्होंने कहा कि लीथियम-आयन बैटरियों की लागत में और कमी आने की उम्मीद है, इससे किफायत में मदद मिलेगी और इस प्रकार बड़े पैमाने पर इसकी स्वीकार्यता में तेजी आएगी।

अब अंबानी इनरवियर इंडस्ट्री में रखेंगे कदम, इजराइली कंपनी से की साझेदारी

नई दिल्ली। मशहूर कारोबारी मुकेश अंबानी खिलौने, कपड़े और चॉकलेट जैसे व्यापार के बाद अब इनरवियर इंडस्ट्री में कदम रखने वाले हैं। इसके लिए रिलायंस इंडस्ट्रीज ने इजराइल की इनरवियर निर्माण करने वाली कंपनी डेल्टा गैलिल के साथ साझेदारी की है। इस जॉइंट वेंचर से रिलायंस, जॉकी, स्पीडो और लेविस जैसे प्रमुख ब्रांडों को टक्कर देगी। रिलायंस और डेल्टा गैलिल का यह जॉइंट वेंचर मौजूदा रिलायंस ब्रांडों के लिए इनरवियर तैयार करेगा और साथ ही डेल्टा गैलिल के प्रमुख ब्रांड जैसे सेवन फॉर ऑल मनकिंड और नेसेसिटिज को भारतीय बाजार में पेश करेगा। डेल्टा गैलिल पहले से ही कई बड़े अंतरराष्ट्रीय ब्रांड्स जैसे कैल्विन क्लेन, टॉमी हिलफिगर, और कोलंबिया के लिए इनरवियर उत्पाद बनाती है और हाल ही में एडिडास और पोलो राल्फ लॉरेन के साथ भी साझेदारी की है। कुछ सालों में रिलायंस रिटेल ने केलोविया, जिवामा और अमानते जैसे ब्रांडों का अधिग्रहण किया है। ये ब्रांड्स 2023-2024 के वित्त वर्ष में 2000 करोड़ रुपए से ज्यादा की बिक्री कर चुके हैं।

भारत से आईफोन निर्यात में 54 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई

नई दिल्ली । भारत से आईफोन का निर्यात वित्त वर्ष 2025 के शुरुआती पांच महीनों (अप्रैल-अगस्त) में 5 अरब डॉलर तक पहुंच चुका है, जो पिछले साल सामाना अवधि में 3.2 अरब डॉलर था। इस वर्ष आईफोन निर्यात में 54 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है। इसकी जानकारी अमेरिकी मोबाइल कंपनी एप्पल के वेंडर द्वारा मोदी सरकार को दी गई है। एप्पल ने भारत में आईफोन 16 और आईफोन 16 मैक्स के निर्माण का निर्णय लिया है, जिससे देश से उसके निर्यात में और अधिक वृद्धि की संभावना है। एप्पल के आंकड़ों के अनुसार, इस साल के शुरुआती पांच महीनों का निर्यात वित्त वर्ष 2022 के कुल निर्यात के बराबर है, जो भारत के इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण क्षेत्र की बढ़ती क्षमता को दर्शाता है। दरअसल आईफोन का निर्माण फॉक्सकॉन, पेगाट्रॉन और विस्ट्रन (अब टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स) जैसे तीन प्रमुख वेंडरों के द्वारा होता है। ये सभी कंपनियां उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना के तहत आईफोन का उत्पादन करती हैं। इन तीनों वेंडरों ने संयुक्त रूप से वित्त वर्ष 2025 के लिए 8.9 अरब डॉलर के निर्यात का लक्ष्य रखा है, जो पीएलआई योजना का चौथा वर्ष है। यह वृद्धि भारत में एप्पल के बढ़ते निवेश और उत्पादन क्षमताओं को दिखाती है, जो वैश्विक स्तर पर देश को स्मार्टफोन निर्माण के एक प्रमुख केंद्र के रूप में उभर रही है।

शेयर बाजार गिरावट के साथ बंद

मुम्बई ।

घरेलू शेयर बाजार बुधवार को गिरावट पर बंद हुआ। सप्ताह के तीसरे ही कारोबारी दिन बाजार में ये गिरावट दुनिया भर से मिले कमजोर संकेतों के साथ ही बिकवाली हावी रहने से आई है। कारोबार के दौरान दिग्गज कंपनियों टाटा मोटर्स और रिलायंस इंडस्ट्रीज के शेयर में गिरावट से भी बाजार पर दबाव पड़ा और वह नीचे आया। दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों वाला तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 398.13 अंक करीब 0.49 फीसदी नीचे आकर 81,523.16 अंक पर बंद हुआ। वहीं नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी 122.65 अंक तकरीबन 0.49 अंक नीचे आकर 24,918.45 अंक पर बंद हुआ।

आज कारोबार के दौरान के सेंसेक्स की कंपनियों में टाटा मोटर्स के शेयर सबसे अधिक गिरे। इसमें करीब 6 फीसदी की गिरावट आई। इसके अलावा एनटीपीसी, अदानी पोर्ट्स, लार्सन एंड टुब्रो, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, जेएसडब्ल्यू स्टील, महिंद्रा एंड महिंद्रा, इंडसइंड बैंक और टाइटन के शेयर भी गिरे।

वहीं दूसरी ओर एशियन पेंट्स, बजाज फाइनेंस , हिंदुस्तान यूनिलीवर और बजाज फिनसर्व के शेयर लाभ के साथ ही ऊपर आये।

शेयर बाजार के आंकड़ों के अनुसार, विदेशी निवेशकों ने गत दिवस 2,208.23 करोड़ रुपये मूल्य के शेयर खरीदे।

इससे पहले आज सुबह बाजार गिरावट के साथ खुला। बाजार में ये गिरावट दुनिया भर से मिले कमजोर संकेतों के साथ ही बिकवाली हावी रने से आई है। । शुरुआती कारोबार में बीएसई सेंसेक्स 70 अंक करीब 0.08 फीसदी नीचे आकर 81,851 पर खुला। वहीं 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 20 अंक तकरीबन 0.08 फीसदी टूटकर 25,020 पर पहुंच गया।आर्थिक आंकड़ों के अलावा एशियाई बाजारों से आज सुबह कमजोर संकेत मिलने से भी भारतीय बाजार पर विपरीत प्रभाव पड़ा। निवेशक अमेरिका के उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) डेटा का इंतजार कर रहे हैं, जिससे ब्याज दरों में कटौती की जानकारी हासिल की जा सके।

वहीं एशियाई बाजार की की बात करें तो जापान के निक्केई 225 में 0.7 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई, जबकि टॉपिक्स इंडेक्स 0.86 फीसदी नीचे रहा। दक्षिण कोरिया का कोस्पी इंडेक्स भी 0.20 फीसदी गिरा हालांकि, कोसडैक इंडेक्स में 1.61 फिसदी की बढ़त रही। ऑस्ट्रेलिया का एसएंडपी/एएसएक्स 200 इंडेक्स मामूली रूप से बढ़ा, जबकि हांगकांग के हैंग सेंग इंडेक्स वायदा 17,072 पर दिखे, जो कि एसएसआईढ्ढ के पिछले बंद स्तर 17,190 से कम है। वहीं, कल अमेरिकी बाजारों में मिलाजुला कारोबार दर्ज किया गया। निवेशक अमेरिका के महंगाई आंकड़ों और अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव बहस का इंतजार कर रहे हैं। डाउ जोन्स 0.23 फीसदी की गिरावट के साथ बंद हुआ, जबकि एसएंडपी 500 में 0.45 फीसदी की बढ़त रही।इसके अलावा नैस्डैक कंपोजिट में 0.84 फीसदी की बढ़त दर्ज की गयी। वहीं गत दिवस बाजार तेजी के साथ बंद हुआ था।

पहला पेज का शेष

संवेदनशीलता और सजगता...

लोगों को 200 यूनिट बिजली मुफ्त दी जा रही है। वकीलों को पेंशन, स्वास्थ्य बीमा और स्टाइपेंड की राशि देने का निर्णय हमारी सरकार ने लिया है। सावित्रीबाई फूले किशोरी समृद्धि योजना से बच्चियों को जोड़कर उन्हें पढ़ाई के लिए प्रेरित किया जा रहा है। यहां के बच्चे- बच्चियां डॉक्टर इंजीनियर और अफसर बनें, उन्हें गुरुजी क्रेडिट कार्ड के तहत 15 लाख रुपए तक की आर्थिक सहायता दी जा रही है। ऐसी अनेकों और योजनाएं हैं, जिसके जरिए राज्य वासियों को हम आगे बढ़ा रहे हैं।

20 वर्ष बनाम 4 वर्ष में हुए कार्यों का आकलन करें : मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखंड अलग राज्य बनने के बाद 20 वर्षों में जो कार्य हुए और हमारी सरकार ने विगत साढ़े चार वर्षों में जितने कार्य किए हैं, उसका आप खुद आकलन कर लें। हमारी सरकार ने कोरोना के साथ-साथ कई अन्य चुनौतियों के बीच राज्य के विकास को गति देने का काम करती आ रही है। आज इस राज्य का कोई भी ऐसा घर नहीं है जो सरकार की योजनाओं से वंचित है।

अपने गांव- देहात को कर रहे मजबूत : मुख्यमंत्री ने कहा कि जब तक हमारे गांव मजबूत नहीं होंगे, राज्य सशक्त नहीं होगा। इसीलिए विभिन्न योजनाओं के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती दे रहे हैं। यहां के आदिवासी-मूलवासी, किसान- मजदूर और गरीब- वंचित वर्ग को पूरे मान- सम्मान के साथ उनका हक- अधिकार दे रहे हैं। उन्हें उनकी मंजिल तक पहुंचाने के लिए सरकार पूरी ताकत के साथ काम कर रही है।

समाज को तोड़ने वालों को नकारें : मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य तभी आगे बढ़ेगा, जब समाज के सभी वर्ग मिलजुल कर राज्य के विकास के भागीदार बनेंगे। समाज में बिखराव राज्य को कमजोर करता है । ऐसे में मैं आप सभी से यही कहना चाहता हूं कि समाज को तोड़ने वालों की पहचान कर उन्हें नकारें। हमारा प्रयास सभी का सहयोग लेकर इस राज्य की दशा और दिशा को बदलना है।

गोड्डा को 29 और देवघर जिले 118 योजनाओं को मिली कई सौगातें : मुख्यमंत्री ने ₹ आपकी योजना- आपकी सरकार- आपके द्वार ₹ कार्यक्रम में गोड्डा एवं देवघर जिले को कुल 339 करोड़ 60 लाख 1 हजार रुपए की 147 योजनाओं का तोहफा दिया। इसमें गोड्डा जिला अंतर्गत 192 करोड़ रूपए की 29 योजनाओं का उद्घाटन-शिलान्यास शामिल है, जबकि देवघर जिला अंतर्गत 6 करोड़ 81 लाख 66 हज़ार रूपए की 12 योजनाओं का उद्घाटन एवं 159 करोड़ 66 लाख 69 हज़ार रुपए की 106 योजनाओं का शिलान्यास संपन्न हुआ। इस अवसर पर इन दोनों जिलों के हजारों लाभुकों के बीच करोड़ों रुपए की परिसंपत्तियां बांटी गई।इस कार्यक्रम में मंत्री श्री सत्यानन्द भोक्ता, मंत्री श्रीमती दीपिका पांडेय सिंह, विधायक श्री प्रदीप यादव, जिला परिषद अध्यक्ष श्रीमती बेबी देवी, पूर्व मंत्री श्री हेमलाल मुर्मू, पूर्व विधायक श्री संजय यादव, संताल परगना प्रमण्डल के आयुक्त श्री लालचंद दादेल, पुलिस महानिरीक्षक श्री क्रांति कुमार गड़िदेशी, पुलिस उप महानिरीक्षक श्री संजीव कुमार तथा गोड्डा एवं देवघर जिले के उपायुक्त तथा पुलिस अधीक्षक समेत अन्य पदाधिकारी मौजूद थे।

हादसे के कारण रद्द...

उन्होंने कहा कि दोनों देशों के 50,000 से ज्यादा सैनिक एलएसी पर तैनात हैं और किसी भी एकतरफा कार्रवाई को रोकने के लिए उनके पास आधुनिक हथियार हैं।लगातार और तेज बारिश से सिंध में पानी का स्तर बढ़ गया जिसके बाद नदी पर बने मड़ीखेड़ा डेम अटल सागर बांध के 6 गेट खोल दिए गए।ग्वालियर और छतरपुर में भी बारिश के बाद पानी से ओवरफ्लो हुए बांधों के गेट खोले जा रहे हैं। छतरपुर में धसान नदी का स्तर लगातार बढ़ रहा है। छतरपुर और टीकमगढ़ के बीच सड़क संपर्क टूट गया है। ग्वालियर और भिंड सहित कई जिलों में स्कूलों में छुट्टी घोषित कर दी गई है।

देश में चार्जिंग स्टेशन को बढ़ावा देने 2,000 करोड़ रुपये के निवेश की योजना

केंद्रीय भारी उद्योग मंत्री एच डी कुमारस्वामी का बयान

नई दिल्ली ।

केंद्रीय भारी उद्योग मंत्री एच डी कुमारस्वामी ने कहा कि मोदी सरकार ई-मोबिलिटी की निरंतर वृद्धि में सहयोग के लिए नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को एकीकृत करने पर ध्यान देने के साथ एक मजबूत चार्जिंग बुनियादी ढांचे के विकास को प्राथमिकता दे रही है। उन्होंने सोसायटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स (सियाम) के सम्मेलन में कहा, 'हमारा मंत्रालय चार्जिंग आधारभूत ढांचे पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। इससे ई-मोबिलिटी के क्षेत्र में निरंतर वृद्धि बनी रहेगी। इतना ही नहीं हम इस आधारभूत ढांचे को नवीकरणीय ऊर्जा के संसाधनों से अनिवार्य रूप से एकीकृत करने के लिए सचेत हैं ताकि इलेक्ट्रिक मोबिलिटी से अधिकतम पर्यावरणीय फायदे हासिल हो सके। उन्होंने उद्योग से आग्रह किया कि विकास के रास्ते पर आगे बढ़ने के साथ भारत के चिरस्थायी लक्ष्यों को हासिल करने के लिए प्रतिबद्ध प्रयास और सहयोग करें'। मोदी सरकार बहुप्रतीक्षित फेम-तीन योजना के तहत चार्जिंग आधारभूत ढांचे को मजबूत करने पर विशेष जोर दे रही है। रिपोर्ट में बताया गया कि भारी उद्योग मंत्रालय देशभर में चार्जिंग स्टेशन को बढ़ावा देने के लिए 2,000 करोड़ रुपये के निवेश की योजना बना रहा है। फेम के शुरुआती चरणों में चार्जिंग आधारभूत ढांचे पर

प्रमुख रूप से ध्यान दिया गया। मोदी सरकार ने फेम-1 में 520 चार्जिंग स्टेशन को मंजूरी दी थी। भारी उद्योग मंत्रालय के 2021 के बयान के अनुसार इसमें 452 स्थापित हुए थे। मंत्रालय ने 3 तेल विपणन कंपनियों को 7,432 इलेक्ट्रिक व्हीकल पब्लिक चार्जिंग स्टेशन स्थापित के लिए 800 करोड़ रुपये दिए थे।

पेट्रोल-डीजल की कीमतों में आया बदलाव

नई दिल्ली । अंतरराष्ट्रीय बाजार में क्रूड (कच्चे तेल) की कीमतों में गिरावट आई है। दिसंबर 2021 के बाद पहली बार ब्रेंट फ्यूचर 70 डॉलर प्रति बैरल से नीचे आया है। कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट से भी कई राज्यों में पेट्रोल-डीजल के दामों में बदलाव आया है। असम, कर्नाटक और केरल में पेट्रोल सस्ता हुआ है, जबकि एमपी, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और राजस्थान में कीमतें बढ़ी हैं। वहीं गाजियाबाद में पेट्रोल 94.65 रुपये और डीजल 87.74 रुपये प्रति लीटर हो गया है। लखनऊ में पेट्रोल 94.56 रुपये और डीजल 87.76 रुपये प्रति लीटर पहुंच गया है। पटना में पेट्रोल 105.18 रुपये और डीजल 92.04 रुपये प्रति लीटर पहुंच गया है। चारों महानगरों की बात करें तो पेट्रोल-डीजल की कीमतें दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपये और डीजल 87.62 रुपये प्रति लीटर, मुंबई में पेट्रोल 103.44 रुपये और डीजल 89.97 रुपये प्रति लीटर, चेन्नई में पेट्रोल 100.85 रुपये और डीजल 92.43 रुपये प्रति लीटर, कोलकाता में पेट्रोल 104.95 रुपये और डीजल 91.76 रुपये प्रति लीटर पर हैं।

कालचक्र का बदलता स्वरूप- अमेरिका में लगातार बिगड़ती आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति

प्रहलाद सबनानी

अमेरिका में उच्च आय वाले क्षेत्रों में रोजगार के अवसर लगातार कम हो रहे हैं। अमेरिका में प्रति घंटा औसत मजदूरी की दर वर्ष 1973 से (मुद्रा स्फीति की दर के समायोजन के पश्चात) लगभग नहीं के बराबर बढ़ी है। अमेरिका में आय की असमानता लगातार बढ़ती जा रही है। फे-डरल बजट घाटा अब अरक्षणीय (अनसस्टेनेबल) स्तर पर पहुंच गया है।

विश्व में कई गतिविधियां एक चक्र के रूप में चलती रहती है। एक कालखंड के पश्चात चक्र कभी नीचे की ओर जाता है एवं एक अन्य कालखंड के पश्चात यह चक्र कभी ऊपर की ओर जाता हुए दिखाई देता है। विदेशी व्यापार के मामले में वर्ष 1750 तक पूरे विश्व में भारत की तूती बोलती रही है, परंतु इसके पश्चात यूरोपीयन देशों ने विस्तारवादी नीतियों के चलते अपने आर्थिक हित साधते हुए विभिन्न देशों पर अपना कब्जा जमा लिया। ब्रिटेन, फ्रांन्स, डच जैसे देशों ने एशियाई देशों एवं कुछ अफ्रीकी भू भाग पर पर अपना कब्जा जमाया तो स्पेन आदि देशों ने अमेरिकी महाद्वीप पर अपना कब्जा जमाया। समय के साथ चक्र कुछ इस प्रकार चला कि वर्ष 1950 आते आते अमेरिका पूरे विश्व में सबसे अमीर देशों की श्रेणी में शामिल हो गया और ब्रिटेन, जिसके बारे में कभी कहा जाता था कि ब्रिटेन की महारानी के राज्यों में सूरज कभी डूबता नहीं है, का आर्थिक दृष्टि से ढलान शुरू हो गया और आज ब्रिटेन के आर्थिक एवं सामाजिक ढांचे की स्थिति हम सभी के सामने है। ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था हाल ही में पूरे विश्व में छठे स्थान पर पहुंच गई है तथा अमेरिका, चीन, जापान, जर्मनी के पश्चात भारत आज विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। जबकि वर्ष 1750 के पश्चात जब ब्रिटेन ने भारत पर अपना कब्जा स्थापित कर लिया था उसके बाद भारत की स्थिति यहां तक बिगड़ी थी कि पूरी विश्व की अर्थव्यवस्था में भारत के विदेश व्यापार की हिस्सेदारी वर्ष 1750 के 32 प्रतिशत से घटकर वर्ष 1947 में 3 प्रतिशत के नीचे आ गई थी। परंतु, एक बार फिर कालचक्र अपना रंग दिखाता हुआ नजर आ रहा है और अमेरिकी अर्थव्यवस्था के साथ ही वहां का सामाजिक ताना बाना भी छिन्न भिन्न होता हुआ दिखाई दे रहा है।

दरअसल, अमेरिका ने पूंजीवादी नीतियों को अपनाकर अपने नागरिकों में केवल आर्थिक उन्नति को ही विकास के एकमात्र मार्ग के रूप में चुना था, इससे वहां के नागरिकों में किसी भी प्रकार से धन अर्जन करने की प्रवृत्ति विकसित हुई एवं सामाजिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक ताना बाना छिन्न भिन्न हो गया। परिवार व्यवस्था समाप्त हो गई जिसका परिणाम आज हमारे सामने हैं कि आज अमेरिका में नागरिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा योजना, मेडीकेयर योजना, मेडीकैड योजना, प्रौढ़ नागरिकों को सुविधाएं एवं केंद्र (फेडरल) सरकार के कर्मचारियों को अदा की जा रही पेंशन, आदि योजनाएं सरकार द्वारा नागरिकों के हितार्थ अमेरिका में चलानी पड़ रही हैं। इन योजनाओं पर खर्च किए जा रहे 2 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर की भारी भरकम राशि का लाभ करोड़ों अमेरिकी नागरिक प्रतिवर्ष उठा रहे हैं। यह राशि अमेरिकी सकल घरेलू उत्पाद का 14 प्रतिशत है। सुरक्षा की मद पर भी अमेरिका द्वारा 70,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर का खर्च प्रतिवर्ष किया जाता है। बेरोजगारी बीमा लाभ योजना पर भी भारी भरकम राशि अमेरिकी सरकार द्वारा प्रतिवर्ष खर्च की जाती है। अमेरिका में सेवा निवृत्त हो रहे कर्मचारियों की संख्या लगातार बढ़ रही है जिसके कारण इस मद पर व्यय की जाने वाली राशि में भी बेतहाशा वृद्धि हो रही है, साथ ही लगातार बढ़ रहा सुरक्षा खर्च, स्वास्थ्य सेवाओं पर व्यय की लगातार बढ़ रही राशि के बीच वर्तमान में कर की दरों में वृद्धि नहीं करने के कारण बजटीय घाटे पर दबाव बढ़ता जा रहा है। इकोनोमिक रिपोर्ट आफ द प्रेजीडेंट के अनुसार अमेरिका में वर्ष 2000 में 23,600 करोड़ अमेरिकी डॉलर का बजट आधिक्य था जो वर्ष 2001 में घटकर 12,600 करोड़ अमेरिकी डॉलर का हो गया। परंतु, वर्ष 2002 में एक बार जो 15,800 करोड़ अमेरिकी डॉलर का बजट घाटा प्रारम्भ हुआ तो इसके बाद से वह बढ़ता ही गया है। वर्ष 2009 में तो बजट घाटा बढ़कर 141,300 करोड़ अमेरिकी डॉलर का हो गया, वर्ष 2010 में 129,400 करोड़ अमेरिकी डॉलर, वर्ष 2011 में 130,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर, वर्ष 2012 में 108,700 करोड़ अमेरिकी डॉलर एवं वर्ष 2020 में 313,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर, वर्ष 2021 में 277,000 करोड़ अमेरिको डॉलर एवं वर्ष 2022 में 188,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर का रहा है।

अमेरिका में प्रति परिवार वास्तविक औसत आय वर्ष 1973 में (वर्ष 2015 में डॉलर की कीमत पर) 50,000 अमेरिकी डॉलर थी। अमेरिका के लगभग आधे परिवारों की वास्तविक औसत आय 50,000 अमेरिकी डॉलर से अधिक थी एवं शेष आधे परिवारों की 50,000 अमेरिकी डॉलर से कम थी, जिससे आय की असमानता आज की तुलना में कम दिखाई देती थी। वर्ष 1973 से वर्ष 2015 तक अमेरिका में उत्पादकता में 115 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है जबकि परिवारों की औसत आय (मुद्रा स्फीति के समायोजन के बाद) केवल 11 प्रतिशत ही बढ़ी है। यह भी, इस बीच, अमेरिकी महिलाओं को भारी मात्रा में प्रदान किए गए रोजगार के अवसरों के चलते सम्भव हो पाया है। इस प्रकार, मुद्रा स्फीति के समायोजन के पश्चात, अमेरिका में वर्ष 1973 के पश्चात औसत आय में वृद्धि नगण्य ही रही है। वर्ष 1973 से वर्ष 2007 के बीच अमेरिकी मध्यवर्गीय परिवारों ने उपभोग पर औसत खर्च को दुगने से भी अधिक कर दिया है। जिसके कारण इन परिवारों की बचत दर 10 प्रतिशत से घट कर 2 प्रतिशत हो गई है। बल्कि कई परिवारों को तो अपने मकानों पर ऋण लेकर एवं क्रेडिट कार्ड के माध्यम से ऋण लेकर भी काम चलाना पड़ रहा हैं।

जोसेफ शूम्पटर के अनुसार अमेरिका में कार ने घोड़ा गाड़ी को खत्म कर दिया एवं कम्प्यूटर ने टाइपराइटर को खत्म कर दिया। इसे ह्रचनात्मक विनाशह्व (क्रीएटिव डेस्ट्रक्शन) का नाम दिया गया, क्योंकि इससे उत्पादकता का स्तर बढ़ा था, परंतु रोजगार के लाखों अवसर समाप्त हो गए थे। अमेरिका में आज 5 में से 4 रोजगार के अवसर, सेवा क्षेत्र में उत्पन्न होते हैं, जहां तुलनात्मक रूप से आय कम है। कृषि एवं उद्योग (विनिर्माण सहित) क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बहुत कम मात्रा में उपलब्ध हो पा रहे हैं।

60 वर्ष पूर्व तक अमेरिका विदेशी व्यापार के मामले में आत्मनिर्भर था। अमेरिका में विभिन्न उत्पादों का जितना उपभोग होता था उन लगभग समस्त उत्पादों का उत्पादन भी अमेरिका में ही होता था। बल्कि, विदेशी व्यापार के मामले में तो उस समय अमेरिका के पास विदेश व्यापार आधिक्य शेष रहता था। आज अमेरिका में विभिन्न उत्पादों का जितना उत्पादन होता है उससे कहीं अधिक उपभोग होता है। अमेरिकी नागरिक आज अपनी आय से अधिक व्यय करता हुआ दिखाई देता है। अमेरिका में कई नए शहरों की बसावट के पहिले, समस्त बड़े नगरों में 75 प्रतिशत श्रमिक रेल्वे एवं बसों से यात्रा करते थे। परंतु आज केवल 5 प्रतिशत नागरिक ही पब्लिक वाहनों का उपयोग, एक स्थान से दूसरे स्थान पर आने जाने के लिए, करते हैं। समस्त नागरिकों के पास अपनी अपनी कार है एवं केवल स्वयं ही उस कार में वे यात्रा करते हुए पाए जाते हैं। इससे पेट्रोल, डीजल एवं गैस की खपत में बेतहाशा बृद्धि दर्ज हुई है। द्वितीय विश्व युद्ध तक अमेरिका कच्चे तेल का एक निर्यातक देश हुआ करता था परंतु आज अमेरिका अपनी कच्चे तेल की कुल आवश्यकता का एक तिहाई भाग आयात करता है।

अमेरिका में वर्ष 2000 में विदेशी व्यापार घाटा 38,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर का था जो 2021 में बढ़कर 86,100 करोड़ अमेरिकी डॉलर का हो गया है। 1970 के दशक तक, लगभग प्रत्येक वर्ष, अमेरिका के पास विदेशी व्यापार आधिक्य हुआ करता था। परंतु, इसके पश्चात अमेरिका की स्थिति विदेशी व्यापार के मामले में लगातार बिगड़ती चली गई है।

अमेरिका में उच्च आय वाले क्षेत्रों में रोजगार के अवसर लगातार कम हो रहे हैं। अमेरिका में प्रति घंटा औसत मजदूरी की दर वर्ष 1973 से (मुद्रा स्फीति की दर के समायोजन के पश्चात) लगभग नहीं के बराबर बढ़ी है। अमेरिका में आय की असमानता लगातार बढ़ती जा रही है। फेडरल बजट घाटा अब अरक्षणीय (अनसस्टेनेबल) स्तर पर पहुंच गया है। विदेशी व्यापार घाटा के लगातार बढ़ते जाने से आज अमेरिका 100 करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक की राशि का ऋण प्रतिदिन ले रहा है। देश में लगातार बढ़ रही गरीबी अब एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी की ओर स्थानांतरित हो रही है। कुल मिलाकर उक्त वर्णित अमेरिकी अर्थव्यवस्था की वर्तमान हालत को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि पश्चिमी आर्थिक दर्शन पर टिका पूंजीवादी मॉडल पूर्णतः असफल हो रहा है। इसी कारण से अमेरिकी अर्थशास्त्रियों द्वारा भी अब यह कहा जाने लगा है कि पूंजीवादी मॉडल समाप्ति की ओर अग्रसर हो रहा है अतः साम्यवाद एवं पूंजीवाद के बाद एक तीसरे आर्थिक रास्ते की अब सख्त आवश्यकता है, जो संभवतः केवल भारत ही उपलब्ध कर सकता है।

संपादकीय

शांति का रास्ता

कोलकाता के आरजी कर अस्पताल के मुद्दे पर आंदोलनकारी जूनियर डॉक्टर सुप्रीम कोर्ट के अल्टीमेटम के बावजूद अभी तक काम पर नहीं लौटे हैं, जो चिंता की बात है। इस अस्पताल में प्रशिक्षु डॉक्टर के साथ कथित दुष्कर्म और उसकी हत्या को लेकर पिछले 9 अगस्त से डॉक्टरों का आंदोलन जारी है। निसंदेह यह बहुत जघण्य घटना है, जिससे हर व्यक्ति दुखी है, और उससे भी ज्यादा दुखद यह है कि अब तक पीड़िता के परिजनों को न्याय नहीं मिला है। इस मामले को लेकर पीडिता के सहकर्मियों की हड़ताल वैधानिक और न्यायसंगत है। लोकतंत्र में राजनीतिक-सामाजिक संगठनों, व्यक्ति और व्यक्तियों के समूह को अपनी मांगों को लेकर सरकार के खिलाफ शांतिपूर्ण ढंग से विरोध-प्रदर्शन और हड़ताल करने का संवैधानिक अधिकार है। लेकिन हड़ताल की वजह से सैकड़ों किलोमीटर दूर से आए मरीज और उनके तीमारदारों को परेशानियों का सामना करना पड़.रहा है। सरकार ने दावा किया है कि हड़ताल से 23 मरीजों की मौत हो गई है। जाहिर है कि इस पहलू पर मानवीय दृष्टि से विचार करते हुए डॉक्टरों को काम पर लौट आना चाहिए। वस्तुतः प्रशिक्षु डॉक्टर के साथ कथित दुष्कर्म और हत्या के मामले में राज्य की पुलिस और प्रशासन ने जिस तरह से गुमराह और भ्रमित करने वाला रवैया अपनाया उससे डॉक्टरों के साथ आम लोगों में भी निराशा है। पुलिस, प्रशासन और सरकार के ऊपर से सभी का भरोसा उठ गया है। डॉक्टरों के काम पर नहीं लौटने की यह एक बड़ी वजह हो सकती है। मंगलवार को मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने आंदोलनकारी डॉक्टरों को वार्ता के लिए राज्य सचिवालय में आमंत्रित किया था लेकिन डॉक्टरों को निमंत्रण की भाषा पर आपत्ति थी। इसलिए उन्होंने इसे ठुकरा दिया। डॉक्टरों का कहना है कि पीड़िता के परिवार को न्याय मिले और कार्यस्थल पर उनकी सुरक्षा सुनिश्चित की जाए। जब तक यह नहीं होगा हमारी हड़ताल जारी रहेगी। ये दोनों मांगें जायज हैं और राज्य सरकार को इन्हें तुरंत मानना सुनिश्चित करना चाहिए। राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी स्वयं महिला हैं, और राज्य की मुखिया होने के नाते उनसे अपेक्षा की जाती है कि महिला प्रशिक्षु डॉक्टर को न्याय दिलाने के लिए वह स्वयं पहल करें।

चिंतन-मनन

जीवन एक क्रिकेट मैच

प्रांतिकारी संत तरुणसागरजी ने क्रिकेट की व्याख्या करते हुए कहा कि जीवन एक क्रिकेट है, धरती की विराट पिच पर समय बॉलिंग कर रहा है। शरीर बल्लेबाज है, परमात्मा के इस आयोजन पर अम्पायर धर्मराज हैं। बीमारियाँ फील्डिंग कर रही हैं, विकेटकीपर यमराज हैं, प्राण हमारा विकेट है, जीवन एक क्रिकेट है। इस डे-नाइट मैच में हमें रचनात्मकता के जलवे दिखाने हैं और साँसों के सीमित ओवर में सृजन के रन बनाने हैं। गिल्लियाँ उड़ने का अर्थ साँस का टूट जाना है, एलबीडब्ल्यू यानी हार्ट-अटैक। दुर्घटना में मरने वाला रन आउट कहलाता है और सीमा पर शहीद होने वाला कैच आउट कहा जाता है। आत्महत्या का अर्थ हिट विकेट और हत्या स्टम्प आउट हो जाना है।

कभी-कभी कुछ आप्रामक खिलाड़ी जल्दी ही पैवेलियन लौट जाते हैं, लेकिन पारी ऐसी खेलते हैं कि कीर्तिमान बना जाते हैं, सबका अपना-अपना रन रेट है, जीवन एक क्रिकेट है। घर आए अतिथि को भोजन के लिए पूछा करो, भोजन के लिए नहीं पूछ सकते तो पानी के लिए पूछा करो, पानी का नहीं पूछ सकते हैं तो बैठने के लिए आसन दिया करो। बैठने के लिए आसन भी नहीं दे सकते तो दो मीठे बोल बोला करो। दो मीठे बोल नहीं बोल सकते, मुस्कुराहट भी नहीं दे सकते तो चुल्लू भर पानी में डूब मरो। उक्त प्रेरक विचार उन्होंने प्रवचनमाला में व्यक्त किए। हाथों में मोबाइल हो न हो, चेहरे पर स्माइल हर हाल में होना चाहिए। आदमी स्मार्ट मोबाइल से नहीं, मुस्कुराहट से बनता है। हँसना पुण्य है और हँसाना परमपुण्य है। जब आप हँसते हैं तो आप ईश्वर की आराधना करते हैं। जब आप किसी रोते हुए को हँसाते हो तो ईश्वर आपकी आराधना करता है। दुनिया के सामने रोने की आवश्यकता नहीं है। जब पाँच सेकंड मुस्कुराने से फोटो अच्छी आ सकती है तो जिंदगी भर मुस्कुराने से जिंदगी क्यों नहीं अच्छी हो सकती।

हरियाणा चुनावी मुद्दों से मिल रहे हैं सत्ता-विरोधी संकेत

ललित गर्ग

हरियाणा विधानसभा चुनाव के मतदान की तारीख जैसे-जैसे नजदीक आती जा रही है, राजनीतिक दलों में उठापटक हो रही है, दलबदल का सिलसिला जारी है, गठबंधन टूट रहे हैं जो नये जुड़ रहे हैं। प्रदेश में तीसरी बार सरकार बनाने को आतुर भाजपा के सामने इस बार चुनौतियां कम नहीं हैं, वही कांग्रेस लोकसभा चुनाव में मिली सफलता से अति-उत्साहित दिखाई दे रही है, आम आदमी पार्टी भी सभी सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े कर राजनीतिक समीकरणों को प्रभावित करने में जुटी है। हरियाणा में तू डाल-डाल, मैं पात-पात की कशमकश जोरों से चल रही है। विनेश और बजरंग पहलवान को शामिल करके कांग्रेस खुशियां मना रही थी, लेकिन ह्यआपह्ल से हो रहा समझौता टूटते ही कांग्रेस की खुशियां कुछ हद तक फीकी दिखाई देने लगीं। फिर भी भूपिंदर सिंह हुड्डा के नेतृत्व में कांग्रेस हरियाणा में अपनी बहुमत की सरकार बनाने का दावा कर रही है। भाजपा भी यहां अपनी सरकार बचाने के लिए हरसंभव प्रयास कर रही है। इस बार हरियाणा के चुनावों पर समूचे देश की नजरे लगी है। हरियाणा विधानसभा चुनावों के लिए विपक्षी इंडिया गठबंधन में शामिल कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के बीच गठबंधन की बातचीत टूटने के बाद से कांग्रेस के जीत के सपनों को सेंध लगी है। आप ने प्रत्याशियों की दो-दो सूची जारी कर दी है, सभी 90 सीटों पर चुनाव लड़ने का एलान भी कर दिया है। फिर भी दोनों दलों में कुछ लोग हैं, जो अभी गठबंधन की उम्मीद छोड़ने को तैयार नहीं हैं, क्योंकि यही गठबंधन कांग्रेस की जीत का बड़ा कारण माना जा रहा है। इस गठबंधन के टूटन से भाजपा की निराशा के बादल कुछ सीमा तक छंटते हुए दिखाई दे रहे हैं। लेकिन भाजपा की जीत अभी भी निश्चित नहीं मानी जा रही है। भले ही ह्यआपह्ल को दूर रखकर हरियाणा कांग्रेस की राज्य इकाई खुश हो रही हो, लेकिन इसका फायदा भाजपा को ही होने वाला है क्योंकि ह्यआपह्ल प्रत्याशियों को जहां भी, जितने भी वोट मिलने वाले हैं, वे जाएंगे कांग्रेस के खाते से ही। इस त्रिकोणीय संघर्ष का फायदा भाजपा को ही मिलेगा।

हरियाणा कांग्रेस एवं उसके नेता प्रारंभ से ही स्वतंत्र चुनाव लड़ने के पक्ष में रहे हैं। प्रदेश कांग्रेस नेताओं के मुताबिक, दस वर्षों की सत्ता-विरोधी लहर के मद्देनजर भाजपा 2019 से कमजोर स्थिति में है, जब उसे 90 सीटों की विधानसभा में 40 सीटें ही मिल पाई थीं। हाल ही में सम्पन्न लोकसभा चुनावों के नतीजे भी संकेत दे रहे हैं जहां पिछली बार की दसों सीटों की जगह उसे सिर्फ 5 सीटें मिलीं। आप को कांग्रेस के साथ गठबंधन में यहां एक लोकसभा सीट पर चुनाव लड़ने का मौका मिला था, लेकिन वह हार गई थी। इसी स्थिति को देखते हुए ही प्रदेश कांग्रेस आप के साथ गठबंधन को पूरी तरह गैर जरूरी मान रहा है। लेकिन कांग्रेस का राष्ट्रीय नेतृत्व राजनीति गणित को देखते हुए आप के साथ गठबंधन को लेकर निरन्तर प्रयास करता रहा। यही कारण दोनों दल गठबंधन के लिए बातचीत की मेज पर बैठे। राहुल गांधी अब लोकसभा में विपक्ष के नेता हैं और उनकी प्राथमिकता यह है कि राष्ट्रीय स्तर पर विपक्ष के इंडिया गठबंधन की एकजुटता और उसकी मजबूती में किसी तरह की कमी न दिखे ताकि केंद्र सरकार और भाजपा पर उसका दबाव बना रहे। हरियाणा में आप पार्टी कोई चमत्कार घटित करने की स्थिति में नहीं है। उसकी भूमिका सत्ता के गणित को प्रभावित करना मात्र है। कुछ सीटें उसके खाते में जा सकती है, जिसका रोल भविष्य की सत्ता की राजनीति में हो सकता है। अरविन्द केजरीवाल के जातीय गणित के कारण ह्यआपह्ल पार्टी कांग्रेस को भारी नुकसान पहुंचा सकता है तो कुछ नुकसान भाजपा का भी कर सकती है। कम वोटों के अंतर से होने वाली जीत-हार में ह्यआपह्ल पार्टी का असर साफ दिखने वाला है। देर से ही सही, हो सकता है कांग्रेस नेतृत्व को यह बात समझ में आ जाए, लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी होगी। हालांकि चुनाव परिणाम आने पर ही असल माजरा समझ आएगा, लेकिन यह तय है कि भाजपा को दस साल के राज के बावजूद कमजोर नहीं माना जा सकता। लोकसभा चुनाव में भाजपा की सीटों में आई कमी के बाद विपक्ष को जो थोड़ी धार मिली है, उसका जो मनोबल बढ़ा था, उसके मद्देनजर ये चुनाव अहम माने जा रहे हैं। हरियाणा के बाद महाराष्ट्र और झारखंड में भी चुनाव होने हैं। दिल्ली विधानसभा के चुनाव भी ज्यादा दूर नहीं हैं। ऐसे में हरियाणा विधानसभा चुनाव में अगर इंडिया गठबंधन साथ मिलकर मजबूती से लड़ता और अच्छी जीत दर्ज करा पाता तो उसका असर न केवल आने वाले विधानसभा चुनावों पर बल्कि पूरे विपक्ष के मनोबल पर पड़ने वाला था। इंडिया गठबंधन के कारण सबसे ज्यादा नुकसान भाजपा को ही झेलना पड़ता है। इसलिये इस गठबंधन की मजबूती ही भाजपा के लिये असली चुनौती है। मध्य प्रदेश विधानसभा चुनावों को याद करें तो इस पर लगभग आम राय है कि वहां कांग्रेस को प्रदेश नेतृत्व के अति आत्मविश्वास का नुकसान हुआ। असल सवाल विपक्षी वोटों के बंटवारे का है। जिस तरह से आप प्रत्याशियों की सूची जारी कर रही है, उससे साफ है कि वह इसी पहलू की ओर इशारा कर रही है कि उसे सीटें भले न आएं, कांग्रेस को कई सीटों का नुकसान तो हो ही सकता है। भाजपा लम्बे समय से हरियाणा में कमजोर बनी हुई है, भले ही सरकार उसी की हो। अपनी लगातार होती कमजोर स्थितियों में सुधार लाने एवं प्रदेश में भाजपा को मजबूती देने के लिये ही लोकसभा चुनाव से ठीक पहले मनोहर लाल के स्थान पर ओबीसी वर्ग के नायब सिंह सैनी को मुख्यमंत्री बनाकर सत्ता विरोधी कारकों को कम करने की कोशिश की थी, लेकिन भाजपा को उसका पूरा लाभ नहीं मिल सका। इसके मुख्य कारण सत्ता विरोधी वातावरण बना तो किसानों व बेरोजगारों की नाराजगी बड़ी चुनौती बन कर सामने आयी। भाजपा द्वारा पेश किए गए तीन विवादास्पद कृषि कानून हरियाणा में विवाद का मुख्य मुद्दा बने हुए है। राज्य के किसानों ने इन कानूनों का विरोध किया, उनका दावा है कि ये उनकी फसल की बिक्री और आय पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। केन्द्र की अग्निपथ योजना भी इन चुनावों में एक विवादास्पद मुद्दा बनी हुई है। इसने राज्य के युवाओं में चिंता पैदा कर दी है। आलोचकों का मानना है कि यह स्थायी भर्ती से दूर जाने का कदम है, जिससे सैनिकों के लिए रोजगार में अस्थिरता पैदा होती है। इन चुनावों में बेरोजगारी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है, राज्य की बेरोजगारी दर राष्ट्रीय औसत से अधिक है। युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने में सरकारी नीतियों पर काफी बहस चल रही है, जिससे यह चुनावों में एक केंद्रीय मुद्दा बन गया है। पहलवानों से जुड़ा मामला और बृज भूषण शरण सिंह पर लगे आरोप भी हरियाणा चुनाव में अहम मुद्दा बन गए हैं। पहलवानों ने सिंह पर उन्हें न्याय और सुरक्षा प्रदान करने में विफल रहने का आरोप लगाया है, जिससे हरियाणा में राजनीतिक परिदृश्य में एक नया आयाम जुड़ गया है।

दिल्ली में यमुना : निर्मल होने का रास्ता चुनौतीपूर्ण

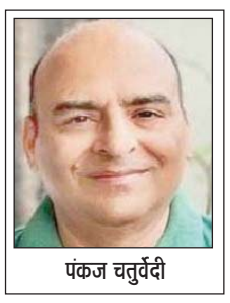

पंकज चतुर्वेदी

सावन बीत गया, भादों भी आधा निकल गया दिल्ली और उसके आसपास यमुना नदी के जल-ग्रहण क्षेत्र कहलाने वाले इलाकों में पर्याप्त पानी बरसा, लेकिन न नदी में पानी दिखा और न ही पानी से शहर की मुक्ति। जिस समय नदी में पानी लबालब होना चाहिए था, तब कम से कम दो बार दो इसमें अमोनिया की मात्रा अधिक हो गई। कई हजार करोड़ के खर्च, ढेरों वादों और योजनाओं के बाद भी लगता नहीं है न कि दिल्ली में यमुना को 2026 तक निर्मल बना देने का लक्ष्य पूरा हो पाएगा। समझना होगा कि यमुना पर लाख एसटीपी लगा कर नालों के पानी को शुद्ध कर लें लेकिन जब तक यमुना में नदी का पानी अविरल नहीं आएगा, तब तक इसके हालात तो सुधरने से रहे।

दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) की रिपोर्ट के अनुसार जुलाई में यमुना में ऑक्सीजन की मात्रा शून्य पाई गई जबकि ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। यमुना की सफाई के लिए केंद्र सरकार ने दिल्ली सरकार को 8,500 करोड़ रुपये दिए लेकिन नतीजा शून्य है। असल में दिल्ली में यमुना को साफ-सुथरा बनाने की जो भी नीति हैं, उनका मूल यह है कि दिल्ली में यमुना, गंगा और भूजल से 1,900 क्यूसेक पानी प्रति दिन प्रयोग में लाया जाता है। इसका 60 फीसद यानी करीब 1,100 क्यूसेक सीवरेज का पानी एकत्र होता है। यदि यह पानी शोधित कर यमुना में डाला जाए तो यमुना निर्मल रहेगी और दिल्ली में पेयजल की किल्लत भी दूर होगी। लेकिन हर समय नजरंदाज किया जाता है कि नदी में बाकी जल कहां से आएगा?

ईमानदारी की बात तो यह है कि यमुनोत्री से निकलने वाली जल-धारा, जो मैदान में आ कर गंगा की सबसे बड़ी सखी-सहेली कहलाती है, पहाड़ से उतरने के पहले ही लुप्त हो जाती है। दिल्ली तक जो भी जल आता है वह अधिकांशतः हरियाणा की छोटी नदियों और कारखानों के उत्सर्जन का हिस्सा होता है। बरसात के मौसम के पचहत्तर फीसद दिन बीत जाने के बाद भी दिल्ली में एक भी बार बाढ़ नहीं आई। बाढ़ नदी में जीवन बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पहाड़ों से बह कर आया पानी अपने साथ कई उपयोगी लवण लेकर आता है। वहीं नदी के जल-मार्ग में कूड़े-मलबे के कारण धारा अवरुद्ध होती है, बाढ़ उसे स्वतः साफ कर देती है। इस तरह नदी में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ती है, जो मछलियों और जीवों की प्रजातियों को अनुकूल परिवेश प्रदान करती है।

दिल्ली में यमुना की शुद्धि के मशीनी उपायों से कहीं ज्यादा जरूरी है कि यहां तसल्ली से बाढ़ आए। आखिर, दिल्ली में बाढ़ क्यों नहीं आई? कारण खोज लें तो यह भी समझ आ जाएगा कि मल-जल को साफ करने के उपाय क्यों असफल ही रहते हैं। यमुना की आत्मा सभी नदियों के मानिंद उसके फ्लड प्लेन अर्थात कछार में है। जब नदी यौवन पर हो तो जमीन पर जहां तक उसका विस्तार होता है, वह उसका कछार या फ्लड प्लेन है। अब दिल्ली में तो नदी को फैलने की जगह ही नहीं बची। हजारों निजी और सरकारी निर्माण और नदी के बीचोंबीच खड़े किए गए खंभे यमुना को दिल से बहने ही नहीं देते। सुनिश्चित करने की जरूरत है कि नदी के फ्लड प्लेन को पूरी तरह से खाली रखा जाए। नदियों में आने वाली बाढ़ एक नये जीवन का निर्माण करती है, और एक तरह से जरूरी भी है। बाढ़ से नदी का जलीय जीवन भी बेहतर होता है।

दिल्ली तक यमुना का अवरोध चाहने वाले दिल्ली से हरियाणा और फिर उससे ऊपर पहाड़ तक भी हैं, जिनने अवैध बालू खनन के लिए कई-कई जगह नदी के रास्ते रोके हुए हैं, या अनैतिक तरीके से इसके मार्ग को ही बदल दिया है, ऐसे लोगों की मंशा की पूर्ति के लिए पहाड़ पर ही नदी को बांधने के सरकारी प्रयास भी कम नहीं हैं। देहरादून के कालसी विकास खंड में यमुना नदी पर 204 मीटर ऊंचे बांध की लखवार व्यासी परियोजना 1972 में शुरू हुई। फिर इस पर काम बंद हो गया। 2014 में काम फिर शुरू हुआ और अब यमुना पहाड़ से नीचे उतरने से पहले यहीं घेर ली जाती है। जाहिर है कि जब पहाड़ में ही यमुना का भाव नहीं है तो हथिनी कुंड से वजीराबाद तक यह एक बरसाती नदी ही है। पहाड़ पर इतने बड़े बांध और कई सुरंगों के जरिए पानी के मार्ग को बदलने से महज जल-प्रवाह ही कम नहीं हो रहा है, बल्कि इतने निर्माण का मलबा भी बह कर नीचे आ रहा है, जो नदी को उथला बना रहा है। दिसम्बर 21 के आखिरी हफ्ते में जब व्यासी जलविद्युत परियोजना की एक टरबाइन को प्रयोग के तौर पर खोला गया तो यमुना की धारा लगभग लुप्त हो गई थी। इससे स्पष्ट हो गया था कि इस परियोजना के कारण दिल्ली तक यमुना का रास्ता अब बंद हो गया है।

जब व्यापक निर्माण के कारण पहाड़ों पर जम कर जंगल काटे जाएं तो पारिस्थितिकी हानि के कुप्रभाव से नदी भी नहीं बच सकती। महज सिंचाई और बिजली के सपने में यमुना हरियाणा में आने से पहले ही हार जाती है। इधर, दिल्ली जिस नदी को निर्मल करने के लिए बजट बढ़ाती है, वास्तव में उस नदी का अस्तित्व है ही नहीं।

स्वामी, प्रकाशक और मुद्रक डा0 सरवर जमाल ने आर0 डी0 प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स प्रा0 लि0 प्लाट नं0 16-17 पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, रोड नं0 झ्र 09 पटना झ्र 800013 से छपवाकर कार्यालय 203 बी, ब्लाक रंजीत रेसीडेंसीज, साकेतपुरी, मछली गली, राजा बाजार पटना- 800014 से प्रकाशित किया ।सम्पादकः श्रीमती शबाना प्रवीन पी0 आर0 बी0 एक्ट के तहत खबरों की जिम्मेवार मैनेजिंग एडिटरः डा0 राजीव कुमार, स्थानीय सम्पादकः डा0 नूतन कुमारी, उप सम्पादकः तबस्सुम नवाज PRGI NO:- BIHHIN/2023/86924 E-mail- Newsindogulf730@gmail.com,Mob-9472871824/8544031786 समस्त विवादों का निवारण पटना न्यायालय के अधीन ही होंगे।

देवरा में होगा जूनियर एनटीआर-सैफ अली खान में जबर्दस्त एक्शन, भुला नहीं पाएंगे दर्शक

निर्देशक कोराताला शिवा की आगामी बहुचर्चित फिल्म देवरा पार्ट 1, 27 सितंबर को सिनेमाघरों में रिलीज के लिए पूरी तरह से तैयार है। इस फिल्म को लेकर प्रशंसक बेहद उत्साहित हैं। फिल्म को लेकर जानकारी सामने आई है कि इसमें सैफ और जूनियर एनटीआर के बीच घमासान लड़ाई दिखाई जाएगी, जिसे प्रशंसक कभी भूला नहीं पाएंगे।

देवरा में साउथ सुपरस्टार जूनियर एनटीआर के साथ पहली बार जान्हवी कपूर की जोड़ी नजर आएगी। इस फिल्म में भरपूर रोमांस के साथ धमाकेदार एक्शन भी देखने को मिलेगा। जूनियर एनटीआर और जान्हवी दोनों ही अपनी बहुप्रतीक्षित फिल्म देवरा को लेकर चर्चा में बने हुए हैं। फिल्म का जबर्दस्त तरीके से अब प्रचार भी किया जा रहा है। कोरताला शिवा द्वारा निर्देशित और जूनियर एनटीआर, सैफ अली खान और जान्हवी कपूर अभिनीत देवरा- पार्ट 1 को लेकर जो जानकारी सामने आई है कि इस फिल्म में रोमांस के साथ एक्शन भी देखने को मिलेगा। आरआरआर फेम जूनियर एनटीआर और जान्हवी को एक साथ देवरा में देखने के लिए प्रशंसक इस फिल्म की रिलीज का बेसब्री से इंतजार करते हैं। देवरा के कई पोस्टर के अलावा फिल्म के कई रोमांटिक सॉन्ग भी रिलीज किए जा चुके हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार इस फिल्म में पिता और पुत्र दोनों का किरदार निभाते नजर आएंगे। फिल्म में जान्हवी के अलावा सैफ अली खान, राम्या कृष्णा, प्रकाश राज, श्रीकांत, श्रुति मराठे, नारायण, शाइन टॉम चाको, कलैयारासन, अभिमायु सिंह जैसे कई कलाकार अहम किरकार में नजर आएंगे। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, इस फिल्म में सैफ अली खान मुख्य खलनायक की भूमिका निभा रहे हैं और एनटीआर के साथ उनकी लड़ाई फिल्म का सबसे बड़ा आकर्षण होगी। फिल्म के आखिर में सैफ और एनटीआर के बीच होने वाली घमासान लड़ाई प्रशंसकों के लिए ना भूलने वाला दृश्य होगी। जानकारी के मुताबिक इस फाइट सीन के दौरान एनटीआर शर्टलेस हो जाएंगे। अनिरुद्ध ने संगीत तैयार किया है और अब सभी की निगाहें फिल्म की रिलीज पर टिकी हैं।

मुझे टीवी पर काम करना पसंद नहीं आया

आप उनसे नफरत कर सकते हैं या मोहब्बत, मगर उन्हें आप इग्नोर नहीं कर सकते। हम बात कर रहे हैं सोशल मीडिया की सनसनी कहलाने वाली और नित नए विवाद जगाने वाली उर्फी जावेद की। यूं तो वह हमेशा हेडलाइंस बनाती हैं, मगर इन दिनों खास तौर पर चर्चा में हैं ओटीटी पर अपने नए रियलिटी शो फॉलो कर लो यार को लेकर।

आपने अपने करियर की शुरुआत छोटे पर्दे से की थी। वो दौर कैसा था आपके लिए?

सच कहूं, तो मुझे टीवी पर काम करना इतना पसंद नहीं आया। टीवी में 60-60 घंटे काम किया है बिना ब्रेक के। मतलब कभी-कभी ये लोग 3-4 दिन शूट करवाते हैं, 2 घंटे सो जाओ फिर काम करो। फिर 2 घंटे सो जाओ फिर काम करो। लेकिन इसमें कोई रिस्पेक्ट नहीं है, बहुत बेइज्जती करते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि अगर आप मैन लीड नहीं हो या बहुत बड़े फेमस एक्टर नहीं हो, तो आपको कोई कुछ नहीं समझता टीवी पर। यही वजह है कि मुझे छोटे पर्दे से इतना लगाव नहीं हुआ और पॉलिटिक्स भी बहुत चलती है सेट पर। मुझे लगा कि मैं इन सबका हिस्सा नहीं बन सकती।

लोगों का कहना है कि टीवी से शुरुआत करने के बाद आपने फेमस होने के लिए कपड़े उतारकर शॉर्टकट रास्ता अपनाया?

सच कहूं तो मेरे पास इस रास्ते को अपनाने के अलावा और कोई ऑप्शन नहीं था। अगर लोगों को ये शॉर्टकट लगता है, तो आप भी अपना लो ये रास्ता। उतार कर कपड़े, हो जाओ फेमस। अगर आपको पता है कि इससे सक्सेस मिल रही है और मैंने ये तरीका अपनाया तो आप भी अपना लो। किसने रोका है? सच्चाई ये है कि लोगों को नहीं पता है कि कितना मेहनत करनी पड़ती है, खून-पसीना बहाना पड़ता है सक्सेस के लिए। इसके बावजूद सफलता और शोहरत की गारंटी नहीं होती।

लड़कियों को आम तौर पर जज किया जाता है। मोलेस्टेशन और रेप की दुर्दात घटनाओं के लिए भी उन्हें दोषी माना जाता है। हाल ही में कोलकाता रेप केस और बदलापुर मोलेस्टेशन केस से लोगों में काफी आक्रोश है?

विक्टिम ब्लेमिंग तो हमेशा से चली आ रही है। पहले जब औरत का रेप होता था, तो लोग कहते थे उसकी इज्जत चली गई। अरे, जिसने रेप किया, उसे आप कुछ नहीं कह रहे और जिसके साथ बलात्कार हुआ, उसकी इज्जत जाने की बात कर रहे हो। अगर औरत के साथ कुछ गलत हुआ है, तो इसमें उसकी क्या गलती है? गलत तो वो है, जिसने ये कु-कृत्य किया है। जब तक हम अपराधी को ब्लेम न करते हुए विक्टिम को ब्लेम करते रहेंगे, तब तक अपराध रुकेंगे नहीं। मुझे नहीं लगता कि दुनिया से रेप खत्म हो सकता है। समाज का वीकर जेंडर औरत है, तो उसे दबाना आपके लिए आसान होता है। मैं समझती हूं, रेप वैसे भी लस्ट इश्यू नहीं है। ये पावर का मुद्दा है।

आपके रियलिटी शो की बात करूं, तो कुछ इसे आपकी ईमानदार कोशिश बता रहे हैं, मगर कुछ इसे किम कार्दाशियन के शो की सस्ती कॉपी कह रहे है। आप इस पर क्या कहेंगी?

सस्ती कॉपी है तो क्या? उनका बहुत बजट है, हमारा सस्ता है, तो क्या करें? बजट नहीं था अपने पास। बजट बढ़ जाएगा तो फर्स्ट कॉपी बन जाएगी। ये पहला नहीं है। इससे पहले गौहर खान और निगार खान का खान सिस्टर्स शो आया था, मलाइका अरोड़ा का भी शो आ चुका है। पहले भी ऐसे कई उदाहरण हैं। बात बस यही है कि मेरी और किम की लाइफ में बहुत-सी समानताएं हैं। भाई-बहन सेम हैं, मैं भी पॉपुलर हूं, वह भी पॉपुलर हैं। हमारे बीच की समानताओं के कारण लोग हमारी तुलना कर रहे हैं, मगर मैं ये जरूर कहना चाहूंगी कि मैंने अपने जीवन को ईमानदारी से सबके सामने प्रस्तुत किया है।

अपने रियलिटी शो के लिए आपको इंडस्ट्री से किस तरह का फीडबैक मिला है?

बहुत अच्छा। मुझे अनन्या पांडे, नेहा धूपिया, रितेश-जेनेलिया, फराह खान ने मैसेजेस किए, तो सोफी चौधरी, भारती सिंह, सामंथा रुथ आदि ने मेरे लिए स्टोरी डाली थी।

देवरा को घर वापसी कहने पर जान्हवी कपूर ट्रोल हुईं

जान्हवी कपूर जूनियर एनटीआर और सैफ अली खान के साथ देवरा पार्ट 1 के साथ तेलुगु सिनेमा में अपनी पहली उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। घोषणा के बाद से ही इस फिल्म को काफी चर्चा मिल रही है। आज ट्रेलर लॉन्च के मौके पर जान्हवी ने कहा कि वह अपनी सभी फिल्मों में जूनियर एनटीआर, जिन्हें तारक के नाम से भी जाना जाता है, के साथ काम करना पसंद करेंगी। यह फिल्म 27 सितंबर को रिलीज होने वाली है। जान्हवी ने कहा, ये मेरी डेब्यू फिल्म है और सच में ऐसा लग रहा है मेरे घर वापसी भी है क्योंकि मेरी पहली तेलुगु फिल्म है। ये बहुत बहुत खास है। इतने उत्साह के साथ आने के लिए आपका बहुत-बहुत शुक्रिया। यहां तक कि मैं भी तारक सर के साथ हर एक फिल्म करना चाहती हूं। मुझे बहुत मजा आया। मैंने बहुत कुछ सीखा और हर कोई जानता है कि मैं हमेशा से उनकी कितनी बड़ी प्रशंसक रही हूं और मुझे लगता है कि उनके साथ काम करने के बाद मैं उनकी और भी बड़ी प्रशंसक बन गई हूं। हालांकि, इस अन्यथा मधुर भावना के एक विशेष हिस्से ने नेटिज़ेंस का ध्यान खींचा, जिन्होंने इसे समस्याग्रस्त पाया। मुद्दा यह था कि जान्हवी कपूर ने देवरा पर काम करने को घर वापसी (इस संदर्भ में, घर वापसी) के रूप में संदर्भित किया, भले ही उनकी माँ, श्रीदेवी ने मुख्य रूप से तमिल सिनेमा में काम किया था, न कि तेलुगु में। इस क्लिप को जल्द ही नेटिज़न्स से प्रतिक्रियाएँ मिलीं। एक ने कहा, क्या घर वापसी का कोई नकारात्मक अर्थ नहीं है? एक यूज़र ने मज़ाक में कहा, यह उनकी पहली फ़िल्म और घर वापसी दोनों ही है एक अन्य ने कहा, श्रीदेवी ने लगभग 90 तमिल फिल्मों में काम किया है और अभी भी श्रीदेवी के चचेरे भाई तिरुपति में हैं। हो सकता है कि वह खुद को बढ़ावा देने के लिए इस भावना का इस्तेमाल कर रही हों। आगामी फिल्म देवरा-पार्ट 1 के निर्माताओं ने मंगलवार को फिल्म का ट्रेलर जारी किया, जिसमें खून-खराबा, लड़ाई-झगड़े और थोड़ा-बहुत रोमांस दिखाया गया है। दो मिनट से ज़्यादा लंबे इस ट्रेलर में आम आदमी और बॉलीवुड स्टार सैफ अली खान के बीच एक महामुकाबला दिखाया गया है।

मुंबई में सन ऑफ सरदार 2 की शूटिंग कर रही हैं मृणाल ठाकुर

अभिनेत्री मृणाल ठाकुर ने खुलासा किया कि वह अपनी आगामी फिल्म सन ऑफ सरदार 2 की शूटिंग के लिए मुंबई वापस आ गई हैं। मृणाल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम के स्टोरी सेक्शन पर अपनी वैनिटी वैन की मोनोक्रोम तस्वीर शेयर की। तस्वीर पर मुंबई मेरी जान और सन ऑफ सरदार 2 लिखा था। बैकग्राउंड स्कोर में पंजाबी एमसी का गाना ढोल जगीरो दा बज रहा था। सन ऑफ सरदार 2 अश्विनी धीर द्वारा निर्देशित 2012 की एक्शन-कॉमेडी फिल्म सन ऑफ सरदार का सीक्वल है। विजय कुमार अरोड़ा द्वारा निर्देशित इस दूसरी फिल्म में अजय देवगन और संजय दत्त भी हैं। मृणाल हाल ही में स्कॉटलैंड से छुट्टियां मनाकर लौटी हैं। अभिनेत्री ने शनिवार को इंस्टाग्राम स्टोरी पर अपनी ड्रेसिंग टेबल, आईने और कुर्सी की तस्वीर साझा की। मृणाल ने यह नहीं बताया कि वह किस फिल्म की शूटिंग कर रही हैं। हालांकि, उनकी आने वाली फिल्मों में पूजा मेरी जान और है जवानी तो इश्क होना है भी शामिल हैं।

मेरे लिए सबसे पहले मायने रखती हैं आराध्या

बॉलीवुड अभिनेत्री ऐश्वर्या राय अपनी बेटी आराध्या बच्चन के साथ अक्सर कई मौके पर साथ देखी जा चुकी हैं। कुछ समय पहले ऐश्वर्या और आराध्या को अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट की शादी में एक साथ देखा गया था। ऐश्वर्या जहां भी जाती हैं आराध्या अक्सर उनके साथ होती हैं।

एक पुराने इंटरव्यू में ऐश्वर्या ने आराध्या को परी बताया और कहा था कि उनके लिए सबसे पहले आराध्या हैं बाकी सभी बाद में आते हैं। ऐश्वर्या राय बच्चन बॉलीवुड की एक ऐसी अभिनेत्री हैं, जिनकी एक झलक पाने को प्रशंसक बेकरार रहते हैं। ऐश्वर्या अपनी बेटी आराध्या बच्चन के प्रति हमेशा सचेत रहती हैं क्योंकि वह एक समर्पित मां हैं। ऐश्वर्या और अभिषेक बच्चन ने 20 अप्रैल 2007 में शादी रचाई थी। इसके बाद 16 नवंबर, 2011 को उन्होंने अपनी बिटिया रानी आराध्या का स्वागत किया। ऐश्वर्या जहां भी जाती हैं अपनी बेटी आराध्या को साथ में ले जाती हैं। आराध्या अक्सर अपनी मां के साथ शूटिंग, कार्यक्रम और छुट्टियों में भी अपनी मां के साथ ही जाती देखी गई हैं। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार ऐश्वर्या राय ने एक इंटरव्यू के दौरान कहा था कि आराध्या के जन्म के बाद उनकी प्राथमिकताएं बिल्कुल बदल गई हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, ऐश्वर्या राय ने एक इंटरव्यू में कहा था, जब मैं 18 साल की थी, तब से मैं कई जिम्मेदारियों को निभा रही हूं। मेरा दिन सुबह 5.30 बजे शुरू होता है। जब से मुझे याद है, तब से यह ऐसा ही रहा है। बेशक, आराध्या के बाद मेरी प्राथमिकताएं पूरी तरह बदल गई हैं। आराध्या सबसे पहले आती है, बाकी सब बाद में हैं।

अक्षय कुमार के जन्मदिन पर फैंस को मिला तोहफा, खिलाड़ी की नई फिल्म का एलान

बॉलीवुड के खिलाड़ी अक्षय कुमार के जन्मदिन के मौके पर फैंस को खास तोहफा मिला है। उनकी अगली फिल्म का एलान हो गया है। अक्षय की पिछली कई फिल्में फ्लॉप रही हैं। न एक्शन का दम दिखा न कॉमेडी काम आई। अब आगामी फिल्म में उन्होंने हॉरर पर दाव खेला है। इस फिल्म के फर्स्ट लुक के साथ टाइटल का भी एलान हो गया है। इस फिल्म का निर्देशन प्रियदर्शन कर रहे हैं और करीब डेढ़ दशक बाद अक्षय कुमार और प्रियदर्शन इस फिल्म के जरिए साथ काम कर रहे हैं। अक्षय कुमार की आगामी फिल्म का नाम भूत बंगला है। एक्टर ने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट शेयर किया है और साथ ही वीडियो है। इसमें वे दूध से भरा कटोरा हाथ में लिए नजर आ रहे हैं। एक्टर के कंधे पर काली बिल्ली सवार है। खिलाड़ी कुमार की यह फिल्म अगले साल यानी 2025 में रिलीज होगी। अक्षय कुमार ने इसके साथ लिखा है, वर्षों से जन्मदिन पर आप सभी से मिल रहीं शुभकामनाओं के लिए तहेदिल से शुक्रिया! इस साल इस खास दिन का जश्न भूत बंगला के फर्स्ट लुक के साथ मनाया जा रहा है। करीब 14 साल बाद प्रियदर्शन के साथ जुड़ते हुए मैं बेहद उत्साहित हूं। यह एक ड्रीम प्रोजेक्ट है, जिसका आना काफी वक्त से बाकी था। इस शानदार यात्रा को आप सभी के साथ साझा करने के लिए बहुत बेकरारी से इंतजार है। कुछ जादुई होने वाला है। एकता कपूर इस फिल्म का निर्माण कर रही हैं। फिल्म की कहानी काले जादू पर आधारित बताई जा रही हैं। अक्षय ने बताया कि यह फिल्म अगले साल सिनेमाघरों में रिलीज होगी। अक्षय की इस पोस्ट पर यूजर्स के दिलचस्प कमेंट आ रहे हैं। एक यूजर ने लिखा, आखिर 14 साल बाद दो शानदार लोग साथ जो

आ रहे हैं तो कुछ कमाल तो होने वाला है। एक यूजर ने लिखा, हॉरर में आपका अंदाज देखे वाला होगा। एक यूजर ने लिखा, कॉमेडी, एक्शन किंग और लव गुरू, अब हॉरर में दम दिखाएंगे। मालूम हो कि इस साल अक्षय कुमार की फिल्म बड़े मियां छोटे मियां रिलीज हुई। इसमें वे टाइगर श्रॉफ के साथ नजर आए। लेकिन बॉक्स ऑफिस कलेक्शन की बात करें तो फिल्म औंधे मुंह गिरी। इसके बाद उनकी फिल्म सिरफिरा आई वह भी बेदम रही। इन दिनों वे खेल खेल में को लेकर चर्चा में हैं, जो बीते महीने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आई थी, लेकिन इसे भी दर्शक नहीं मिले। अब देखना होगा कि हॉरर में खिलाड़ी क्या कमाल करते हैं।

रिलेशनशिप में झूठ बोलने वालों से नफरत करती हैं तमन्ना

तमन्ना भाटिया इन दिनों स्त्री 2 में अपने आइटम नंबर आज की रात को लेकर चर्चा में चल रही हैं। तमन्ना अपने बॉयफ्रेंड विजय वर्मा के साथ अपने रिश्ते को लेकर काफी सुर्खियां बटोरती हैं। अब हाल ही में, तमन्ना ने रिलेशनशिप, हार्टब्रेक के बारे में बात की है राज शमानी के साथ एक इंटरव्यू में तमन्ना ने अपने जीवन के सपोर्ट सिस्टम और प्यार के बारे में बात की है। अभिनेत्री ने रिश्ते में रेड फ्लैग के बारे में बात करते हुए कहा कि पार्टनर पर कंट्रोल करना और झूठ बोलना रेड फ्लैग है, अभिनेत्री ने कहा कि वह ऐसे लोगों के साथ नहीं रह सकती हैं। इसके अलावा तमन्ना ने बताया कि पिछले रिश्ते में उन्हें बहुत ज्यादा गिफ्ट्स मिलते थे तो वह नाराज हो जाती थीं, अभिनेत्री को ऐसा लगता था कि वो रिलेशनशिप में प्राइज टैग लगा रहे हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने पैरालंपिक पदक विजेताओं से की मुलाकात, परमार ने लिया पीएम का आटोग्राफ

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को यहां अपने आवास पर भारत के पैरालंपियन खिलाड़ियों से मुलाकात की और उन्हें हाल ही में संपन्न पेरिस खेलों में रिकॉर्ड 29 पदक जीतने के लिए बधाई दी। खेल मंत्रालय द्वारा साझा किए गए 43 सेकेंड के वीडियो में प्रधानमंत्री को पैरालंपियन पदक विजेताओं को बधाई देते और उनसे बात करते हुए देखा जा सकता है।

बातचीत के दौरान खेल मंत्री मनसुख मांडविया और भारतीय पैरालंपिक समिति (पीसीआई) के प्रमुख देवेंद्र झाझडिया भी मौजूद थे। महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल (एसएच1) स्पर्धा में लगातार दूसरा पैरालंपिक स्वर्ण जीतने वाली निशानेबाज अवनि लेखरा और पैरालंपिक पदक जीते वाले भारत के पहले जूडो खिलाड़ी दृष्टिबाधित कपिल परमार उन लोगों में शामिल थे जिन्हें प्रधानमंत्री के साथ तस्वीर खिंचवाते देखा गया।

परमार को प्रधानमंत्री मोदी से अपने पदक पर हस्ताक्षर करवाते देखा गया। भारत ने पैरालंपिक खेलों में 29 पदक जीतकर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया जिसमें अभूतपूर्व 7 स्वर्ण, 9 रजत और 13 कांस्य पदक शामिल हैं। पेरिस खेलों में भारत के 84 सदस्यीय दल ने हिस्सा लिया और तीन साल पहले तोक्यो खेलों में हासिल किए गए 19 पदकों के पिछले सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन को पीछे छोड़ दिया।

इन खेलों के दौरान भारत ने पहली बार एथलेटिक्स की ट्रैक स्पर्धओं में पदक जीतने के अलावा तीरंदाजी में पहली बार स्वर्ण (हरविंदर सिंह के माध्यम से) पदक जीता। स्वदेश लौटने पर पैरालंपियन खिलाड़ियों को सरकार द्वारा सम्मानित किया गया है और खेल मंत्री मांडविया ने स्वर्ण पदक विजेताओं को 75 लाख रुपए, रजत पदक विजेताओं को 50 लाख रुपए और कांस्य पदक जीतने वाले खिलाड़ियों को 30 लाख रुपये का पुरस्कार दिया। राकेश कुमार के साथ मिलकर कांस्य पदक जीतने वाली बिना हाथ वाली तीरंदाज शीतल देवी जैसे मिश्रित टीम स्पर्धाओं में पदक जीतने वाले खिलाड़ियों को 22.5 लाख रुपए की राशि मिली।

भारत ने कोरिया को हराकर एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी में जीत की लय जारी रखी

हुलुनबुइर (चीन) (एजेंसी)। गत चैम्पियन भारत ने बृहस्पतिवार को यहां हीरो एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी हॉकी टूर्नामेंट में कोरिया को 3-1 से हराकर लगातार चौथी जीत दर्ज की। पेरिस ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता भारत ने इससे पहले चीन को 3-0 से, जापान को 5-0 और पिछले साल की उप विजेता मलेशिया को 8-1 से मात दी।

कोरिया के खिलाफ भारत के लिए अराईजीत सिंह हुंडल ने आठवें मिनट में और 43वें मिनट में दो गोल दागे। कोरिया की ओर से एकमात्र गोल जिहुन यांग ने 30वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर पर किया। पहले ही सेमीफाइनल में स्थान सुनिश्चित कर चुकी भारतीय टीम अब शनिवार को अपने अंतिम लीग मैच में चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान से भिड़ेगी।

छह टीमों के टूर्नामेंट के लीग चरण से शीर्ष चार टीमें शनिवार को होने वाले सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई करेंगी जबकि फाइनल रविवार को खेला जायेगा।

विराट कोहली इतिहास रचने से मात्र 58 रन दूर, बांग्लादेश के खिलाफ बनाएंगे नया कीर्तिमान

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम 19 सितंबर से बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट सीरीज में उतरेगी तो सभी की निगाहें विराट कोहली पर होंगी। कोहली बांग्लादेश टेस्ट सीरीज में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में विश्व रिकॉर्ड बनाने के लिए तेंदुलकर को पीछे छोड़ सकते हैं। विराट कोहली को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 27,000 रन पूरे करने के लिए 58 रनों की जरूरत है।

विराट कोहली और सचिन तेंदुलकर के बीच अक्सर तुलना की जाती रही है, हालांकि सचिन हमेशा कहते रहे हैं कि बाद वाले का कोई मुकाबला नहीं है। कोहली के नाम 80 अंतरराष्ट्रीय शतक हैं और शतकों की संख्या के मामले में वह तेंदुलकर (100) के बाद दूसरे स्थान पर हैं।

तेंदुलकर अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सबसे तेज 27,000 रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं जिन्होंने 623 पारी (226 टेस्ट पारी, 396 वनडे पारी, 1 टी20 पारी) में ऐसा किया है। कोहली ने अब तक सभी प्रारूपों में 591 पारियां खेली हैं और 26942 रन बनाए हैं। अगर कोहली अपनी अगली आठ पारियों में 58 रन और बना लेते हैं जो कि बहुत संभव है तो वह अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के 147 साल के इतिहास में 600 से कम पारियों में 27,000 रन बनाने वाले पहले क्रिकेटर बन जाएंगे।

अब तक तेंदुलकर के अलावा ऑस्ट्रेलिया के रिकी पोंटिंग और श्रीलंका के कुमार संगकारा ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 27000 से ज़्यादा रन बनाए हैं। इस बीच, संभावना है कि एफ्रो-एशिया कप को फिर से शुरू किया जा सकता है। अगर यह टूर्नामेंट वाकई शुरू होता है, तो विराट कोहली के बाबर आजम के साथ गेंदबाजी करने या शाहीन अफरीदी के जसप्रीत बुमराह के साथ मिलकर गेंदबाजी करने की संभावना खुल सकती है।

आईपीएल 2025: दिल्ली कैपिटल्स में हो सकते हैं बड़े बदलाव, ऋषभ पंत के हाथ से जाएगी कप्तानी?

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन इसी साल होना है, लेकिन उससे पहले हर फ्रेंचाइजी कितने खिलाड़ियों को रिलीज और रिटेन करेगी ये सबसे बड़ा सवाल है। वहीं दिल्ली कैपिटल्स के कप्तान ऋषभ पंत अभी तक कई बार दमदार प्रदर्शन कर चुके हैं। लेकिन एक्सीडेंट के कारण से वह आईपीएल 2023 में नहीं खेल पाए थे। इसके बाद जब 2024 सीजन में उन्होंने कमबैक किया तो खुद को साबित किया। लेकिन उनका प्रदर्शन कुछ खास नहीं रहा। दिल्ली ने पिछले सीजन में 14 मैच खेले थे और 7 जीते थे। अब टीम बड़े बदलाव की ओर से बढ़ रही है।

बता दें कि, रिपोर्ट्स की मानें तो पंत को कप्तानी से हटाया जा सकता है। लेकिन इसको लेकर किसी

भी तरह की आधिकारिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। मेगा ऑक्शन से पहले दिल्ली में सबसे बड़ा बदलाव कोचिंग स्टाफ को लेकर हुआ। रिकी पोंटिंग ने टीम का साथ छोड़ दिया है। अब खिलाड़ियों को रिलीज करने की बारी है। टीम मेगा ऑक्शन से पहले प्लेयर्स की रिलीज लिस्ट जारी करेगी। इसमें कई बड़े प्लेयर्स का नाम भी शामिल हो सकात है। टीम के पास रिटेन करने का ऑप्शन कम है। इसको लेकर अभी तक संख्या का पता नहीं चल सका है।

अगर पंत की बात करें तो उन्होंने 2016 में आईपीएल डेब्यू किया था। पंत के लिए पहला सीजन कुछ खास नहीं रहा था। लेकिन उन्होंने 2018 में कमाल का प्रदर्शन किया था। ऋषभ पंत ने 2018 के 14 मैचों में 684 रन बनाए थे। उनको टीम ने आईपीएल 2021 में कप्तान बना दिया था। लेकिन अब उनसे कप्तान छिन सकती है। आज तक ने एक रिपोर्ट के हवाले से लिखा है कि पंत की कप्तानी छिन सकती है। टीम के मालिक पिछले सीजन के प्रदर्शन से खुश नहीं थे।

आयरलैंड की महिला टीम ने इंग्लैंड को रोमांचक मुकाबले में हराया

बेलफास्ट (एजेंसी)। एमी मैगुएर (पांच विकेट) की घातक गेंदबाजी के बाद कप्तान गैबी लुईस (72) रनों की शानदार अर्धशतक पारी की बदौलत आयरलैंड की महिला टीम ने इंग्लैंड को रोमांचक एकदिवसीय मुकाबले में हराया दिया है।

154 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी आयरलैंड की सलामी जोड़ी एमी हंटर और कप्तान गैबी लुईस ने अच्छी शुरुआत की। दोनों बल्लेबाजों ने पहले विकेट के लिये 51 रन जोड़े। सातवें ओवर में फ्रेया केम्प ने एमी हंडर (18) को आउट कर इंग्लैंड को पहली सफलता दिलाई। इसके बाद मैडी विलियर्स ने ओर्ला प्रेंडरगैस्ट (11) को आउट कर दिया।

लीह पॉल (22) रन बनाकर आउट हुई। इस दौरान कप्तान गैबी लुईस एक छोर पर डटी रही। नौवें ओवर में 137 के स्कोर पर कप्तान गैबी लुईस के (72) के आउट होने के बाद लगातार तीन और विकेट गिरने से आयरलैंड की टीम संकट में आ गई थी। हालांकि रेबेका स्टोकेल (नाबाद तीन) तथा अलाना डाल्जेल (नाबाद चार) टीम को जीत की ओर ले गई और आयरलैंड ने 22 ओवर में सात विकेट पर 155 रन बनाकर मुकाबला तीन विकेट से जीत लिया।

इंग्लैंड ने इस हार के बावजूद तीन एकदिवसीय मैचों की श्रृंखला 2-1 से जीत ली है। इंग्लैंड की ओर से मैडी विलियर्स ने तीन विकेट लिये। लॉरेन फाइलर को दो विकेट मिले। फ्रेया केम्प ने एक बल्लेबाज को आउट किया। पिछले मैच 275 रनों से करारी हार झेलने के बाद बुधवार की रात तीसरे एकदिवसीय मुकाबले में इंग्लैंड ने टॉस जीतने के बाद पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया।

इंग्लैंड की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने 22 के स्कोर पर सलामी बल्लेबाज एम्मा लैम्ब का विकेट गवां दिया। इसके बाद टैमी ब्यूमोंट ने होली आर्मिटेज के साथ दूसरे विकेट के लिये 43 रन जोड़े। होली आर्मिटेज ने (15), पैगे स्कोल्फील्ड (21) और रयाना मैकडोनाल्ड-गे (17) रन बनाकर आउट हुई। टैमी ब्यूमोंट ने (52) रनों की पारी खेली। आयरलैंड के गेंदबाजी कहर के आगे इंग्लैंड के छह बल्लेबाज दहाई आंकड़े तक भी नहीं पहुंच सके।

हेड के शानदार प्रदर्शन से ऑस्ट्रेलिया ने पहले टी20 में इंग्लैंड को हराया

साउथैम्पटन । ट्रैविस हेड के शानदार प्रदर्शन से ऑस्ट्रेलिया ने यहां पहले ही टी20 क्रिकेट मुकाबले में इंग्लैंड को 28 रनों से हरा दिया। इस मैच में कंगारुओं की जीत के हीरो ट्रैविस हेड रहे। हेड ने 23 गेंदों में 59 रन बनाये। इस जीत के साथ ऑस्ट्रेलिया ने सीरीज में 1-0 की बढ़त बना ली है, वहीं आज सुबह इंग्लैंड ने टॉस जीतकर ऑस्ट्रेलिया का बल्लेबाजी के लिए बुलाया। ऑस्ट्रेलिया के ट्रैविस हेड 59 और मैथ्यू शॉर्ट ने 41 रन बनाकर पावरप्ले के छह ओवरों में ही 86 रन बना दिये। हेड के पावरप्ले में आउट होने के बाद शॉर्ट भी आउट हो गए। इसके बाद जोश इंग्लिस ने 37 रन बनाये। वहीं बाकि बल्लेबाज रन नहीं बना पाये। इस प्रकार ऑस्ट्रेलियाई टीम 19.3 ओवरों में 179 रन पर ही सिमट गयी। वहीं इंग्लैंड की ओर से रीस टोप्ले और सैम कुर्रन ने भी अच्छी गेंदबाजी करते हुए टीम को वापसी कराने के प्रयास किये। टोप्ले ने तीन विकेट जबकि कुर्रन को दो विकेट मिले पर मेजबान टीम के बल्लेबाज किसी भी अवसर का लाभ नहीं उठा सके। लियाम लिविंग्स्टन ही 37 रन बना पाये। ही कप्तान फिल सॉल्ट ने 20 रन बनाए। इस प्रकार इंग्लैंड की पूरी टीम 19.2 ओवरों में ही 151 रन पर आउट हो गयी। ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए इंग्लैंड के बल्लेबाजों को कोई अवसर नहीं दिया। वहीं जेसन बेहरनडॉर्फ ने 3 विकेट जबकि मार्कस स्टोइनिस और एश्टन एगर ने 2-2 विकेट लिए।

बांग्लादेश के खिलाफ बेहतर प्रदर्शन के लिए तैयारी कर रहे शुभमन

नई दिल्ली । भारतीय क्रिकेट टीम के युवा सलामी बल्लेबाज शुभमन गिल आजकल बांग्लादेश के खिलाफ बेहतर प्रदर्शन की तैयारी कर रहे हैं। शुभमन ने कहा कि मुझे नहीं लगता कि आप किसी भी अंतरराष्ट्रीय टीम को कम आंक सकते हैं। इसलिए हम बांग्लादेश के खिलाफ पूरी ताकत से खेलेंगे। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ महीनों में बांग्लादेश ने जिस तरह की क्रिकेट खेली है, खासकर पाकिस्तान में उससे पता चलता है कि अब वह एक अच्छी टीम बन गयी है। इसलिए ये मुकाबला अच्छा होगा। इस बल्लेबाज ने कहा है कि उन्होंने पांच टेस्ट मैचों की सीरीज पहली बार इंग्लैंड के खिलाफ खेली थी जिसके अनुभवों से उनकी बल्लेबाजी बेहतर हुई। इंग्लैंड की उसी सीरीज से उन्हें लाभ हुआ और उनका आत्मविश्वास भी बढ़ा। शुभमन ने कहा कि तब इंग्लैंड के खिलाफ पहला टेस्ट हारने के बाद हम पर दवाब था। उस समय कई अनुभवी खिलाड़ी खेलने के लिए उपलब्ध नहीं थे। ऐसे में उन्हें बेहतर खेलकर अपने को साबित करने का अवसर मिला। शुभमन ने कहा कि मैंने पहले कभी 5 टेस्ट मैच नहीं खेले थे, इसलिए उस सीरीज का अनुभव एक अच्छा अनुभव और रोमांचक था। शुभमन ने 2021 में गाबा में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 91 रन की साहसिक पारी खेलकर सभी का ध्यान खींचा था। वहीं इंग्लैंड दौरे, आईसीसी विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल और 2022 और 2024 की शुरुआत के बीच दक्षिण अफ्रीका दौरे के दौरान खराब प्रदर्शन के बाद उनपर सवाल उठने लगे थे। वहीं शुभमन ने इस साल 6 टेस्ट की 11 पारियों में 49.80 की औसत से 498 रन बनाए हैं, जिसमें 2 शतक और 2 अर्द्धशतक शामिल हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 110 है। गिल ने 25 टेस्ट मैचों की 46 पारियों में 35.52 की औसत से 1,492 रन बनाए हैं, जिसमें 4 शतक और 6 अर्द्धशतक शामिल हैं।

आईओए प्रमुख पीटी उषा ने खेल संहिता के उल्लंघन की शिकायत के बाद कोषाध्यक्ष को नोटिस जारी किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) की अध्यक्ष पीटी उषा ने देश में खेल की इस शीर्ष खेल संस्था के कोषाध्यक्ष सहदेव यादव के चुनाव से राष्ट्रीय खेल संहिता के उल्लंघन की शिकायत के बाद उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी किया है। उषा ने 10 तारीख को लिखे पत्र में यादव को 24 सितंबर तक जवाब देने को कहा है।

यादव को पत्र में उषा ने लिखा, ''मैं आपका ध्यान उस औपचारिक शिकायत की ओर आकर्षित करने के लिए आपको पत्र लिख रही हूं जो पिछले चुनाव में कोषाध्यक्ष पद पर चुनाव लड़ने की आपकी पात्रता से जुड़ी है और हाल में भारतीय ओलंपिक संघ को मिली है।'' पत्र में कहा गया, ''शिकायतकर्ता ने माननीय उच्च न्यायालय के एक फैसले का हवाला दिया है, जो शिकायतकर्ता के अनुसार चुनाव लड़ने की आपकी पात्रता के बारे में

चिंता पैदा करता है।''

पत्र की एक प्रति खेल मंत्री मनसुख मांडविया और अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के एनओसी (राष्ट्रीय ओलंपिक समिति) संबंध विभाग के सहायक निदेशक जेरोमी पोइवी को भी भेजी गई है। शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया है कि यादव और कुछ अन्य अधिकारी अपने पदों पर बने हुए हैं जो खेल संहिता के तहत आयु और कार्यकाल की सीमा संबंधी नियमों का उल्लंघन है। खेल संहिता के तहत विभिन्न पद पर लगातार 12 साल रहने के बाद पद छोड़ना पड़ता है।

यादव इससे पहले भारतीय भारोत्तोलन महासंघ के सचिव थे और 15 साल तक उसके साथ जुड़े रहे। शिकायतकर्ता ने भारतीय राष्ट्रीय राइफल संघ के उपाध्यक्ष अजय पटेल, भारतीय वुशु महासंघ के भूपिंदर सिंह बाजवा और भारतीय नौकायन महासंघ की अध्यक्ष राजलक्ष्मी सिंह देव सहित आईओए के अन्य सदस्यों के खिलाफ भी खेल संहिता का पालन नहीं करने पर इसी तरह की चिंता जताई है।

आईओए ने शिकायतकर्ता की पहचान गोपनीय रखी है। शिकायकर्ता ने इन लोगों को तुरंत आईओए की कार्यकारी समिति से हटाने की मांग की है। इसके बाद आईओए में चल रही खींचतान और तेज हो गई है।

अब से हर दो साल में खेला जाएगा अंडर-19 महिला टी20 एशिया कप : जय शाह

कुआलालंपुर । एशियाई क्रिकेट परिषद (एसीसी) के अध्यक्ष जय शाह ने कहा है कि अब से हर दो साल में महिला अंडर-19 टी20 एशिया कप खेला जाएगा। जय शाह के अनुसार इस नये टूर्नामेंट की शुरुआत से युवाओं को टी20 विश्वकप की तैयारी का भी अवसर मिलेगा। शाह की अध्यक्षता में एसीसी के कार्यकारी बोर्ड की बैठक में इस टूर्नामेंट के आयोजन का फैसला हुआ। इस टूर्नामेंट को इसलिए शुरु किया जा रहा है जिससे कि एशिया की उभरती महिला क्रिकेटरों को अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रतिस्पर्धा का अनुभव मिल सके। इससे ये आईसीसी टूर्नामेंट में भी बेहतर प्रदर्शन कर सकेंगी। इस फैसले से महिला क्रिकेट को भी आगे बढ़ने में सहायता मिलेगी। शाह ने कहा, ''महिला अंडर-19 एशिया कप की शुरुआत एक बड़ी उपलब्धि है जो युवा महिला क्रिकेटरों को अपने कौशल को विकसित करने और अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए एक एक विश्वस्तर का मंच उपलब्ध करायेगी। यह नई शुरुआत एशिया में महिला क्रिकेट के भविष्य को बेहतर करने के लिए शुरु की गयी है और हमें उम्मीद है कि इससे एशिया में महिला क्रिकेट के विकास में तेजी आयेगी।

प्रतिभाओं की कमी के कारण पीछे जा रहा पाक क्रिकेट : गांगुली

मुम्बई । भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली ने कहा है अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उसके खराब होते प्रदर्शन का कारण मैच विजेता खिलाड़ियों का टीम में नहीं होना है। गांगुली ने कहा कि पाक में अच्छी प्रतिभाएं नहीं उभर रही हैं, इसी कारण उसे मैच विजेता खिलाड़ी नहीं मिले रहे। उन्होंने कहा कि मैच विजेताओं को तैयार करने के लिए पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) को हालात का सही तरीके से आंकलन करना होगा। गांगुली का ताजा बयान हाल में बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट सीरीज में टीम के खराब प्रदर्शन को लेकर सामने आया है। पाक को अपने घरेलू मैदान पर बांग्लादेश के खिलाफ 2 टेस्ट मैचों की सीरीज में करारी हार का सामना करना पड़ा था। इसके अलावा आईसीसी टूर्नामेंटों में भी उसका प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा है। एकदिवसीय विश्वकप में पाक टीम लीग चरण से ही बाहर हो गयी थी। इसके अलावा टी20 विश्व कप के दौरान भी वह शुरु में ही बाहर हो गयी। यहां तक कि उसे अमेरिका जैसे नई टीम ने तक हरा दिया। इसी को लेकर गांगुली ने कहा कि पाक में प्रतिभाएं नजर नहीं आ रही हैं जबकि एक समय पा पाक से जावेद मियांदाद, वसीम, वकार, सईद अनवर, मोहम्मद यूसुफ और यूनिस खान जैसे क्रिकेटर निकले हैं पर वर्तमान में टीम मैच नहीं जीत रही जबकि हर पीढ़ी को जीतने के लिए शीर्ष स्तर के खिलाड़ियों को तैयार करना होता है। साथ ही कहा कि टीम को फिर से बेहतर बनाने के प्रयास पाक बोर्ड पीसीबी को ही करने होंगे।

भारतीय टीम के खिलाफ बेहतर प्रदर्शन पर हैं नाहिद ही नजरें

ढाका। बांग्लादेश के युवा तेज गेंदबाज नाहिद राणा ने पाकिस्तान के खिलाफ अपनी टीम की टेस्ट सीरीज में 2-0 की जीत में अहम भूमिका निभाई थी। वहीं अब नाहिद का लक्ष्य भारत के खिलाफ 19 सितंबर से होने वाली टेस्ट सीरीज में बेहतर प्रदर्शन करना है। इस तेज गेंदबाज से भारतीय बल्लेबाजों को सतर्क रहना होगा क्योंकि ये 150 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से गेंदबाजी करने के साथ ही अपनी लाइन व लैंथ भी बेहतर बनाये रखता है। पाकिस्तान के खिलाफ रावलपिंडी में दूसरे टेस्ट मैच में नाहिद ने 44 रन देकर चार विकेट लिए थे। इस क्रिकेटर ने सोशल मीडिया में अपना एक वीडियो साझा कर कहा है कि वह भारतीय टीम के खिलाफ बेहतर प्रदर्शन के लिए तैयार है। इसमें उसने कहा, 'निश्चित रूप से हम भारतीय टीम के खिलाफ सीरीज के लिए अच्छी तरह से तैयार हैं। हमने अभ्यास शुरू कर दिया है। हम जितना अधिक अभ्यास करेंगे उतना अधिक हम मैच के लिए तैयार रहेंगे। उन्होंने कहा, 'भारत की टीम हालांकि बहुत अच्छी है पर से भी सही है कि मैच के दिन जो टीम अच्छा खेलेगी जीत उसे ही मिलेगी। इस तेज गेंदबाज ने इस साल मार्च में श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण करने के बाद से ही 150 किमी प्रति घंटे से अधिक की रफ्तार से गेंदबाजी की थी। पाक के खिलाफ भी उसका प्रदर्शन प्रभावी रहा था। नाहिद ने कहा, 'पाकिस्तान दौरे पर जाने से पहले मैंने कहा था कि मैं अपने देश के लिए कुछ हासिल करना चाहता हूं और मुझे खुशी है कि मुझसे जो उम्मीद की गई थी उसे मैंने पूरा किया। भारत और बांग्लादेश के बीच पहला टेस्ट मैच 19 सितंबर से चेन्नई में खेला जाएगा, यहां की पिच पर उछाल मिलने की उम्मीद है। ऐसे में जब राणा ने कहा कि वह फिर से 152 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से गेंदबाजी करने के लिए तैयार हैं। साथ ही कहा कि मैं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए तैयार हूं। साथ ही कहा कि तेजी को लेकर आप हमेशा कुछ नहीं कह सकत हैं। यह लय पर निर्भर होता है।

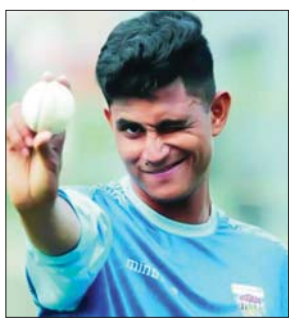

अफगानिस्तान ने द. अफ्रीका के खिलाफ वनडे सीरीज के लिए टीम की घोषणा की, राशिद खान की वापसी

काबुल (एजेंसी)। अफगानिस्तान ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीन मैचों की वनडे सीरीज के लिए 17 सदस्यीय टीम की घोषणा की है। हशमतुल्लाह शाहिदी दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ ऐतिहासिक द्विपक्षीय वनडे सीरीज में अफगानिस्तान की कप्तानी करेंगे, जबकि रहमत शाह को उप-कप्तानी सौंपी गई है। इस टीम में राशिद खान की भी वापसी हुई है, जो चोट के कारण आयरलैंड के खिलाफ पिछली वनडे सीरीज से बाहर हो गए थे।

गुलबदीन नैब और मोहम्मद नबी भी अनुभवी खिलाड़ियों वाली इस टीम में शामिल हैं। हालांकि कुछ जाने-माने खिलाड़ियों की चोटों ने दो युवा दावेदारों को शामिल करने का रास्ता साफ कर दिया है। अफगानिस्तान की टीम में इब्राहिम जाद्रान की सेवाएं नहीं होंगी, जो टखने की मोच के कारण बाहर हो गए थे और मुजीब उर रहमान, जो अभी तक दाएं हाथ की मोच से उबर नहीं पाए हैं। आईसीसी की एक रिपोर्ट के अनुसार इससे हाल ही में घरेलू लिस्ट ए प्रतियोगिता में प्रभावित करने वाले प्रतिभाशाली दाएं हाथ के शीर्ष क्रम के बल्लेबाज अब्दुल मलिक और सात टी20आई खेलने वाले शीर्ष क्रम के अन्य विकल्प दरवेश रसूली के लिए रास्ते खुल गए हैं।

एसीबी के सीईओ नसीब खान ने कहा, 'हमारे क्रिकेट इतिहास में पहली बार दक्षिण अफ्रीका की मेजबानी करना अफगानिस्तान क्रिकेट के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। वे एक बेहतरीन टीम हैं और उनके खिलाफ वनडे सीरीज खेलना कुछ ऐसा है जिसे लेकर हम सभी उत्साहित हैं। हमारी टीम ने पिछले दो-तीन सालों में आईसीसी इवेंट्स में शानदार प्रदर्शन किया है और हम अपनी टीम को द्विपक्षीय क्रिकेट में भी उतना ही प्रतिस्पर्धी बनाने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।'

यह वनडे सीरीज आईसीसी टूर्नामेंट के बाहर अफगानिस्तान और दक्षिण अफ्रीका के बीच पहली मुलाकात होगी जिसके तीनों मैच शारजाह क्रिकेट स्टेडियम में एसीबी द्वारा आयोजित किए जाएंगे। दोनों टीमें पिछली बार आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप 2024 में भिड़ी थीं जहां प्रोटियाज ने सेमीफाइनल में अफगानिस्तान को आसानी से हरा दिया था।

अफगानिस्तान टीम: हशमतुल्लाह शाहिदी (कप्तान), रहमत शाह (उपकप्तान), रहमानुल्लाह गुरबाज (विकेटकीपर), इकराम अलिखिल (विकेटकीपर), अब्दुल मलिक, रियाज हसन, दरविश रसूली, अजमतुल्लाह उमरजई, मोहम्मद नबी, गुलबदीन नैब, राशिद खान, नांग्याल खरोती, अल्लाह मोहम्मद गजनफर, फजल हक फारूकी, बिलाल सामी, नवीद जादरान और फरीद अहमद मलिक।

छात्र यहां बसने की उम्मीद लेकर ना आएं : कनाडा

ओटावा । कनाडा के इमिग्रेशन मिनस्टर ने भी एक बयान में कहा है कि स्टडी वीजा पर आने वाले छात्र यहां बसने की उम्मीद लेकर ना आएं। एक रिपोर्ट के मुताबिक, ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, साइमन फ्रेजर विश्वविद्यालय और विक्टोरिया विश्वविद्यालय जैसे प्रमुख संस्थानों का कहना है कि उनके अंतरराष्ट्रीय छात्र नामांकन स्तर पहले से ही 30 प्रतिशत की सीमा से नीचे हैं। ऐसे में नई गाइडलाइन से उन पर कोई सीधा प्रभाव नहीं पड़ेगा। हालांक क्रांटलेन पॉलिटेक्निक विश्वविद्यालय ने 2023-24 शैक्षणिक वर्ष के लिए अपने 36 प्रतिशत नामांकन के साथ नई सीमा को पार कर लिया है। इस महीने प्रभावी होने वाले दिशानिर्देशों में आगामी वर्ष से तय समय सीमा को फॉलो करना होगा। कनाडा सरकार वर्तमान में तेजी से जनसंख्या वृद्धि के बीच आप्रवासन को धीमा करने के प्रयास में विदेशी छात्रों के लिए दीर्घकालिक वीजा जारी करने की भी समीक्षा कर रही है। इमिग्रेशन मिनस्टर मार्क मिलर ने विदेशी छात्रों की संख्या को घरेलू बाजार की मांग के अनुपात में रखने पर जोर दिया है। कनाडा की नीति शिक्षित आप्रवासियों और छात्रों का स्वागत करने की रही है लेकिन हालिया समय में उसकी नीति में बदलाव आया है। मंत्री मिलर इस बात पर जोर दे रहे हैं कि स्टडी वीजा को कनाडा में बसने की गारंटी की तरह नहीं देखा जाना चाहिए। स्टडी वीजा पढ़ाई की इजाजत देता है और उसे उसी तरह से देखा जाना चाहिए। बता दें कि कनाडा में विदेशी छात्रों की संख्या को सीमित करने के लिए ब्रिटिश कोलंबिया (बीसी) प्रान्त की सरकार ने नए दिशा निर्देश जारी किए हैं। बीसी सरकार ने सार्वजनिक पोस्ट सेकेंडरी संस्थानों में अंतरराष्ट्रीय छात्र नामांकन को कुल छात्रों के 30 प्रतिशत तक सीमित कर दिया है। पोस्ट सेकेंडरी एजुकेशन एंड स्किल मिनिस्ट्री ने कहा है कि छात्रों के नामांकन की सीमा तय करने का मकसद संस्थानों पर दबाव कम करना है। गाइडलाइन में सार्वजनिक विश्वविद्यालयों और कॉलेजों को अंतरराष्ट्रीय शिक्षा रणनीतिक योजना प्रस्तुत करनी होगी। कॉलेजों की निगरानी प्रांत के प्रशासन की ओर से की जाएगी।

15 राज्यों के गवर्नर हेरिस के समर्थन में, लोकप्रियता में ट्रंप पिछड़े

न्यूयॉर्क । वर्तमान राष्ट्रपति वाइडेन के चुनाव मैदान से हटने और कमला हैरिस का नाम राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के रूप में सामने आने के बाद, अमेरिका की राजनीति में जबरदस्त उतार चढ़ाव देखने को मिल रहा है। कमला हैरिस का नाम सामने आते ही रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप की लोकप्रियता में 10 फ़ीसदी की गिरावट देखी जा रही है। जिन राज्यों से ट्रंप को भारी समर्थन मिल रहा था। उन राज्यों में भी कमला हैरिस का नाम सामने आने के बाद ऑनलाइन सर्वे में ट्रंप की लोकप्रियता में गिरावट आई है। कमला हैरिस को 24 घंटे के अंदर 15 डेमोक्रेटिक गवर्नर तथा 55 सीनेटरों का समर्थन मिला है। राष्ट्रपति पद के लिए कमला हैरिस का नाम सामने आते ही, अब डोनाल्ड ट्रंप को अपनी रणनीति को बदलना पड़ रहा है। डोनाल्ड ट्रंप को कमला हैरिस के पक्ष में जो सहानुभूति की लहर चल रही है। उसका मुकाबला करना पड़ेगा। कमला हैरिस अमेरिका के इतिहास में राष्ट्रपति पद के लिए पहली अश्वेत महिला हैं। अमेरिका की 25 फ़ीसदी आबादी अश्वेत मतदाताओं की है। कमला हैरिस गर्भपात के अधिकार की समर्थक रही हैं। कमला हेरिस अटॉर्नी रह चुकी हैं। वह ट्रंप के क्रिमिनल रिकॉर्ड को चुनावी प्रचार का हथकंडा बनाएंगी। ट्रंप के लिए कमला हेरिस को घेरना अब मुश्किल हो जाएगा।

10 घंटे में 435 करोड़ का चंदा - कमला हैरिस की उम्मीदवारी घोषित होते ही 10 घंटे के अंदर 435 करोड रुपए का चंदा इकट्ठा हुआ। 2020 के चुनाव में एक दिन के अंदर 295 करोड रुपए का रिकॉर्ड चंदा एकत्रित हुआ था। इस बार 10 घंटे में ही 435 करोड रुपए इकट्ठे हो गए।

अमेरिका के फ्लोरिडा का फोर्ड लाडरडेल अरबपतियों का नया पसंदीदा शहर

न्यूयॉर्क । अमेरिका के फ्लोरिडा का फोर्ट लाडरडेल शहर अरबपतियों का नया ठिकाना बन रहा है। फ्लोरिडा के इस शहर में बड़ी संख्या में अरबपति आकर बस रहे हैं। यहां की प्रॉपर्टी में याटपार्क करने की सुविधा है। जैफ बेजोस, कैन ग्रिफिन, लियोनेल मेसी जैसे दिग्गज यहां पर प्रॉपर्टी ले चुके हैं। अन्य अरबपति और ख़रबपति भी यहां प्रॉपर्टी में निवेश कर रहे हैं। पिछले डेढ़ साल में यहां संपत्तियों की कीमतें बड़ी तेजी के साथ बढ़ रही है। डेढ़ साल पहले जो बंगला ढाई सौ करोड रुपए का था। अब वह 400 करोड रुपए में बिका है। कहा जा रहा है, अरबपतियों का यह नया गढ़ बन गया है। जिसके कारण आने वाले समय में यहां प्रॉपर्टी की कीमत और भी तेजी के साथ बढ़ेगी।

सऊदी सरकार का फैसला, अब स्थानीय लोगों को दी जाएगी नौकरी, भारतीयों पर मंडराने लगा खतरा

रियाद। सऊदी अरब की सरकार ने नौकरियों में स्थानीय लोगों को ज्यादा मौका देने का फैसला लिया है। सऊदी अरब ने निजी क्षेत्र में 25 फीसदी इंजीनियरिंग नौकरियां स्थानीय लोगों के लिए आरक्षित कर दी हैं। नौकरियों को लोकेलाइज करने का यह फैसला 21 जुलाई से लागू कर दिया गया है। देश के मानव संसाधन और सामाजिक विकास मंत्रालय, नगर निगम और आवास मंत्रालय ने इस संबंध में ये फैसला किया है। स्थानीयकरण का ये फैसला इंजीनियरिंग व्यवसायों में पांच या उससे ज्यादा कामगारों को रोजगार देने वाले निजी प्रतिष्ठानों पर लागू होगा। छोटे प्रतिष्ठानों, जिनमें कर्मचारियों की संख्या चार तक है, वहां ये नियम लागू नहीं होगा। मीडिया रिपोर्ट में बताया गया है कि ये फैसला कई क्षेत्रों में देश के पुरुष और महिला नागरिकों के लिए रोजगार के ज्यादा अवसर पैदा करेगा। सऊदी के इस फैसले से स्थानीय लोगों को नौकरी मिलने में आसानी होगी। देश में केमिकल इंजीनियर, सिविल इंजीनियर, फ्लाइट इंजीनियर, स्ट्रक्चरल इंजीनियर, मैकेनिकल इंजीनियर, इलेक्ट्रिकल इंजीनियर के जॉब काफी संख्या में हैं। सऊदी सरकार ने इंजीनियरिंग में रोजगार बढ़ाने के लिए भी कई कदम उठाए हैं। प्रतिष्ठानों को मदद के लिए मानव संसाधन विकास कोष एचएडीएएफ ने प्रोत्साहन और सहायता, भर्ती प्रक्रियाओं और उपयुक्त श्रमिकों की खोज, प्रशिक्षण और व्यावसायिक योग्यता, भर्ती प्रक्रिया और कैरियर निरंतरता का समर्थन का फैसला लिया है। पिछले कुछ सालों में सऊदी अरब ने 2030 तक बेरोजगारी को सात फीसदी तक कम करने के लिए कई क्षेत्रों में श्रमिकों के सऊदीकरण की घोषणा की है, जो आय स्रोतों में विविधता लाने और तेल पर निर्भरता को कम करने के विजन 2030 के लक्ष्य के अनुरूप है। सऊदी सरकार के इस फैसले का सीधा असर भारतीय कामगारों पर भी होगा। सऊदी में काम करने वालों की संख्या करीब 26 लाख है। सऊदी में भारतीय करीब हर क्षेत्र में नौकरियां कर रहे हैं। इसमें ड्राइवर, सफाईकर्मी, रसोइया, नर्स के अलावा इंजीनियरिंग क्षेत्र की नौकरियां शामिल हैं। सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस अपने महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट विजन 2030 के तहत सऊदी अरब के हर क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन कर रहे हैं। इसी क्रम में सऊदी में नौकरियों में आरक्षण का फैसला लिया गया है।

ट्रम्प पर हमले में अमेरिकी सीक्रेट सर्विस ने माना हुई बड़ी चूक

वाशिंगटन। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प पर हुए हमले से जुड़ी एक बड़ी खबर आई है जिसमें बताया गया है कि सीक्रेट सर्विस से भारी चूक हुई है। सीक्रेट सर्विस के डायरेक्टर किम्बरली ने माना कि ट्रम्प पर हमला दशकों में

सबसे बड़ी चूक है। संसद में अपनी पेशी के दौरान किम्बरली चिटेल ने यह बयान दिया। डोनाल्ड ट्रम्प पर हमले को रोकने दशकों में सीक्रेट सर्विस की बड़ी नाकामी है। इसकी वजह से ट्रंप घायल हो गए थे। हालांकि पहली गोली चलाने के 26 सेकंड बाद एक सीक्रेट सर्विस स्नाइपर ने हमलावर को मार गिराया था। हमले के बाद डायरेक्टर किम्बली चीटल के खिलाफ सुनवाई चल रही है। रिपब्लिकन कमिटी के अध्यक्ष जेम्स कॉमर ने कहा कि इस घटना को रोका जा सकता था। राष्ट्रपति जो बाइडन ने डोनाल्ड ट्रंप की हत्या के प्रयास के बाद राष्ट्रपति पद के स्वतंत्र उम्मीदवार रॉबर्ट एफ. कैनेडी जूनियर की सुरक्षा करने का आदेश यू.एस. सीक्रेट सर्विस' को दिया था। कैनेडी के अभियान कार्यक्रमों ने समर्थकों और उनके संदेश में रुचि रखने वाले लोगों की बड़ी भीड़ को आकर्षित किया है। बता दें पेंसिल्वेनिया में गत शनिवार को एक रैली में हुई गोलीबारी में ट्रंप बाल-बाल बच गए और उन्हें गंभीर चोट नहीं आई थी। हमले की स्वतंत्र समीक्षा की गई।

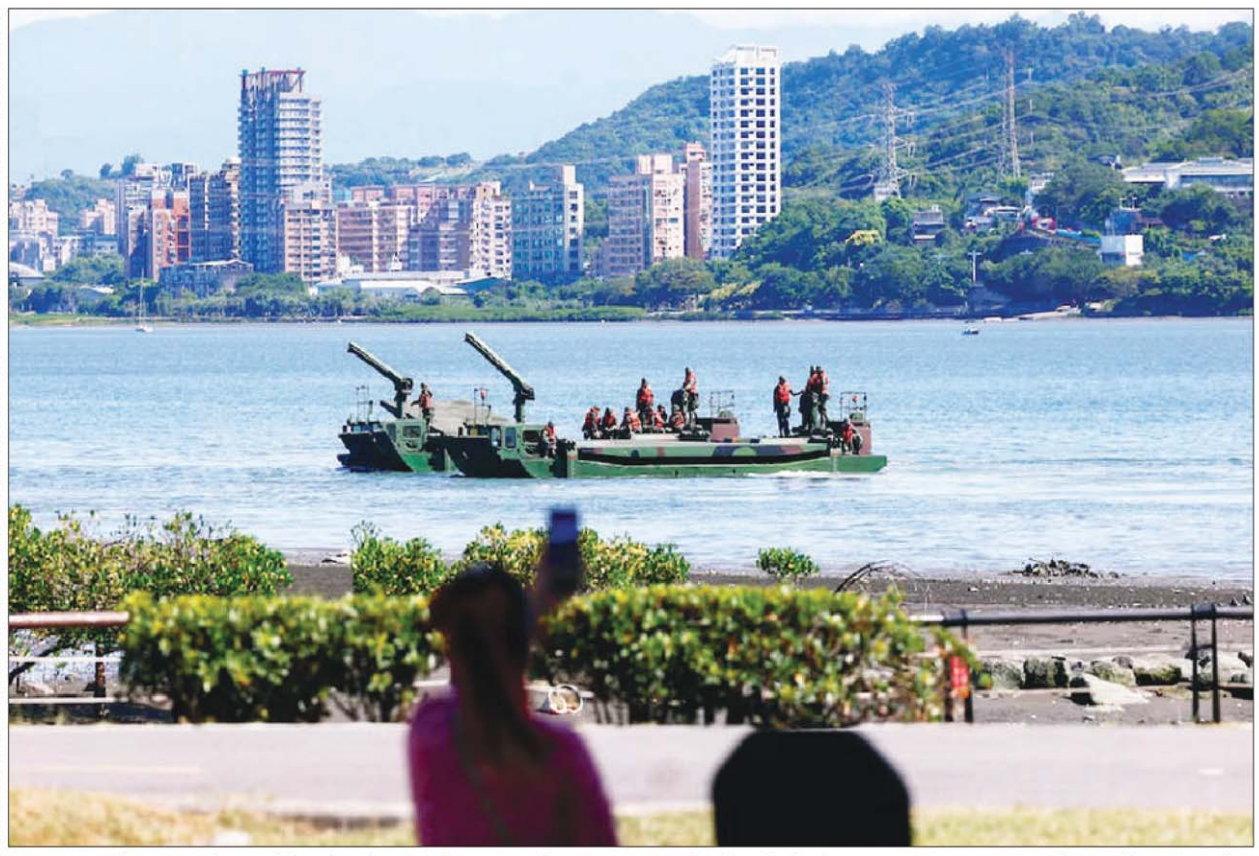

ताइवान में एक महिला सैनिकों को नदी के करीब किसी दुश्मन को रोकने के लिए बारुदी सुरंग लगाते हुए देखती हुई।

नेपाल अंतरराष्ट्रीय सीमा को लेकर 'स्पष्ट और दृढ़', भारतीय क्षेत्रों पर दावा

-पीएम बनते ही ओली ने उठाया सीमा विवाद का मुद्दा

काठमांडू। नेपाल के नवनियुक्त पीएम के.पी.ओली शर्मा ने कहा कि भारत के साथ सीमा से जुड़े मुद्दों को कूटनीतिक तंत्र के जरिए हल करने के लिए तैयार है और काठमांडू अपनी अंतरराष्ट्रीय सीमा के बारे में 'स्पष्ट और दृढ़' है। प्रतिनिधि सभा में विश्वास मत हासिल करने के एक दिन बाद सांसदों के सवालों का जवाब देते हुए ओली ने कहा कि सरकार इस बात पर दृढ़ और स्पष्ट है कि 1816 की सुगौली संधि के अनुसार, लिम्पियाधुरा, कालापानी और लिपुलेख समेत महाकाली नदी के पूर्व में स्थित क्षेत्र नेपाल के हैं। ओली ने कहा कि संघीय संसद और नेपाल सरकार का रुख देश की अंतरराष्ट्रीय सीमा से जुड़े मुद्दों को लेकर स्पष्ट और दृढ़ है। उन्होंने कहा कि नेपाल ने एक नया मानचित्र अपनाया है, जिसे 2017 में संविधान में दूसरे संशोधन के जरिए से शामिल किया गया है और इसके अनुलग्नक तीन में उल्लेख किया गया है और हमारी अंतरराष्ट्रीय सीमा के बारे में अभूतपूर्व राष्ट्रीय सहमति बनी है। ओली ने 15 जुलाई को नेपाल के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली थी। उन्होंने कहा कि नेपाल और भारत के प्रधानमंत्रियों के बीच उच्चस्तरीय यात्राओं के दौरान हुई मुलाकातों में दोनों देशों के बीच कूटनीतिक तंत्र के जरिए अंतरराष्ट्रीय सीमा से जुड़े मुद्दों को सुलझाने पर सहमति बनी है। ओली ने कहा कि 4 जनवरी को आयोजित नेपाल-भारत विदेश मंत्री स्तरीय संयुक्त आयोग की सातवीं बैठक के दौरान नेपाल-भारत सीमा से जुड़े मुद्दों पर भी चर्चा की गई थी और नेपाल-भारत सीमा के शेष हिस्सों पर लंबित कार्यों को जल्द से जल्द पूरा करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की गई।

चीनी भाई-भाई, इजरायल-यूएस की नाक के नीचे बीजिंग ने 17 साल पुराने 2 दुश्मनों की दोस्ती कराई

बीजिंग (एजेंसी)। इजरायल और फिलिस्तीन की जंग रूकने का नाम नहीं ले रही है। लगातार बढ़ती ही जा रही है। इन सब के बीच चीन से ऐसी खबर सामने आई है जो अमेरिका और इजरायल दोनों की टेंशन बढ़ा सकती है। हूती की लड़ाई अलग लेवल पर पहुंच गई है तो हिज्जबुल्ला ने भी अपने हमले बहुत तेज कर दिए हैं। इजरायल के ऊपर इसका असर दिखने लगा है। कुछ वक्त पहले की बात है जब रूस में हमास और फिलिस्तीन के अन्य संगठनों की मीटिंग हुई थी। इसके पीछे का मकसद था कि जंग के खत्म होने के बाद गाजा-वेस्ट बैंक के इलाके में सारे फिलिस्तीनी मिलकर काम करे। अब हाल में ही चीन में एक मीटिंग हुई है जो बहुत ही महत्वपूर्ण है। चीन की इस मीटिंग में फतह, हमास और इसके अलावा 14 अलग अलग आजाद फिलिस्तीन के एक्टिव संगठन मौजूद थे। इन सारे विभिन्न संगठनों में आपस में ही गतिरोध रहा है और जिसका फायदा इजरायल को मिलता रहा है। चीन के विदेश मंत्री और हमास के अधिकारियों ने कहा कि प्रतिद्वंद्वी फिलिस्तीनी गुटों हमास और फतह ने चीन की मध्यस्थता में हुई एक बैठक में इजराइल के साथ युद्ध के बाद कब्जे वाले वेस्ट बैंक और गाजा के लिए एक अंतरिम राष्ट्रीय सुलह सरकार बनाने पर सहमति व्यक्त करते हुए एक घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं।

बीजिंग में तीन दिनों की वार्ता के बाद 12 अन्य फिलिस्तीनी गुटों के साथ समूहों के प्रतिनिधियों ने एकता के लिए काम करने का वादा किया। यह हमास और फतह के बीच लंबे समय से खंडित संबंधों के बीच हुए कई सुलह समझौतों में से नवीनतम है, जिनमें से किसी के भी कारण अभी तक विवाद का अंत नहीं हुआ है। इज़राइल ने वहां शत्रुता समाप्त होने के बाद

गाजा पर शासन करने में हमास या फतह की भूमिका से भी इंकार कर दिया है। गहरा विभाजन 2007 में शुरू हुआ जब फतह को क्षेत्र से हिंसक तरीके से बेदखल करने के बाद हमास गाजा में एकमात्र शासक बन गया। यह फिलिस्तीनी राष्ट्रपति और फतह नेता महमूद अब्बास द्वारा हमास के नेतृत्व वाली एकता सरकार को भंग करने के बाद आया, जब हमास ने एक साल पहले राष्ट्रीय चुनाव जीता था। तब से, फतह-प्रभुत्व वाले फिलिस्तीनी प्राधिकरण को वेस्ट बैंक के केवल कुछ हिस्सों का प्रभारी छोड़ दिया गया है।

इजराइल-हमास युद्ध से क्या चाहता है चीन?

बीजिंग ने पहले अप्रैल में हमास और फतह के बीच वार्ता की मेजबानी की थी। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता माओ निंग ने मंगलवार को कहा चीन और फिलिस्तीन भरोसेमंद भाई और अच्छे साझेदार हैं। उन्होंने कहा कि चीन एकता और सुलह की दिशा में सभी संबंधित पक्षों के साथ अथक प्रयास करेगा। विदेश मंत्री वांग यी का कहना है कि सुलह फिलिस्तीनी गुटों के लिए एक आंतरिक मामला है, लेकिन साथ ही, इसे अंतरराष्ट्रीय समुदाय के समर्थन के बिना हासिल नहीं किया जा सकता है।

कनाडा में फिर हिंदू मंदिर को निशाना बनाया... भारत विरोधी टिप्पणियां लिखी गई

कनाडा (एजेंसी)। कनाडा भारत विरोधी गतिविधियों का गढ़ बन चुका है। खालिस्तान समर्थकों पर कनाडा में एक्शन ना होकर उन्हें बढ़ावा दिया जा रहा है। इस कड़ी में कनाडा के एडमोंटन में एक हिंदू मंदिर को निशाना बनाया गया। मंदिर की दीवारों पर भारत विरोधी टिप्पणियां लिख दी गई। हिंदू अमेरिकन फाउंडेशन ने बताया कि बीएपीएस स्वामीनारायण मंदिर की दीवारों पर भारत के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणियां की गई। साथ ही कहा कि ग्रैफिटी के द्वारा भारतीय मूल के कनाडाई सांसद चंद्र आर्य पर भी हमला किया गया।

हिंदू अमेरिकन फाउंडेशन ने पोस्ट में लिखा, कनाडा के एडमोंटन में मंदिर आज सुबह एक और हिंदू मंदिर पर हमला किया गया। मंदिर पर कनाडा के हाउस ऑफ कॉमन्स के कुछ हिंदू सदस्यों में से एक के खिलाफ अपशब्दों का प्रयोग किया गया। हम इस घटना की निंदा करते हैं जो पिछले कई हमलों का ही हिस्सा है जिनमें से ज्यादातर के लिए खालिस्तान समर्थक दोषी हैं।

सांसद आर्य ने कहा है कि कनाडा में हिंदू मंदिरों को नुकसान पहुंचाने की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। आर्य ने कहा, एडमॉन्टन में स्वामीनारायण मंदिर में फिर से तोड़फोड़ की गई है। पिछले कुछ सालों में ग्रेटर टोरंटो एरिया, ब्रिटिश कोलंबिया और कनाडा के दूसरे जगहों पर हिंदू मंदिरों को ग्राफिटी के जरिए नुकसान पहुंचाया जा रहा है।

सांसद चंद्र आर्य ने कहा, जैसा कि मैं हमेशा से कहता रहा हूं, खालिस्तानी चरमपंथी हिंसा फैलाने के बावजूद आसानी से बच जाते हैं। फिर से मैं इस रिकॉर्ड पर रखूंगा। हिंदू कनाडाई इससे चिंतित हैं। मैं फिर से कनाडा की कानूनी एजेंसियों से इस मुद्दे को गंभीरता से लेने की गुजारिश करता हूं, इससे पहले कि ये बयानबाजी लोगों के खिलाफ शारीरिक हिंसा में तब्दील हो जाए।

पाकिस्तानी सेना के खिलाफ कबाइलियों ने बुलाया जिरगा, ऑपरेशन का किया विरोध

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तानी सेना का देश में विरोध शुरू हो गया है। पश्तून कबाइलियों ने सेना के चरमपंथ विरोधी ऑपरेशन के खिलाफ आवाज उठाई है। खैबर-पख्तूनख्वा (केपी) के सीएम हाउस पर कबाइलियों का जिरगा (बैठक) बुलाया गया, जिसमें कई बड़े कबाइली नेता शामिल हुए। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक जिरगा में नेताओं ने ऑपरेशन अज्म-ए-इस्तेहकाम का विरोध किया। इसके साथ ही पाकिस्तान को गुड तालिबान और बैड तालिबान दोनों को खत्म करने को कहा गया है। गुड तालिबान पाकिस्तान में उन तालिबानी आतंकवादियों को कहा जाता है, जिनके पाकिस्तानी सेना से अच्छे संबंध हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक जिरगा की अध्यक्षता खैबर पख्तूनख्वा के सीएम अली अमीन गंडापुर ने की। इसमें केपी के मुख्य सचिव, आईजी पुलिस, बन्नू के कमिश्नर और क्षेत्रीय पुलिस अधिकारी, डिप्टी कमिश्नर ने भाग लिया। जिरगा में कबाइली नेताओं ने सीएम गंडापुर के सामने 11 मांगे रखी। उन्होंने मांग की कि तलाशी अभियान के दौरान मदरसों, घरों और व्यक्तियों के साथ अनुचित व्यवहार नहीं होना चाहिए।

जिरगा नेताओं ने कहा कि मदरसों और घरों पर रेड करना गलत होगा और इससे लोगों में गुस्सा बढ़ेगा। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि स्थानीय प्रशासन को क्षेत्र में तालिबान से निपटने के लिए पूर्ण अधिकार दिए जाने चाहिए। इसके साथ ही आतंकवाद निरोधक विभाग को पूरी तरह सक्रिय करने और आतंकवादियों और आपराधिक तत्वों के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए अधिकृत करने का आग्रह किया है।

पश्तूनों के विरोध का असर पाकिस्तान में दिखाई देने लगा है। लेफ्टिनेंट जनरल अहमद शरीफ चौधरी ने कहा कि ऑपरेशन अज्म-ए-इस्तेहकाम मिलिट्री ऑपरेशन नहीं है, बल्कि आतंकवाद विरोधी अभियान है। उन्होंने यह भी दावा किया कि एक मजबूत लॉबी नेशनल एक्शन प्लान को सफल नहीं होने देना चाहती है। उन्होंने कहा कि अज्म-ए-इस्तेहकाम की तुलना जर्ब-ए-अज्ब और राह-ए-निजात जैसे पिछले अभियानों से करना ठीक नहीं है।

सऊदी सरकार का फैसला, अब स्थानीय लोगों को दी जाएगी नौकरी, भारतीयों पर मंडराने लगा खतरा

रियाद (एजेंसी)। सऊदी अरब की सरकार ने नौकरियों में स्थानीय लोगों को ज्यादा मौका देने का फैसला लिया है। सऊदी अरब ने निजी क्षेत्र में 25 फीसदी इंजीनियरिंग नौकरियां स्थानीय लोगों के लिए आरक्षित कर दी हैं। नौकरियों को लोकेलाइज करने का यह फैसला 21 जुलाई से लागू कर दिया गया है।

देश के मानव संसाधन और सामाजिक विकास मंत्रालय, नगर निगम और आवास मंत्रालय ने इस संबंध में ये फैसला किया है। स्थानीयकरण का ये फैसला इंजीनियरिंग व्यवसायों में पांच या उससे ज्यादा कामगारों को रोजगार देने वाले निजी प्रतिष्ठानों पर लागू होगा। छोटे प्रतिष्ठानों, जिनमें कर्मचारियों की संख्या चार तक है, वहां ये नियम लागू नहीं होगा। मीडिया रिपोर्ट में बताया गया है कि ये फैसला कई क्षेत्रों में देश के पुरुष और महिला नागरिकों के लिए रोजगार के ज्यादा अवसर पैदा करेगा। सऊदी के इस फैसले से स्थानीय लोगों को नौकरी मिलने में आसानी होगी। देश में केमिकल इंजीनियर, सिविल इंजीनियर, फ्लाइट इंजीनियर, स्ट्रक्चरल इंजीनियर, मैकेनिकल इंजीनियर, इलेक्ट्रिकल इंजीनियर के जॉब काफी संख्या में हैं।

सऊदी सरकार ने इंजीनियरिंग में रोजगार बढ़ाने के लिए भी कई कदम उठाए हैं। प्रतिष्ठानों को मदद के लिए मानव संसाधन विकास कोष एचएडीएएफ ने प्रोत्साहन और सहायता, भर्ती प्रक्रियाओं और उपयुक्त

श्रमिकों की खोज, प्रशिक्षण और व्यावसायिक योग्यता, भर्ती प्रक्रिया और कैरियर निरंतरता का समर्थन का फैसला लिया है। पिछले कुछ सालों में सऊदी अरब ने 2030 तक बेरोजगारी को सात फीसदी तक कम करने के लिए कई क्षेत्रों में श्रमिकों के सऊदीकरण की घोषणा की है, जो आय स्रोतों में विविधता लाने और तेल पर निर्भरता को कम करने के विजन 2030 के लक्ष्य के अनुरूप है।

सऊदी सरकार के इस फैसले का सीधा असर भारतीय कामगारों पर भी होगा। सऊदी में काम करने वालों की संख्या करीब 26 लाख है। सऊदी में भारतीय करीब हर क्षेत्र में नौकरियां कर रहे हैं। इसमें ड्राइवर, सफाईकर्मी, रसोइया, नर्स के अलावा इंजीनियरिंग क्षेत्र की नौकरियां शामिल हैं। सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस अपने महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट विजन 2030 के तहत सऊदी अरब के हर क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन कर रहे हैं। इसी क्रम में सऊदी में नौकरियों में आरक्षण का फैसला लिया गया है।

हमारा दृष्टिकोण भविष्य पर केंद्रित है, डोनाल्ड ट्रंप का अतीत पर: हैरिस

-मध्यम वर्ग का निर्माण मेरे राष्ट्रपति पद का एक निर्णायक लक्ष्य

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने अपने राष्ट्रपति पद के लिए चुनावी अभियान की शुरुआत कर दी है। हैरिस ने विलमिंगटन, डेलावेयर में जोरदार तरीके से अपनी बात रखी। उन्होंने डोनाल्ड ट्रंप पर व्यक्तिगत हमला करते हुए ट्रम्प को धोखेबाज, जालसाज और महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार करने वाला इंसान बताया है। हैरिस ने कहा कि उनका दृष्टिकोण भविष्य पर केंद्रित है जबकि ट्रंप का अतीत पर। इस दौरान राष्ट्रपति जो बाइडेन फोन द्वारा इसमें शामिल हुए।

हैरिस ने बाइडेन के स्टाफ को ही अपने अभियान में लगा लिया है। बाइडेन ने भी अपने स्टाफ से कमला हैरिस के लिए दिल से काम करने को कहा है। हैरिस के अभियान ने केवल 24 घंटे में 81 मिलियन डॉलर जुटाए हैं। डेमोक्रेट उत्साहित दिख रहे हैं और पहली प्रेसिडेंशियल डिबेट में बाइडेन के खराब प्रदर्शन के बाद अब हैरिस के पीछे खड़े हैं। 20,000 से ज्यादा नए वालंटियर अभियान में जुड़ गए हैं। हैरिस ने अपने भाषण में एक जिला अदालत से लेकर कैलिफोर्निया के अटॉर्नी जनरल बनने तक के अपने करियर को याद करते हुए कहा कि उन्होंने उन लोगों का सामना किया जो महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार करते हैं। ऐसे धोखेबाज जो कंज्यूमर्स को लूटते हैं, जो अपने लाभ के लिए नियम तोड़ते हैं। उन्होंने कहा मेरी बात सुनिए क्योंकि मैं डोनाल्ड ट्रंप टाइप लोगों को जानती हूं।

हैरिस ने कहा डोनाल्ड ट्रंप एक कॉलेज ट्रम्प यूनिवर्सिटी चलाते थे, जिसे छात्रों को ठगने के लिए 25 मिलियन डॉलर का भुगतान करना पड़ा। 2007-2008 के वित्तीय संकट का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि मैंने बड़े वॉल स्ट्रीट बैंकों से मुकाबला किया और कैलिफोर्निया के परिवारों के लिए 20 बिलियन डॉलर जीते। उन बैंकों को धोखाधड़ी के लिए जिम्मेदार ठहराया। ट्रंप को हाल ही में धोखाधड़ी के 34 मामलों में दोषी पाया गया है। हैरिस ने ट्रंप के साथ मुकाबले को अमेरिका के लिए दो विपरीत धाराओं की लड़ाई के रूप में परिभाषित किया। उन्होंने कहा कि ट्रंप देश को पीछे ले जाना चाहते हैं जब हमारे साथी अमेरिकियों को पूर्ण स्वतंत्रता और अधिकार नहीं थे। हम एक ऐसे

उज्जवल भविष्य में विश्वास करते हैं जो सभी अमेरिकियों के लिए जगह बनाए। हम एक ऐसे भविष्य में विश्वास करते हैं जहां हर व्यक्ति को न केवल गुज़र-बसर करने का बल्कि आगे बढ़ने का मौका मिले। इन सबका मतलब यह है कि मध्यम वर्ग का निर्माण मेरे राष्ट्रपति पद का एक निर्णायक लक्ष्य होगा।

भागलपुर की बूह को गूगल ने दिया 60 लाख रुपये का पैकेज

भागलपुर । दुनिया की सबसे बड़ी सॉफ्टवेयर कंपनी गूगल ने भागलपुर जिले के नवगछिया अनुमंडल कार्यालय के प्रधान लिपिक राजीव नयन चौधरी की बहु अलंकृता साक्षी को सॉफ्टवेयर इंजीनियर के पद पर काम करने का मौका दिया है। अलंकृता नवगछिया के सिमरा गांव के शंकर मिश्रा की पुत्री हैं, जो फिलहाल झारखंड के कोडरमा में रह रहे हैं। अलंकृता के ससुर चौधरी ने बताया कि गूगल कंपनी में आने से पहले वह दो साल बेंगलुरु में विप्रो कंपनी में, एक साल अर्न्स्ट एंड यंग कंपनी में और एक साल सैमसंग हार्मन में काम कर चुकी हैं। यहीं से उनका चयन गूगल में हुआ। उन्होंने बताया कि मेरे बेटे मनीष कुमार की शादी 8 दिसंबर 2023 को है। बूह अलंकृता पिता कोडरमा में प्राइवेट नौकरी करते हैं और मां रेखा मिश्रा एक निजी स्कूल में शिक्षिका हैं। अलंकृता के ससुर ने बताया कि उनका बचपन झारखंड के कोडरमा में बीता और वहीं से उनकी पढ़ाई लिखाई हुई। अलंकृता दो बहनें और एक भाई है। अलंकृता के पति मनीष कुमार भी बेंगलुरु में एक सॉफ्टवेयर कंपनी में काम करते हैं। दोनों परिवारों को इस बात की अपार खुशी है कि गूगल जैसी विश्व प्रसिद्ध कंपनी से 60 लाख रुपये के पैकेज पर चयन कर काम करने का अवसर दिया है। यह अत्यंत गर्व और हर्ष की बात है। और उनके घर से गूगल कंपनी में काम कर रही है।

चंडीगढ़ के सेक्टर 10 में संदिग्ध विस्फोट...पुलिस जांच में जुटी

चंडीगढ़ । पुलिस ने बताया कि बीती रात चंडीगढ़ के सेक्टर 10 में एक संदिग्ध कम तीव्रता वाला विस्फोट हुआ, जिसमें एक रिहायशी इलाके में खिड़कियां और फूलों के गमले क्षतिग्रस्त हो गए। पुलिस अधिकारियों के अनुसार, घटना की जांच हो रही है, फोरेंसिक टीमें घटनास्थल पर साक्ष्य एकत्र कर रही हैं। उन्होंने बताया कि विस्फोट के सिलसिले में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने संदिग्धों के बारे में सूचना देने वाले को 2 लाख रुपये का इनाम देने की घोषणा की है। पुलिस के अनुसार, आरोपी व्यक्ति द्वारा इस्तेमाल हुआ ऑटो-रिक्शा जब्त कर लिया गया है। चंडीगढ़ एसएसपी कंवरदीप कौर के अनुसार, विस्फोट शाम 6 बजे के आसपास हुआ, जिससे रिहायशी इलाके में खिड़कियों और फूलों के गमलों को नुकसान पहुंचा। सीएफएसएल की टीम आ गई है और सभी साक्ष्य एकत्र किए जा रहे हैं। एसएसपी ने कहा कि शिकायतकर्ता ने बताया कि उसने घर के पास दो लोगों को देखा, जो कथित तौर पर घटनास्थल पर ग्रेनेड फेंक रहे थे। उन्होंने कहा, शिकायतकर्ता ने कहा है कि 2 संदिग्ध लोग एक ऑटो में आए और ग्रेनेड फेंका। शिकायतकर्ता ने उन्हें देखा। टीमें उनकी तलाश कर रही हैं। कुछ विस्फोट हुआ है, हम विस्फोट के कारणों की जांच कर रहे हैं।

मांड्या में गणपति विसर्जन में पथराव, भड़की हिंसा ; दुकानों और वाहनों में लगा दी आग

बैंगलुरु। कर्नाटक के मांड्या जिले में बुधवार रात दो समूहों के बीच झड़प हो गई। यहां के नागमंगला कस्बे में गणपति प्रतिमा विसर्जन जुलूस पर कथित तौर पर पथराव करने के बाद दो पक्षों में झड़प हुई। घटना के बाद कुछ दुकानों और वाहनों में आग लगा दी गई।पुलिस ने इलाके में प्रतिबंधात्मक आदेश लागू कर दिए हैं और हाई अलर्ट पर है। घटना के बाद हिंदू समुदाय के लोगों ने स्थानीय पुलिस स्टेशन पर विरोध प्रदर्शन किया और पथराव के लिए जिम्मेदार लोगों की तत्काल गिरफ्तारी की मांग की। केंद्रीय मंत्री एचडी कुमारस्वामी ने घटना की निंदा की और जनता से शांति बनाए रखने का आग्रह किया। सूत्रों के अनुसार, कुछ युवक गणपति प्रतिमा विसर्जन के लिए जुलूस निकाल रहे थे और जब वे कस्बे में एक दरगाह के पास से गुजर रहे थे तो कुछ असामाजिक तत्वों ने उन पर पथराव करना शुरू कर दिया। इसके बाद दोनों पक्षों में झड़प हो गई।कुमारस्वामी ने कानून-व्यवस्था के मुद्दे पर राज्य की कांग्रेस सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा, नागमंगला में यह घृणित घटना पार्टी और राज्य सरकार द्वारा राजनीतिक लाभ के लिए एक विशेष समुदाय के प्रति अतिशय लाड़-प्यार और तुष्टिकरण के परिणामस्वरूप हुई। कुमारस्वामी ने तुरंत कार्रवाई की मांग की।कर्नाटक एसडीपीआई प्रमुख अब्दुल मजीद ने मुख्यमंत्री सिद्धारमैया से डीजीपी को कानून-व्यवस्था बहाल करने के लिए अतिरिक्त पुलिस बल तैनात करने और आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश देने की अपील की। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर सीएम को टैग करते हुए लिखा कि, संबंधित अधिकारियों को ऐसे समूहों के खिलाफ सख्त कदम उठाने का निर्देश दें जिनका उद्देश्य सांप्रदायिक सद्भाव को बाधित करना और राज्य की प्रतिष्ठा को धूमिल करना है।

एक करोड़ के एमडी ड्रग्स के साथ आरोपी गिरफ्तार, टायर में छिपाकर लाया गया था

अहमदाबाद । अहमदाबाद क्राइम ब्रांच ने एक करोड़ रुपए कीमत के एक किलो एमडी ड्रग्स समेत दो शख्सों को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए शख्स ईको कार के टायर समेत अन्य सामान की आड़ में ड्रग्स छिपाकर अहमदाबाद लाए थे। पकड़े गए आरोपियों में एक ड्रग्स लाने वाला और दूसरा मंगवाने वाला शामिल है। गुजरात सरकार ने पुलिस को राज्य में नशीली दवाओं के दूषण से निपटने के लिए सख्त कार्रवाई करने का निर्देश दिया है। इसी अभियान के तहत अहमदाबाद क्राइम ब्रांच को बड़ी सफलता मिली है। क्राइम ब्रांच की टीम ने एक करोड़ कीमत का ड्रग्स जब्त किया है। दरअसल क्राइम ब्रांच सूचना मिली थी कि इको कार में टायर और अन्य सामान की आड़ में नशे की तस्करी की जा रही है। इसी सूचना के आधार पर क्राइम ब्रांच ने कार्रवाई की और ईको कार से 1 करोड़ रुपये कीमत का 1 किलो एमडी ड्रग्स जब्त कर लिया। साथ ही पुलिस ने एमडी ड्रग्स लाने और खरीदने वाले शख्स को भी हिरासत में लिया है। शुरुआती जांच के मुताबिक, ये ड्रग्स जयपुर और रतलाम रूट से लाया गया था। पुलिस ने इस मामले में आरोपियों से पूछताछ के आधार पर आगे की कार्यवाही शुरू की है।

नक्सलियों ने दो ग्रामीणों को फांसी पर लटकाया, मुखबिरी के शक में जनअदालत में दी सजा

बीजापुर । छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित बीजापुर जिले से बड़ी खबर आ रही है। यहां नक्सलियों ने दो ग्रामीणों की हत्या कर दी है। नक्सलियों ने दोनों ग्रामीणों को जनअदालत में फांसी पर लटकाकर मौत के घाट उतार दिया है। जबकि एक छात्र को रिहा कर दिया। खबरों के अनुसार नक्सलियों ने पुलिस मुखबिरी के शक में ग्रामीणों को मार डाला। इस घटना के बाद पूरे इलाके में दहशत है। इस घटना के संबंध में पुलिस को फिलहाल कोई जानकारी नहीं मिली है। घटना कब हुई है और मारे ग्रामीणों का नाम सहित अन्य जानकारी को पता लगाने में पुलिस कोशिशें जारी है। अंदरुनी इलाके में घटना होने के कारण कोई स्पष्ट जानकारी नहीं दे रहा है। जानकारी के अनुसार बीजापुर में नक्सलियों ने दो ग्रामीणों की हत्या कर दी है। खबरों के अनुसार, नक्सलियों ने इन दोनों ग्रामीणों को जनअदालत में फांसी पर लटकाकर मौत के घाट उतार दिया। यह घटना पुलिस मुखबिरी के शक में की गई बताई जा रही है। जानकारी के अनुसार नक्सलियों ने शुक्रवार की रात बीजापुर जिले के एक दूरदराज गांव में दोनों ग्रामीणों को पकड़ा। आरोप है कि नक्सलियों ने उन्हें पुलिस को सूचना देने के शक में जनअदालत का आयोजन किया। इसके बाद, इन दोनों ग्रामीणों को सार्वजनिक रूप से फांसी पर लटका दिया। इस घटना के बाद पूरे इलाके में दहशत का माहौल बन गया है। ग्रामीणों ने नक्सलियों की इस क्रूरता के खिलाफ गहरी नाराजगी जताई है।

कोलकाता में प्रदर्शन के बीच मिला लावारिस बैग, फैली सनसनी

कोलकाता। महिला ट्रेनी डॉक्टर के साथ रेप और मर्डर को लेकर विरोध प्रदर्शन के बीच कोलकाता के आरजी कर अस्पताल के पास एक संदिग्ध बैग मिला, जिसमें बम होने की खबर से सनसनी फैल गई। घटनास्थल पर डॉग और बम निरोधक दस्ता पहुंच गया। वहीं उत्तर 24 परगना के भाटपारा नगर पालिका के वार्ड नंबर 12 में एक घर में कच्चे बम मिले हैं। भाटपाड़ा पुलिस मौके पर मौजूद है। बम निरोधक दस्ता बुलाया गया है।

शक्ति अभ्यास: दूसरे देशों के पायलटों ने उड़ाए हमारे विमान, दिखाए करतब

- रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने की तारीफ बोले-हमारी फोर्स दुनिया में नंबर वन

जोधपुर (एजेंसी)। इंडियन एयर फोर्स की पहली मल्टीनेशनल एयर एक्सरसाइज तरंग शक्ति 2024 जोधपुर के एयरफोर्स स्टेशन पर देखने को मिली। वायुसेना की एयर एक्सरसाइज में भारत सहित आठ देश इसमें भाग ले रहे हैं, जबकि 20 अन्य देश इसे ऑब्जर्व कर रहे हैं। इंडियन एयर फोर्स के इस पहले बहुराष्ट्रीय तरंग शक्ति एक्सरसाइज में विदेशी वायु सेनाओं के चीफ भी शिरकत कर रहे हैं।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह तरंग शक्ति अभ्यास का निरीक्षण करने पहुंचे। इसके साथ ही रक्षा मंत्री ने 12 से 14 सितंबर तक चलने वाली डिफेंस एविएशन एक्सपो का भी उद्घाटन किया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत के नए संकल्प के

साथ भारतीय रक्षा क्षेत्र तेजी से आगे बढ़ रहा है। सेंसर, रडार और क्षेत्र में भारत काफी हद तक आत्मनिर्भर हो गया है। आज के समय में जहां कई देश युद्ध लड़ रहे हैं वहीं भारत का लक्ष्य एकजुट रहकर एकसाथ आगे बढ़ना है।

उन्होंने कहा कि दुनिया बदल रही है और नई चुनौतियां सामने आ रही हैं, ऐसे में हमें अपनी साझेदारी, सहयोग का दायरा बढ़ाना होगा। हमारी वायुसेना, और हमारा रक्षा क्षेत्र आत्मनिर्भर भारत के नए संकल्प के साथ तेजी से आगे बढ़ रहा है। आज हल्के लड़ाकू विमान, सेंसर, राडार और इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर जैसी चीजों में हम बहुत हद तक आत्मनिर्भर हो चुके हैं और इन क्षेत्रों में लगातार आगे बढ़ने के लिए हम प्रयासरत हैं।

तरंग शक्ति युद्धाभ्यास के दौरान गुरुवार को रक्षा मंत्री की मौजूदगी में वायुसेना ने हैरतअंगेज करतब दिखाए। भारत सहित आठ देशों के वायुसेना प्रमुखों ने एक-दूसरे के लड़ाकू विमान उड़ाए। यह नजारा देख रक्षा मंत्री ने खूब तारीफ की। उन्होंने कहा कि हमारी फोर्स दुनिया में नंबर वन है।

लालू प्रसाद यादव को हार्ट प्रॉब्लम, मुंबई के अस्पताल में हुई एंजियोप्लास्टी

मुंबई। राष्ट्रीय जनता दल के प्रमुख लालू प्रसाद यादव की मुंबई के अस्पताल में एंजियोप्लास्टी हुई। यादव को 10 सितंबर को मुंबई के एशियन हार्ट इंस्टीट्यूट में भर्ती कराया गया था और बुधवार को उनकी एंजियोप्लास्टी की गई। सूत्रों ने बताया कि यादव को एक या दो दिन में छुट्टी मिलने की उम्मीद है। सूत्रों ने कहा कि उन्हें 10 सितंबर, 2024 को डॉ. (संतोष) डोरा और डॉ. तिलक (सुवर्णा) द्वारा एंजियोप्लास्टी के लिए एशियन हार्ट इंस्टीट्यूट में फिर से भर्ती कराया गया था। इससे पहले इसी साल जुलाई में अचानक तबीयत बिगड़ने के बाद यादव को दिल्ली के एम्स अस्पताल ले जाया गया था। बाद में इलाज के बाद उन्हें छुट्टी दे दी गई। 66 वर्षीय पूर्व केंद्रीय मंत्री की एशियन हार्ट इंस्टीट्यूट में छह घंटे लंबी महाधमनी वाल्व रिप्लेसमेंट सर्जरी हुई थी। उन्होंने 2018 और 2023 में फॉलो-अप के लिए अस्पताल का दौरा किया था। साल 2022 में लालू को किडनी की बीमारी का पता चला क्योंकि उनकी केवल 25 प्रतिशत किडनी ही ठीक से काम कर रही थी। डॉक्टरों ने प्रत्यारोपण की सलाह दी, जिसके बाद सिंगापुर में रहने वाली उनकी बेटी राहिनी आचार्य ने उन्हें अपनी एक किडनी दान कर दी।

मीरवाइज की सुरक्षा में लगे लोग तय करें, मेरी तरफ से कोई रोक नहीं

-हुर्रियत नेता के घर से बाहर निकलने को लेकर एलजी सिन्हा ने कही यह बात

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव से पहले एक टीवी चैनल के कार्यक्रम में हुर्रियत नेता मीरवाइज उमर फारूक को बोलने और अपनी बात रखने की आजादी प्रशासन की तरफ से दी जाएगी? इसके जवाब में एलजी मनोज सिन्हा ने कहा कि मीरवाइज साहब पर कोई रोक नहीं है। अगर एजेंसियां सलाह देती हैं कि उनको खतरा है और उन्हें सार्वजनिक कार्यक्रमों में नहीं जाना चाहिए तो बात अलग है।

सिन्हा ने कहा कि मीरवाइज उमर फारूक इस कार्यक्रम में आ पाएंगे या नहीं, यह आपको उन्हें और उनकी सुरक्षा में लगे लोगों को तय करना है। मेरी तरफ से कोई

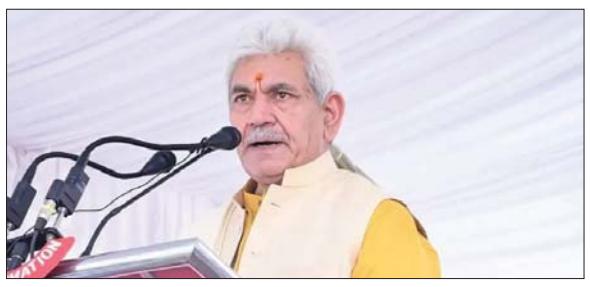

रोक नहीं है। सिर्फ उन्हीं पर नहीं बल्कि किसी भी राजनीतिक या धार्मिक व्यक्ति पर कोई रोक नहीं है। हां उन लोगों पर जरूर बैन है जो भारत की एकता और अखंडता के लिए खतरा हैं। बता दें कि मीरवाइज उमर फारूक को धारा 370 के निरस्त होने से ठीक पहले उनके घर में नजरबंद कर दिया गया था। उन्हें केवल कुछ मौकों के लिए अपने घर से बाहर जाने की इजाजत मिलती रहती है।

रियल स्टेट और हेल्थ सेक्टर को लेकर पूछे गए सवाल पर एलजी सिन्हा ने कहा कि मैंने कभी नहीं कहा कि जम्मू-कश्मीर में रियल स्टेट सेक्टर में इन्वेस्टमेंट आ गया है। एक समिट हुई थी, जिसमें कानूनी पेचीदगियां थीं। अभी तक न्यूनतम इन्वेस्टमेंट आया था। श्रीनगर में तीन नए मेडिकल कॉलेज बन गए हैं। जम्मू में अपोलो और मेदांता में भी काम शुरू होने वाले है। पिछले पांच साल में जम्मू-कश्मीर में बने मेडिकल कॉलेज और एम्स के बारे में उन्होंने कहा कि पांच लाख रुपए तक का इलाज के लिए सबको मिलता है, यह जम्मू-कश्मीर में ही संभव है।

राहुल गांधी ने अपने हाल के जम्मू-कश्मीर दौरे पर एक जनसभा को संबोधित करते हुए कहा था कि एलजी को यहां का राजा बना दिया है। इस सवाल पर मनोज सिन्हा ने कहा कि जनता की राय ले लें, राहुल गांधी के दिमाग के दरवाजे खुल जाएंगे। सीक्रेट बैलट करा लें, अगर जम्मू-कश्मीर की 75 फीसदी से ज्यादा जनता ने ये नहीं कहा कि पिछले पांच साल में उनकी भलाई के लिए काम हुआ है तो मैं यहां से चला जाऊंगा। उन्होंने यह भी कहा कि न्यायालयों पर जो लोग सवाल उठा रहे हैं, ये ठीक नहीं है. कीचड़ में पत्थर गिरता है तो छींटे खुद पर ही आते हैं। लोगों को इस तरह की बातों से बचना चाहिए।

राहुल गांधी पर सिन्हा का तंज..... जनता की राय ले लें, दिमाग के दरवाजे खुल जाएंगे

नई दिल्ली । जम्मू-कश्मीर में होने वाले आगामी विधानसभा चुनाव से पहले राज्य के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने एक मीडिया कार्यक्रम में शिरकत की। उपराज्यपाल सिन्हा ने 1957 के पहले चुनाव का जिक्र कर कहा कि तब 75 सीटें थीं।20 एमएलए निर्विरोध चुने गए। जम्मू-कश्मीर की अवाम, खासकर घाटी के लोगों ने भी भारत के लोकतंत्र में आस्था व्यक्त की। उन्होंने कहा कि साजिश से बाहर निकलकर घाटी की अवाम को भी समझ आ गया है कि हमारा भविष्य भारत के लोकतंत्र में है। उन्होंने उपराज्यपाल की पावर बढ़ने के सवाल पर कहा कि उस पर सवाल उठाना उचित नहीं है। जहां भी संघ राज्य क्षेत्र या केंद्र शासित प्रदेश हैं, वहां इस तरह की शक्तियां उपराज्यपाल के पास हैं। जो भी सरकार आएगी, उस चुनी हुई सरकार को मेरा पूरा समर्थन होगा। उपराज्यपाल सिन्हा ने कहा कि विधानसभा चुनाव भी पूरी तरह से फ्री और निष्पक्ष होगा। आज रात के 11 बजे भी लोग बाहर जाकर खाना खा रहे हैं, 12 बजे रात तक प्रचार हो रहा है। उन्होंने कहा कि ये जो बदलाव हुआ है, इस बदलाव को देखने की जरूरत है।

निलंबित आईएएस पूजा खेडकर की बढ़ी मुश्किलें, हाईकोर्ट ने भेजा नोटिस

-यूपीएससी के लिए गलत बयान और हलफनामा देने का मामला

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली हाईकोर्ट ने यूपीएससी की याचिका पर पूजा खेडकर को नोटिस जारी किया, जिसमें दावा किया गया था कि उन्होंने गलत प्रस्तुतियां दी हैं। हाईकोर्ट ने गुरुवार को पूर्व परिवीक्षाधीन आईएएस प्रशिक्षु पूजा खेडकर से यूपीएससी की याचिका पर जवाब मांगा है, जिसमें उनके खिलाफ कोर्ट में गलत बयान और हलफनामा देने के लिए झूठी गवाही की कार्यवाही शुरू करने की मांग की गई है।

यूपीएससी ने तर्क दिया कि 31 जुलाई को पूजा खेडकर की उम्मीदवारी रद्द की गई थी, उसी दिन उन्हें उनके पंजीकृत ईमेल-आईडी पर सूचित किया गया था। इसने कहा कि यह वही ईमेल आईडी थी, जो सीएसपी 2022 के लिए उनके ऑनलाइन आवेदन में पंजीकृत थी। उन्होंने कोर्ट में झूठा बयान दिया कि उन्हें आदेश नहीं दिया गया है और उन्हें यूपीएससी द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के जरिए से इसकी जानकारी मिली है, यह दावा किया गया।

यूपीएससी की और से वरिष्ठ अधिवक्ता नरेश कौशिक ने कहा कि पूजा खेडकर ने अपने वकीलों को भी गलत जानकारी दी और वह अच्छी तरह से जानती थी कि वह शपथ पर झूठा बयान दे रही है, फिर भी उसने

जानबूझकर झूठे बयान की सत्यता की शपथ ली। वकील कौशिक ने दायर आवेदन में कहा कि अदालत से अनुकूल आदेश प्राप्त करने के उद्देश्य से शपथ पर गलत बयान देना एक बहुत ही गंभीर अपराध है, जो कानूनी व्यवस्था की नींव को कमजोर करता है।

इसमें दावा किया गया कि खेडकर का हलफनामा 28 जुलाई, 2024 का था, जब यूपीएससी द्वारा जारी 31 जुलाई का आदेश अस्तित्व में भी नहीं था। यूपीएससी ने अदालत से उचित कार्यवाही शुरू करने और झूठी गवाही देने के अपराध के लिए कानून के मुताबिक खेडकर के खिलाफ जांच का निर्देश देने का आग्रह किया है। खेडकर ने पहले यूपीएससी की प्रेस विज्ञप्ति को चुनौती देते हुए उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया था, जिसमें कहा गया था कि उनकी उम्मीदवारी रद्द कर दी गई है। एक अगस्त को यहां की एक ट्रायल कोर्ट ने उनकी अग्रिम जमानत याचिका खारिज करते हुए कहा था कि ये गंभीर आरोप हैं जिनकी गहन जांच की जरुरत है।

अखिलेश के कारण टूटा गठबंधन... फोन उठाना बंद किया : मायावती

लखनऊ (एजेंसी)। बसपा सुप्रीमो और पूर्व सीएम मायावती ने सपा से गठबंधन टूटने को लेकर बड़ा खुलासा किया है। मायावती ने बताया कि अखिलेश यादव के कारण गठबंधन टूट गया है। उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव 2019 में महज पांच सीटें मिलीं। इससे दुखी होकर अखिलेश ने उनका फोन भी उठाना बंद कर दिया था। मायावती ने इसका दावा अपनी बुकलेट में किया है। यह बुकलेट उपचुनाव और 2027 विधानसभा के लिए पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को बांटी जा रही है।

मायावती ने कहा है कि 2019 लोकसभा चुनाव में सपा को पांच सीटें मिलीं। वहीं बसपा को 10 सीटें जीती थी। उन्होंने कहा कि यही बड़ी वजह बन थी कि जब सपा के वरिष्ठ नेताओं ने फोन उठाना बंद कर दिया था। इस बुकलेट में मायावती ने सपा के साथ दो बार हुए गठबंधन के टूटने की वजह भी जाहिर की है। दरअसल, पिछले दिनों लखनऊ में पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में बसपा सदस्यों को 59 पन्नों की बुकलेट वितरित की गई। इस बुकलेट में मायावती ने अपनी अपील में सपा के साथ गठबंधन को फिर से याद किया, जिसकी शुरुआत 1993 में हुई जब कांशीराम ने मुलायम सिंह यादव के साथ गठबंधन किया था। मायावती ने कहा है कि उस गठबंधन के टूटने वजह लखनऊ गेस्ट हाउस कांड था। मायावती की अपीलों और संदेश को लेकर राजनीति गलियारों में चर्चा है। कहा जा रहा है कि मायावती इस बुकलेट के जरिए 2027 के यूपी विधानसभा चुनाव से पहले पार्टी को मजबूत करना चाह रही हैं। यह एक रणनीतिक कदम के रूप में देखा जा रहा है।

अयोध्या में चल रही है जमीन की लूट घसोट: अखिलेश यादव

लखनऊ (एजेंसी)। समाजवादी पार्टी के मुखिया एवं उप्र के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने आरोप लगाया कि अयोध्या में भारतीय जनता पार्टी के नेता और अधिकारी जमीन की लूट घसोट कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा के नेताओं ने अधिकारियों की मिलीभगत से अयोध्या को लूट का अड्डा बना दिया है। सेना की फायरिंग रेंज की जमीन को कौड़ियों के दाम में बेच दिया गया है। किसानों को डरा कर उनकी जमीन को औनेपौने दाम पर खरीदा गया है। सरकार के अधिकारी और भाजपा के लोग लूट में लग गए है और जहां लूट होगी वहां विकास की कल्पना नहीं की जा सकती।

सपा मुखिया अखिलेश यादव ने गुरुवार को यहां पत्रकारों से बातचीत में कहा कि सपा के अयोध्या के नेताओं ने आज लूट का काला चिट्ठा खोला है। अब सोचिए जब राम की नगरी में लूट का यह हाल है तो पूरे प्रदेश में कितनी लूट हो रही होगी। राम मंदिर को लेकर उच्चतम न्यायालय के फैसले के बाद अयोध्या में भाजपा के नेताओं ने सस्ती दरों पर जमीने हथियानी शुरु कर दी और किसानों की सर्किल रेट को बढ़ाने की मांग की नजरअंदाज कर दिया और जब इन्होंने किसानों से सस्ते दामो में जमीनें ले ली, अब सर्किल रेट बढ़ा दिये गये हैं।

सपा अध्यक्ष ने कहा ÷सरकार के नेताओं, और अधिकारियों की सूची और रजिस्ट्रियां हमारे पास है। इन्होंने सेना की जमीन पर कब्जा कर लिया, जिस डिफेंस की ओर कोई नहीं देखता, उस जमीनों को इन्होंने बेंच दिया। अपनी सुविधा के लिए रेलवे की लाइन बदल दी और उस जमीन

को सरकारी अधिकारियों और भाजपा नेताओं ने हथिया लिया जबकि नयी रेल लाइन डालने के नाम पर कई घरों को खाली करने के नोटिस थमा दिये।÷ उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार पर जीरो टॉलरेंस का नारा देने वालों ने गरीबों और किसानो को आवास विकास का डर दिखा कर उनसे सस्ते दामों में जमीने ले लीं मगर समाजवादी पार्टी गरीबो के साथ है। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि वे विकास के खिलाफ नहीं है। अयोध्या एक वर्ल्ड क्लास सिटी बने, इसके लिए वह हर सहयोग को तैयार हैं मगर विकास के लिये दिमाग का होना जरूरी है जो भाजपा के नेताओं के पास नहीं है। दो साल बाद जब समाजवादी सरकार आएगी तो न सिर्फ अयोध्या को विश्वस्तरीय पर्यटन नगरी बनायेंगे बल्कि गरीबों को सर्किल रेट बढाकर मुआवजा दिया जाएगा।

सुल्तानपुर की घटना का जिक्र करते हुये उन्होने कहा कि पुलिस एनकाउंटर के नाम पर हत्यायें कर रही हैं। मगेश यादव एनकाउंटर केस में गांव वाले भी कहते है कि पुलिस रात में उठाकर ले गयी,उसके पास से जो मोटरसाइकिल मिली उसकी चोरी की रिपोर्ट घटना के कई दिन बाद लिखी गयी। मंगेश यादव के पास नया बैग मिला,उस बैग में नए कपड़े मिले। दरअसल यह एनकाउंटर नहीं बल्कि हत्या थी और यह पहला मामला नहीं है। इससे पहले तमाम एनकाउंटर हुए जिनमें सबसे ज्यादा पीडीए परिवार के लोग मारे गए। उन्होने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर तंज कसते हुये कहा कि जिसका दिल दिमाग नाकारात्मक हो उससे विकास की क्या उम्मीद कर सकते हैं। अगर दिमाग होता तो पुलिस चप्पल में एनकाउंटर न करती। ये सरकार लूट के साथ डर दिखाकर एनकाउंटर कर रही है। जो अधिकारी रात में हत्या की रणनीति बनाएं,उनसे न्याय की क्या उम्मीद की जा सकती है। हकीकत तो यह है कि भाजपा सरकार किसी की सगी नही है,उन्हें अपना स्वार्थ सिद्ध करना है।

एक सवाल के जवाब में उन्होने जमीन की रजिस्ट्रियां दिखाते हुये कहा ÷जब गरीब से जमीन ली जा रही थी, तब सर्किल रेट क्यो नहीं बढ़ाया गया। इन जमीन रजिस्ट्री में सबकी फोटो लगी है, उनके परिवार के लोगो की फोटो लगी है,अब तय है इसके बाद मुख्यमंत्री कोई अलग सूची नही पढ़ पाएंगे।÷ बहुजन समाज पार्टी की सुप्रीमो मायावती के गठबंधन तोड़ने के आरोप का जवाब देते हुये अखिलेश यादव ने कहा ÷जिस दिन बीएसपी से गठबंधन टूटा दोनो दल के लोग आजमगढ़ में सार्वजनिक मंच पर थे मैं भी था किसी को नहीं पता था कि गठबंधन टूट गया। मैने खुद फोन कर पूछना चाहा था कि ऐसा क्यों किया.कभी कभी अपनी बात छुपाने के लिए कुछ बाते की जाती है।÷

पहले भारत को आंखे दिखाने में कसर नहीं छोड़ी, अब उसी के सामने कटोरा लेकर खड़ा हुआ बांग्लादेश

नई दिल्ली (एजेंसी)। बांग्लादेश में शेख हसीना की सरकार जाने के बाद वहां केवल अराजकता और असमंजस्य के अलावा कुछ नहीं बचा। जिसका फायदा पाकिस्तान ने उठाया और उसे खुद की कठपुतली बनाने की कोशिश करते हुए भारत के खिलाफ भड़काया। बांग्लादेश की मोहम्मद यूनुस सरकार बहकावे में आ गई और भारत के खिलाफ जो आग उगल सकते थे उगली। लेकिन भारत ने कभी कोई सख्ती नहीं दिखाई। केवल छोटा भाई समझकर बांग्लादेश की हरकतों को नजरअंदाज करता रहा। बांग्लादेश ने कभी शेख हसीना के प्रत्यर्पण को लेकर अंतरराष्ट्रीय कोर्ट में जाने की धमकी दी जा रही है तो कभी अंतरराष्ट्रीय सीमा से अवैध घुसपैठ पर बीएसएफ द्वारा गोली मारे जाने पर बांग्लादेश भारत से विरोध जता रहा है। एक महीने के अंदर ही बांग्लादेश में ऐसे घटनाक्रम हुए, जिससे नई सरकार का भारत विरोधी एजेंडा साफ हो गया। हालांकि इसके बावजूद पड़ोसी देश को भारत से खैरात के लिए हाथ पसार रहा है।

बांग्लादेश की फाइनेंस मिनिस्ट्री के एडवाइजर की तरफ से यह स्टेटमेंट जारी किया गया है। बांग्लादेश मीडिया से बात करते हुए अंतरिम सरकार के फाइनेंस एडवाइजर सालेहुद्दीन अहमद ने कहा कि भारत द्वारा फंड की गई परियोजनाएं हमारे लिए बहुत जरूरी हैं। बांग्लादेश में नए प्रशासन के तहत भी यह प्रोजेक्ट चलते रहेंगे। कहा गया कि इंडियन हाई कमीशन चीफ प्रणय वर्मा के साथ बांग्लादेश अपनी बैठक में बढ़े हुए सहयोग की उम्मीद करता है। सालेहुद्दीन अहमद ने कहा, पहले से ही, भारत से हमारे पास जो परियोजनाएं हैं, वे बेहद बड़ी हैं और हम उन्हें जारी रखेंगे क्योंकि वे छोटी परियोजनाएं नहीं हैं और हम अपने फायदे के लिए एक और बड़ी परियोजना लेंगे। हम जो कुछ भी हासिल कर चुके हैं, उस पर नहीं रुकेंगे और हम उन परियोजनाओं के बारे में बात करेंगे। परियोजनाओं के फंड और उनके लागू करने के बारे में भी बात करेंगे। बांग्लादेश भले ही भारत से आर्थिक मदद मांग रहा हो लेकिन उसकी करनी और कथनी में बड़ा अंतर है।

शेख हसीना की सरकार के समय में भारत और बांग्लादेश के रिश्ते ऊंचाईयों पर थे। जी20 के वक्त पीएम मोदी ने खुद वर्ल्ड लीडर्स से शेख हसीना को मिलवाया। अब हसीना की सरकार जाने के एक महीने के अंदर ही बांग्लादेश भारत को तीन बार आंख दिखा चुका है। सबसे पहले मानसून के सीजन में बांग्लादेश ने भारत पर नदी में ज्यादा पानी छोड़कर उन्हें डुबाने का आरोप लगाया। इससे भी काम नहीं बना तो फिर बांग्लादेश ने बॉर्डर पर बीएसएफ को निशाना बनाया। अवैध तरीके से दो

अलग-अलग घटनाओं में भारत में घुसने की कोशिश कर रही एक बच्ची और अन्य शख्स को बीएसएफ ने गोली मार दी थी। बांग्लादेश ने इस पर औपचारिक तौर पर विरोध जताया। इसके बाद बांग्लादेश के चीफ प्रॉसिक्यूटर ने तो सारी हदें पार करते हुए यहां तक कह दिया कि शेख हसीना को वापस लाने के लिए वो अंतरराष्ट्रीय अदालत जाएंगे।